काव्यनिर्णय।

जिसमें अपने प्राचीन कवियोंकी काव्य लुप्त न हो। इस ग्रंथको डुमराँवनिवासी पं० नकछेदीतिवारीजीसे व आगरा वाले कुंवर उत्तमसिंहजीसे शुद्ध कराया है और मुद्रित होते कार्य्यालयमेंभी भलीभांति शुद्धकर प्रकाश किया है।

आशा है कि काव्यानुरागी सादर ग्रहणकर हमारे परिश्रमको सफल करेंगे.

सज्जनोंका कृपापात्र–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर यंत्रालयाधिप,
मुम्बई.

श्रीः ।

काव्यनिर्णयकी अनुक्रमणिका ।

इति काव्यनिर्णय अनुक्रमणिका समाप्त।

श्रीः ।

अथ

काव्यनिर्णय ।

कविराज भिखारीदासजी प्रणीत ।

छप्पय ॥

एकरदन द्वै मातु त्रिचख चौबाहु पंचकर ।
षट् आनन वर बंधु सेव्य सप्तार्चि भालधर ॥
अष्टसिद्धि नवनिद्धि दानि दशदिशि यश विस्तर ।
रुद्र इग्यारह सुखद द्वादशादित्य ओजवर ॥
जो त्रिदशवृन्दवंदित चरण चौदह विद्यन आदिगुर ।
तिहि दास पंचदशहू तिथिनधरिय षोडशी ध्यानउर

दोहा—जगत विदित उदयाद्रिसो, अरवरदेश अनूप ।
रविलों पृथ्वीपति उदित, तहां सोम कुल भूप ॥२॥
सोदर ताको ज्ञाननिधि, हिंदूपति शुभ नाम ।
जिनकी सेवाते लह्यो, दास सकल सुखधाम ॥ ३ ॥
अट्ठारहसै (१८०३) तीन हो संवत आश्विनमास ।
ग्रंथ काव्यनिर्णयरच्यो, विजयदशमि दिनदास॥४॥
बूझि सुचंद्रालोक अरु, काव्यप्रकाश सुग्रंथ ।
समुझि सुरुचि भाषा कियो, लै औरो कविपंथ॥५॥

वही बात सिगरी कहे, उलथो होत यकंक ।
सब निज उक्ति बनायहूं, रहै सुकल्पित शंक ॥६॥
याते दुहुँ मिश्रित रच्यो, क्षमिहैं कबि अपराधु ।
बन्यो अनबन्यो समुझिके, शोधि लेहिंगे साधु॥७॥

कवित्त-मोसम जुहैहैं ते विशेषसुख पैहैं पुनि हिंदूपाति साहेबके नीके मनमानोहै ॥ याते परतोष रसराजरस लीन वासुदेवसों प्रवीन पूरे कविन बखानोहै ॥ ताते यह उद्यम अकारथ न जैहै सब भांति ठहरैहै भले होहूँ अनुमानोहै ॥ आगेके सुकवि रीझिहैं तो कविताई न तो राधिका कन्हाई सुमिरनको बहानोहै ॥ ८ ॥

दोहा-ग्रंथ काव्यनिर्णयहि जो, समुझि करैंगे कंठ ॥
सदा बसैंगी भारती, तारसना उपकंठ ॥ ९ ॥

काव्यप्रयोजन ॥ सवैया ॥

एक लहै तप पुंजनिके फल ज्यों तुलसी अरु सूर गोसांई॥
एक लहै बहु संपति केशव भूषण ज्यों बरबीर बडाई ॥
एकनिको यशहीसों प्रयोजन है रसखानि रहीमकी नाईं ॥
दास कवित्तनकी चरचा बुधिवंतनको सुखदै सब ठाईं॥१०

सोरठा-प्रभु ज्यों सिखवै बेद, मित्र मित्र ज्यों सतकथा ।
काव्यरसनिको भेद, सुख सिख दानितियानिज्यों११

॥ सवैया ॥

शक्ति कवित्तबनाइबेकी ज्याह जन्म नक्षत्रमें दीनी विधात॥
काव्यकी रीति सिखै सुकवीनते देखैसुनैबहुलोककीबातैं॥

दासजू जामें एकत्र ए तीनों बनै कविता मन रोचक तातें।
एक बिना न चलै रथ जैसे धुरंधर सूतकी चक्र निपातैं॥१२॥
सोरठा–रस कविताको अंग, भूषण है भूषण सकल।
गुण स्वरूप अरु रंग, दूषण करै कुरूपता॥१३॥

भाषालक्षण।

दोहा–ब्रज भाषा भाषा रुचिर, कहै सुमति सब कोय।
मिलै संस्कृत पारस्यो, पै अति प्रगट्ट होइ॥१४॥
ब्रजमागधी मिलै अमर, नाग यमन भाषानि॥
सहज पारसी हू मिलै, षट् विधि कवित बखानि॥१५॥

कवित्त।

सूर केशव मंडन विहारी कालिदास ब्रह्म चिंतामणि
मतिराम भूषण सुजानिये॥ लीलाधर सेनापति निपट
नेवाज निधि नीलकंठमिश्र सुखदेव देव मानिये॥
आलम रहीम रसखानि सुन्दरादिक अनेकन सुमति भये
कहाँलों बखानिये। ब्रजभाषा हेत ब्रजबास ही न अनुमानौ
ऐसे ऐसे कविनकी बाणिहू सो जानिये॥ १६॥
दोहा–तुलसि गंग दोऊ भये, सुकविनके सरदार।
इनकी काव्यनमें मिली, भाषा विविध प्रकार॥१७॥

कवित्त।

जानै पदारथ भूषण मूल रसाङ्ग पराङ्गनिमें मति छाकी॥
स्योध्वनि अर्थनिवाक्यनि लैगुण शब्द अलंकृतसोंरतिपाकी
चित्र कवित्त करै तुक जानै न दोषनिपंथ कहूं गति जाकी॥
उत्तमताको कवित्त बनैकरै कीरति भारतीयों अतिताकी॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिन्दूपति
विरचितेकाव्यनिर्णयेदासकविकृतमंगलाचरणवर्णन नाम प्रथमोल्लासः॥१॥

वही बात सिगरी कहे, उलथो होत यकंक ।
सब निज उक्ति बनायहूं, रहे सुकल्पित शंक ॥ ६ ॥
याते दुहुँ मिश्रित रच्यो, क्षमिहैं कबि अपराधु ।
बन्यो अनबन्यो समुझिकै, शोधि लेहिंगे साधु ॥ ७ ॥

कवित्त–मोसम जुहैहैं ते विशेषसुख पैहैं पुनि हिंदूपति साहेबके नीके मनमानोहै ॥ याते परतोष रसराजरस लीन वासुदेवसों प्रवीन पूरे कविन बखानोहै ॥ ताते यह उद्यम अकारथ न जैहै सब भांति ठहैरहै भले होहूँ अनुमानोहै ॥ आगेके सुकवि रीझिहैं तो कविताई न तो राधिका कन्हाई सुमिरनको बहानोहै ॥ ८ ॥

दोहा–ग्रंथ काव्यनिर्णयहि जो, समुझि करैंगे कंठ ॥
सदा बसैंगी भारती, तारसना उपकंठ ॥ ९ ॥

काव्यप्रयोजन ॥ सवैया ॥

एक लहै तप पुंजनिके फल, ज्यों तुलसी अरु सूर गोसांई ॥
एक लहै बहु संपति केशव भूषण ज्यों बरबीर बडाई ॥
एकनिको यशहीसों प्रयोजन है रसखानि रहीमकी नाईं ॥
दास कवितनकी चरचा बुधिवंतनको सुखदै सब ठाईं ॥ १०

सोरठा–प्रभु ज्यों सिखवै वेद, मित्र मित्र ज्यों सतकथा ।
काव्यरसनिको भेद, सुख सिख दानितियानि ज्यों ११

॥ सवैया ॥

शक्ति कवित्तबनाइबेकी ज्याह जन्म नक्षत्रमें दीनी विधातः ॥
काव्यकी रीति सिखै सुकवीनते देखेसुनैबहुलोककीबातैं ॥

दासजू जामें एकत्र ए तीनों बनै कविता मन रोचक तातैं॥
एक बिना न चलै रथ जैसे धुरंधर सूतकी चक्र निपातैं१२
सोरठा—रस कविताको अंग, भूषण है भूषण सकल।
गुण स्वरूप अरु रंग, दूषण करै कुरूपता॥१३॥

भाषालक्षण।

दोहा—ब्रज भाषा भाषा रुचिर, कहै सुमति सब कोय।
मिलै संस्कृत पारस्यो, पै अति प्रगट्ट होइ ॥१४॥
ब्रजमागधी मिलै अमर, नाग यमन भाषानि॥
सहज पारसी हू मिलै, षट् विधि कवित बखानि१५॥

कवित्त।

सूर केशव मंडन विहारी कालिदास ब्रह्म चिंतामणि मतिराम भूषण सुजानियै॥ लीलाधर सैनापति निपट नेवाज निधि नीलकंठमिश्र सुखदेव देव मानिये॥ आलम रहीम रसखानि सुन्दरादिक अनेकन सुमति भये कहाँलों बखानिये। ब्रजभाषा हेत ब्रजवास ही न अनुमानो ऐसे ऐसे कविनकी बाणिहू सो जानिये॥ १६॥
दोहा—तुलसि गंग दोऊ भये, सुकविनके सरदार।
इनकी काव्यनमें मिली, भाषा विविध प्रकार॥१७॥

कवित्त।

जानै पदारथ भूषण मूल रसाङ्ग पराङ्गनिमें मति छाकी॥
स्योध्वनि अर्थनिवाक्यनि लैगुण शब्द अलंकृतसोंरतिपाकी
चित्र कवित्त करै तुक जानै न दोषनिपंथ कहूं गति जाकी॥
उत्तमताको कवित्त बनैकरै कीरति भारतीयों अतिताकी॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिन्दूपति विरचितेकाव्यनिर्णयेदासकविकृतमंगलाचरणवर्णन नाम प्रथमोल्लासः॥१॥

अथ पदार्थनिर्णय वर्णनम् ॥

दोहा-पदवाचक अरु लक्षणिक, व्यंजन तीन विधान ।
तातें वाचक भेदको, पहले करौं बखान ॥ १ ॥
जातयदृक्षा गुण क्रिया, नाम जु चारि विधान ।
सबकी संज्ञा जाति गनि, वाचक कहै सुजान ॥२॥
जाति नाम यदुनाथ गनि, कान्ह यदृक्षा धारि ।
गुणते कहिये श्याम अरु, क्रिया नाम कंसारि॥३॥
रंग रूप रस गंधगनि, और जु निश्चलधर्म्म ।
इन सबको गुण कहत हैं, गुणि राख्यो यह मर्म्म॥४॥
ऐसे शब्दनसों जहां, प्रकट होत संकेत ।
तिहि वाच्यर्थ बखानही, सज्जन सुमति सचेत ॥५॥
अनेकार्थ हू शब्दमें, एक अर्थकी भक्ति ।
त्यहि वाच्यारथको कहै, सज्जन अविधा शक्ति॥६॥
कहूं होत संयोगते, एकै अर्थ प्रमान ।
शंख चक्र युत हरि कहै, विष्णौ होत न आन ॥७॥
असंयोगते कहुँ कहै, एक अर्थ कविराय ।
कहै धनंजय धूम बिनु, पावक जान्यो जाय ॥ ८ ॥
बहुत अर्थको एक कहुँ, साहचर्य्यते जानि ।
वेणी माधवके कहे, तीरथ वेणी मानि ॥ ९ ॥
कहुँ विरोधते होत है, एक अर्थको साज ।
चंद्रै जानि परै कहे, राहु ग्रस्यो द्विजराज ॥ १० ॥
अर्थ प्रकरणते कहूँ, एक अर्थ पहिचान ।

वृक्ष जानिये दल झरे, दल साजे नृपजान ॥ ११ ॥
वाचकते कहुँ जानिये, एकै अर्थ निपाट।
सरस्वति को कहिये कहूं, बानी बैठो हाट ॥ १२॥
आनशब्द ढिगते कहूं, पैये एकै अर्थ।
शिखीपक्षते जानिये, केकी परे समर्थ ॥ १३ ॥
दासकहूं सामर्थ्यते, एक अर्थ ठहरात।
व्याल वृक्ष तोरयो कहे, कुंजर जान्यो जात ॥१४॥
कहूं उचितते पाइये, एकै अर्थ सुरीति।
तरुपर द्विज बैठो कहे, होत विहंग प्रतीति॥ १५ ॥
कहूं देश बल कहत है, एक अर्थ कवि धीर।
मरुमें जीवन दूरि है, कहे जानियत नीर ॥ १६ ॥
कहूं कालते होत है, एक अर्थकी बात।
कुवलय निशि फूलयो कहे, कुमुद दिवस जलजात॥
कहूं स्वरादिक फेरते, एकै अर्थ प्रसंग।
बाजी भली सुबाँसुरी, बाजी भलो तुरंग ॥ १८ ॥
कहूं अभिन्यादिकनते, एकै अर्थ विचार।
इती देखियतु देहरी, इते बडे हैं बार ॥ १९ ॥
जामें अभिधाशक्ति तजि, अर्थ न दूजो कोय।
यहाँ काव्य किन्हैं बनै, ना तो मिश्रित होय॥२०॥

अथ अभिधाशक्ति भेद ॥

दोहा—मोरपंखको मुकुट शिर, उर तुलसीदल माल।
यमुनातीर कदम्ब ढिग, मैं देखो नँदलाल ॥ २१ ॥

इति अभिधाशक्ति वर्णनम् ॥

अथ लक्षणाशक्ति भेद ॥

दोहा—मुख्य अर्थके बाधसो, शब्द लक्षणिक होत ॥
रूढी प्रयोजनोवती, द्वैलक्षणा उदोत ॥ २२ ॥

अथ रूढीलक्षणा यथा ॥

दोहा—मुख्य अर्थको बाध पै, जगमें वचन प्रसिद्ध ।
रूढि लक्षणा कहतहैं, ताको सुमति समृद्ध ॥२३॥
फलीं सकल मन कामना, लूटचो अगणितचैन ।
आजु अचै हरि रूप सखि,भये प्रफुल्लित नैन २४॥

कवित्त—अँखियाँ हमारी दई मारी सुधि बुधि हारी मोहूं ते जु न्यारी दासरहै सब कालमें । कौन गहै ज्ञाने काहि सोंपत सयाने कौन लोक वोक जानै येनहींहै निज हालमें॥ प्रेम पागि रही माहमोहमें उमँगि रही ठीक ठगि रही लगिरही बनमालमें । लाजको अचैकै कुलधरम पचैकै वृथा बृंदानि सचैकै भई मगन गुपालमें ॥ २५ ॥

अस्य तिलक ॥

मनकामना वृक्ष नहीं है, जो फलै, फालिवो शब्द वृक्ष पर है, लक्षणाशक्तिते मन कामनाहूको फालिवो लीजियतु है, ऐसेही ऐसे शब्दनको या दोहा औ कवित्तमें अधिकार है सो जान लीबो ॥

अथ प्रयोजनवती लक्षणा ॥

दोहा—प्रयोजनवती लक्षणा, द्वै विधि तासु प्रमान ।
एक शुद्ध गौनी द्वितिय,भाषत सुमति सुजान २६॥

अथ शुद्धलक्षणा ॥

दोहा—उपादान इक शुद्ध में, दूजी लक्षण ठान ।
तीजी सारोपा कहैं, चौथी साध्य वखान ॥ २७ ॥

अथ उपादान लक्षणा ॥

दोहा—उपादान सो लक्षणा, परगुण लीन्हें होइ ।
कुंत चलत सब जग कहैं, नरबिनु चलत न सोइ॥२८
यमुना जलको जातही, डगरी गगरी जाल ।
बजी बाँसुरी कान्हकी, गिरीं सकल तिहि काल२९॥
खेलत ब्रज होरी सजैं, बाजे बजैं रसाल ।
पिचकारी चलती घनी; जहँ तहँ उडत गुलाल ३०

अस्य तिलक ॥

गगरी आपसों नहीं जाती है कोऊ प्राणी वाको लये जातु है ऐसेही मुख्यार्थ बाधते उपादान लक्षणा होता है सो दूनों दोहाके प्रतिवाक्यमें उदाहरण है ॥

अथ लक्षणी लक्षण वर्णनम् ॥

दोहा—निज लक्षण औरहि दिये, लक्ष लक्षणा योग ।
गंगातटवासिन्ह कहैं; गंगावासी लोग ॥ ३१ ॥
सुन्दरि दिया बुझाइ कै, सोवति सौध मझार ।
सुनत बाँसुरी कान्हकी, कढी तोरिके द्वार॥ ३२ ॥

अस्यतिलक ॥

तोरिबो केंवारको संभवतु है द्वारको कह्यो बाँसुरीकी ध्वनि सुन्यो सो बाँसुरीको कह्यो याते लक्षण लक्षणा कहिये

अथ सारोपा लक्षण वर्णनम् ॥

दोहा—और थापिये औरको, क्योंहू समता पाय ।
सारोपित सो लक्षणा, कहैं सकल कविराय॥ ३३॥
मोहन मोहनपूतरी, वै छबि सिगरी प्रान ।
सुधा चितौनि सोहावनी, मीत बाँसुरी तान॥ ३४ ॥

अस्यातिलक ॥

मोहनको पुतरी थाप्यो छबिको प्राण थाप्यो ताते सारोपालक्षणा भई ॥

अथ साध्यावसान लक्षणा वर्णनम् ॥

दोहा—जाकी समता कहनको, वहै मुख्य करि देइ ।
साध्यवसान सुलक्षणा, विषय नाम नहिं लेइ ॥३५॥
बैरनि कहा बिछावती, फिरि फिरि सेज कृशान ।
सुन्यो न मेरे प्राण घन, चहत आज कहुँ जान ॥३६॥

अस्यातिलक ॥

बैरिनि सखीको कह्यो, कृशान फूलको कह्यो, याते साध्यवसान कहिये ॥

अथ गौनीलक्षणाको भेद ॥

दोहा—गुण लखि गौनी लक्षणा, द्वैही तासु प्रमान ।
सारोपा प्रथमा गनो, दूजी साध्यवसान ॥ ३७ ॥

सारोपा गौनीलक्षणा यथा ॥

दोहा—सगुनारोप सुलक्षणा, गुण लखि करि आरोप ।
जैसे सब कोऊ कहैं, वृषभै गवईं गोप ॥ ३८ ॥

शूर सेर करि मानिये, कायर स्यार विशेखि ।
विद्यावान त्रिनयन हैं, क्रूर अंध करि लेखि ॥ ३९॥

साध्यवसान गौनीलक्षण यथा ॥

दोहा-गौनी साध्य वसान सों, केवलही उपमान ।
कहां वृषभ सो कहत हो, बातैं हे मतिमान ॥४०॥

इति लक्षणाशक्तिनिर्णयम् ।

अथ व्यंजनाशक्तिनिर्णय वर्णनं--सवैया ॥

वाचक लक्षक भाजन रूपहै व्यंजकको जल मानत ज्ञानी॥
जानिपरै न जिन्हैं तिनके समुझाइवेको यह दास बखानी॥
एदोउहोतेअव्यंग्य सव्यंग्य यों व्यंग्य इन्हैंबिनु ल्यावैनबानी
भाजनल्याइये नीर विहीनन आइसकै बिनुभाजनपानी४१

दोहा -व्यंजन व्यंजक युक्तपद, व्यंग्य तासु जो अर्थ ।
ताहि बुझैवेकी शकति, है व्यंजना समर्थ ॥ ४२ ॥
सूधो अर्थ जु वचनको, तिहि तजि औरै बैन ।
समुझि परैते कहत हैं, शक्ति व्यंजना ऐन ॥ ४३ ॥

अथ अभिधामूलक व्यंग्य वर्णनम् ॥

दोहा-शब्द अनेकारथ निबल, होइ दूसरो अर्थ ।
अभिधामूलक व्यंग्यतिहि, भाषत सुकवि समर्थ॥४४
भयो अपतकै कोपयुत, कै बौरो इहिकाल ॥
मालिनि आजु कहै न क्यों, वा रसालकी हाल॥४५

लक्षणामूल व्यंग्य ॥

दोहा--व्यंग्य लक्षणा मूल सो, प्रयोजनानिते होय ।

होती रूढि अव्यंग्य है, यह जानत सब कोय॥ ४६

गूढ अगूढो व्यंग्य द्वै, होत लक्षणा मूल ।
छिपी गूढ प्रगटहिं कहो, है अगूढ सम तूल ॥४७॥

गूढव्यंग्ययथा--सवैया ॥

आननमें मुसुकानि सुहावनि वंकुरता अँखिया निछइहै । बैन खुले मुकुले उर जात जकी विथकी गति ठौनि ठइहै ॥ दास प्रभा उछलै सब अंग सुरंग सुबासता फैलिगइहै । चन्द्रमुखी तन पाइ नवीनो भई तरुनाई अनन्द मइहै ॥ ४८ ॥

अस्यातिलक ॥

याके पाइवेते तरुणाईको आनन्द भयो है, अबई कोऊ आर पुरुष पावैगो ताको अतिही आनंद होइगो यह व्यंग्यहै ॥

अगूढ व्यंग्य यथा ॥

दोहा—धन यौबन इन दुहुँनकी, सोहतरीति सुवेश ।
मुग्धनरनिमुग्धनिकरै, ललित बुद्धि उपदेश ॥४९॥

अस्यातिलक ॥

धनपायेते मूर्खहू बुद्धिवंतह्वैजातुहै । और युवाअवस्था पाये ते नारी चतुरह्वै जातिहै यह व्यंग्यहै उपदेशशब्दलक्षणा सो मालूम होताहै औ वाच्यहूमें प्रगटहै ॥

अथ अर्थव्यंजकवर्णनम् ॥

दोहा—होत अर्थ व्यंजनको, दश विधि सुभ्र विशेष ।
पहिले व्याक्ति विशेष १पुनि है बोधव्य सुलेष२ ।५०॥

काकु विशेषो ३ वाक्य अरु, वाच्य विशेष गनाइ४।
अनसंन्निधि५प्रस्ताव ६ अरु, देश७काल८नोभाइ॥
हैचेष्टा सुविशेष ९ पुनि, दशम भेद कबिराइ।
इनके मिले मिल किये, भेद अनंत लखाइ ॥५१॥

अथ व्यक्तिविशेषव्यंग्य यथा ॥

दोहा—अति भारी जल कुम्भलै, आई सदन उताल ॥
लखि श्रम सलिल उसाँस अलि, कहा बूझतीहाल५२

अस्यातलक ॥

यहां वक्ता नायका है सो अपनी क्रिया को छिपावती है सो व्यंग्यते जान्यो जातु है ॥

अथ बोधव्यव्यंग्य विशेष ॥

चिंता जंभ उनींदता, विह्वलता अलसानि ॥
लह्यों अभागिनि हों अली, तहूं गह्यो सुबानि ॥५३॥

अस्यातिलक ॥

यहां आसों कहति है ताकी क्रिया व्यंजित होती है ॥

अथ काकु विशेष व्यंग्य यथा ॥

दृग लखि हैं मधु चंद्रिका, सुनि हैं कलध्वनि कान ॥
रहि हैं मेरे प्राणधन, प्रीतम करचो पयान ॥ ५४ ॥

अस्य तिलक ॥

इहां काकुते बरजिवो व्यंजित होत है ॥

अथ वाक्यविशेष व्यंग ॥

दोहा—अबलोही मोहीं लगी, लाल तिहारी डीठि ॥
जात भई अब अनत कत, करत सामुही नीठि५५

अस्यातिलक ॥

इहां याकी वाक्यते यह व्यंजित होत है कि दूजी नाय काको नायक लख्यो ॥

अथ वाच्य विशेषव्यंग्य सवैया ॥

भौन अँध्यारेहू चाहि अँध्यारे चँबेलीके कुंजके पुंज बने हैं॥
बोलत मोर करें पिकसोर जहां तहँ गुंजत भौंर घने हैं ॥
दासरच्यो अपनेहीं विलासको मन जूहाथनसों अपने हैं ॥
कूलकलिंदिजाके सुखमूल लतानके वृन्दवितान तनेहैं५६॥

अस्यातिलक ॥

इहां वाच्यार्थते सहेट योग्य ठौर जानियो, विहारकी इच्छा व्यंजित होती है ॥

अथ अन्यसान्निधि विशेषव्यंग्य ॥

दोहा-राजकरो गृह काजदिन, बीतत याही माँझ ।
ईठलहों कल एक पल, नीठ निहारे सांझ ॥ ५७ ॥
इहि निशि धाइ सताइले, स्वेद खेदते मोहिं ।
कालि लालहूके कहे, संग न स्वाऊँ तोहिं ॥ ५८ ॥

अस्यातिलक ॥

इहां उपपति समीपहै ताके सुनायेते परकीया जानी जाती है ॥

अथ प्रस्ताव विशेषव्यंग्य ॥

दोहा-बौरी बासर बीतते,-प्रीतम आवनिहार ।
तकै दुचित ह्वै सुचित कत, साजहि उचित शृँगार५९

अस्यातिलक ॥

इहां उचित शृंगारके प्रस्तावते यह जान्यो जातु है जो पर पुरुषपै जान लगी है ॥

अथ देशविशेष ॥

हौं अबकति ज्यों त्यों इतहिं, सुमन चुनोंगी चाहिं ।
मानि विनय मेरी अली, इहां ठौरते जाहिं ॥ ६० ॥

अस्यतिलक ॥

इहां ठौर व्यभिचार योग्य है ताते सखीको टारिबो व्यंजित होतहै

अथ कालविशेषव्यंग्य ॥

हौं जमान हौं जानदे, कहा रही गहि फेंट ।
हरि फिरि ऐहैं होतही, बन बागनसों भेंट ॥ ६१ ॥

अस्यतिलक ॥

इहां वसन्तऋतुहै ताते कामोद्दीपनको भरोसो व्यंजित होतहै ॥

अथ चेष्टा व्यङ्गय वर्णनं--सवैया ॥

कसिबे मिस नीविनके छिनतौ अँग अंगनिदास देखाइ रही । अपनेहिं भुजानि उरोजनिको गहि जानुसों जानुमिलाइरही । ललचौहैं लजौ हैं हँसोहैं चितै हितसों चित चाह बढाइरही । कनखा करिकै पगसों परिकै पुनि सूने निकेतमें जाइरही ॥ ६२ ॥

अस्यातिलक ॥

इहां चेष्टनिसों बुलाइबो बिहारको व्यंजित होत है ॥

अथ मिश्रित विशेष वर्णनम् ॥

दोहा–वक्ता अरु बोधव्यसों, वरण्यो मिलित विशेष ॥
योहीं औरो जानिऐं, जिनके सुमति अशेष ॥६३॥

यथा

इहि शय्या अत्ताररहै, इहिहौं चाहत शैन ॥
हेरतौंधि है बात यह, शैन समै भूलैन ॥ ६४ ॥

अस्यतिलक ॥

इहां वक्ताहूकी चातुरीहै औ रतौंधीको बहानो बोधव्य-
की चातुरी है

अथव्यग्यत व्यंगयवर्णनम् ॥

दोहा–त्रिविध व्यंग्यहूते कहै, व्यंग्य अनूप सुजान ।
उदाहरण ताके कहों, सुना सुमति दैकान ॥६५॥

अथ वाच्यार्थ व्यग्यत व्यंगयवर्णनम् ॥

दोहा–अम्बे फिरि मोहिं कहहिं गी, कियो न तू गृहकाज॥
कहै सुकरि आऊं अबै, मुँद्यो जातु दिनराज॥६६॥

अस्यतिलक ॥

वाको आयसु मानि निहोरादै कहूं जायो चाहति है
यह व्यंग्यार्थ है दिनहीमें परपुरुष विहार कियो चाहति है
यह दूसरी व्यंग्यहै ॥

अथ लक्षणा मूलव्यंग्यते व्यंग्य वर्णनम् ॥

दोहा–धनि धनि सखि मोहिं लागि तू, सहे दशन नखदेह ॥
परमहितूहै लालसों, आइ राखिसनेह ॥ ६७ ॥

अस्यातिलक ॥

धृग धृगकी ठौर धनि धनि कहतिहै यह लक्षणा मूलव्यं

ग्यहै ताते अपराध प्रकाश न कियो यह दूसरा व्यंग्य है॥

अथ व्यंग्यते व्यंग्यार्थ वर्णनम् ॥

दोहा-निश्चल व्यसनी पत्रपर, उत बलाक इहि भांति।
मर्कत भाजन परमनो, अमल शंख शुभकांति॥६८

अस्य तिलक ॥

बन निर्जन है ताहीते बक निश्चल है यह व्यंग्य ताते चलिकै बिहार कीजै प्रीतमसों सुनायो यह व्यंग्यतेव्यंग्यहै॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिंदूपतिविरचितेकाव्यनिर्णयः वाचकलाक्षणिकव्यंजकपदार्थवर्णननामद्वितीयोल्लासः ॥ २ ॥

अथ अलंकार मूल कथनम् ॥

दोहा-कहूं वचन कहुँ व्यंग्यमें, परै अलंकृत आइ।
ताते कछु संक्षेप करि, तिन्हैं देत दरशाइ ॥ १ ॥

अथ उपमा अलंकार वर्णनम् ॥

दोहा-कहूं कहूं सम वर्णिये, उपमा सोई मानि।
विमल बाल मुख इन्दुसों, योंहीं औरो जानि ॥२॥
वासोवहै अनन्वया, मुखसों मुख छबिदेय।
शशिसों मुख मुखसों शशी, यों उपमा उपमेय३॥
उपमा अरु उपमेयको, सम न कहै गहिवेर।
ताको कहत प्रतीप हैं, पंचप्रकार सुफेर ॥ ४ ॥

यथापंचो प्रतीपअलंकारको कवित्त ॥

चंद्रकहै तिय आननसों जिनकीमतिवाके वखानसोंहरैली ॥
आनन एकता चन्द्रलखै मुखके लखे चंद्र गुमान घटैअली॥

दासन आननसो कहैं चन्द्र दईसो भई यह बात नहै भली॥
ऐसी अनूपबनाइकै आनन राखिवेको शशिहूकी कहाचली५

दृष्टान्तालंकार ॥

दोहा-सम बिम्बनि प्रतिबिम्ब गति, है दृष्टांत सुढंग ।
तरुणीमें मोमन बसै, तरु में बसै विहंग ॥ ६ ॥

अर्थान्तर न्यास अलंकार ॥

सामान्यते विशेष दृढ, है अर्थान्तर न्यास ।
तोरस बिनु औरै कहा, जल बिन जाइ न प्यास७॥

निदर्शना अलंकार ॥

द्वै सु एकही अर्थ बल; निदर्शनाकी टेक ।
सतनि असत सो माँगिवो, औ मरिवो है एक॥८॥

तुल्य योग्यता अलंकार ॥

सम स्वभाय हित अहितपर, तुल्य योग्यता चारु।
सम फल चाखै दाख सो, सींचन काटनहारु ॥९॥

उत्प्रेक्षादिअलंकार वर्णनम् ॥

दोहा-जहां कछू कछु सों लगै, समुझत देखत उक्त ।
उत्प्रेक्षा तासों कहैं; पौन मनो विषयुक्त ॥ १० ॥
चन्द्र मनोतम ह्वै चल्यो, जनुतिय मुख शशिहेत ।
दास जानियत दुरनको, रंग लियो सजिसेत॥ ११॥
यह नहिं यह कहिये जहां, तत्सम वस्तु दुराइ ।
सुहै अपन्हुति अधर छत, करत न पियहि यवाइ१२

सुमिरन भ्रम संदेहा अलंकार ॥

लक्षण नाम प्रकाश है, सुमिरन भ्रम सन्देह ।
यदपि भिन्न हू है तदपि, उत्प्रेक्षहिको गेह ॥१३॥

यथा--सोरठा ॥

समुझत नंदकिशोर, चन्द्र निरखि तव वदन छवि ॥
लखि भ्रम रहत चकोर, चन्द्र किधौं यह वदन है ॥१४॥

अथ व्यतिरेकालंकार ॥

दोहा–व्यतिरेकजु गुण दोष गनि, समता तजै यकंक ।
क्यों सम मुख निकलंक यह, वह सकलंक मयंक१५
आरोपन उपमानको, ताका रूपक नाम ॥
कान्हकुँवर कारी घटा, बिज्जु छटा तू बाम ॥१६॥

अथ अतिशयोक्ति अलंकार वर्णनम् ॥

अतिशयोक्ति अति बर्णि यह, औरहु गुण बलभार ॥
दाबिशैल माहि निमिषमें, कापि गो सागर पार॥१७॥

अथोदात अलंकार ॥

है उदात महत्व अरु, संपतिको अधिकार ॥
सुरपति छरिआदार अरु, नगन जडित मगद्वार॥१८॥

अथ अधिकालंकार ॥

अधिक जानि घटि बाढ जहां, अधार आधेइ ॥
जगजाके ओदर वसै, त्याहि तू ऊपर लेइ ॥ १९ ॥

अथ अन्योक्तादि वर्णन ॥

अन्य उक्ति औरहिकहै औरहिके शिर डारि ॥
शुक सेमर को सेइबो, अजहू तजहि विचारि॥२०॥

व्याजस्तुति अलंकार ॥

व्याजस्तुति पहिचानिये, स्तुति निंदाके व्याज ॥
बिरह ताप वाको दियो, भलो कियो ब्रजराज ॥२१॥

परजायोक्तिअलंकार ॥

परजायोक्ति जहां नई, रचनासों कछु वात ॥

वन्दौं व्याल बिछावनो, पायोहिय द्विजलात ॥२२॥

आक्षेपालंकार ॥

दोहा—कहै कहनकी विधि मुकुरि, कै आक्षेप सुवेश ॥
विरह बरीको मैनही, कहती लाल संदेश ॥ २३ ॥

अथ विरुद्धालंकार वर्णनम् ॥

है विरुद्ध अविरुद्धमें, बुधि बल सजे विरुद्ध ॥
कुटिल कान्ह क्यों वशकियो, छलीबानितुवशुद्ध२४

विभावनालंकार ॥

विनकारण कारज प्रगट, विभावना विस्तारु ॥
चितवतही घायलकरै, बिनअंजन दृगचारु ॥ २५ ॥

विशेषोक्ति अलंकार ॥

विशेषोक्ति कारज नहीं, कारणकी अधिकाइ ॥
महा महा योधा थके, टर्‌यो न अंगदपाँइ ॥ २६ ॥

उल्लास अलंकार ॥

गुण अवगुण जहँ और को, और धरै उल्लास ॥
सतपर दुखते दुखलहैं, परसुखते सुखदास ॥ २७ ॥

तद्‌गुण अलंकार ॥

अलंकार तद्‌गुण कहों, संगतिगुण गहिलेत ॥
होत लाल तियके अधर, मुक्त हँसत फिरि श्वेत२८॥

मिलिता अलंकार ॥

है समान मिलितो गनो, मिलित दुहूं विधि दास ॥
मिली कमलमें कमलमुखि,मिली सुवास सुवास२९॥

विशेष उन्मिलित अलंकार ॥

है विशेष उन्मिलित मिलि, क्योंहूं जान्यो जाइ ॥

मिल्यो कमलमुख कमलबन, बोलतहीं बिलगाइ २०

अथ समालंकार ॥

दोहा-उचित बात ठहराइये, समभूषण तिहि नाम ॥
याकजरारे दृगनवसि, क्यों न होहिं हरि श्याम ॥२१॥

भाविक भूत वर्तमानाऽलंकार ॥

भावी भूत प्रत्यक्षहीं, है भाविकको साज ॥
हमैं भयो सुरलोकसुख, प्रभु दरशनते आज ॥२२॥

समाधि अलंकार ॥

सोसमाधि कारज सुगम, और हेतु मिलि होत ॥
मिलिबेकी इच्छा भई, नाश्यो दिन उद्योत ॥ २३ ॥

सहोक्ति अलंकार ॥

कछु द्वै होहिं सहोक्तिमें, साथहि परे प्रसंग ॥
बढनलगी नवबाल उर, सकुच कुचनके संग ॥२४॥

विनोक्ति अलंकार ॥

है विनोक्ति कछु विन कछू, शुभकै अशुभचरित्र ॥
मायाबिन शुभ योग जप, न शुभ सुहृदबिन मित्र २५

प्रवृत्ति अलंकार ॥

कछु कछु को बदलो जहाँ, सो प्रवृत्त करि डीठि ।
कहा कहौं मनमोहनै, मनले दीन्हीं पीठि ॥ २६ ॥

सूक्ष्मालंकार वर्णनम् ॥

संज्ञाही बातैं किये, सूक्षम भूषण नाम ।
निज निज उर छूवै करैं, सोहैं श्यामा श्याम ॥२७॥

परिकर अलंकार वर्णनम् ॥

साभिप्राय विशेषनानि, परिकर भूषण जानि ॥

देव चतुर भुज ध्याइये, चारि पदारथ दानि ॥३८॥

अथ स्वभावोक्ति अलंकार ॥

दोहा–सुधी सूधी बातसों, स्वभावोक्ति पहिंचानि ॥
हरि आवत माथे मुकुट, लकुट लिये बर पानि॥३९

काव्यलिंग अलंकार ॥

हेतु समर्थन युक्तिसों, काव्य लिंगको अंग ॥
धिक्धिक्धिक्जगराग विन, फिरिफिरि कहतमृदंग॥

परिसंज्ञा अलंकार ॥

इहै एक नहिं और कहि, परिसंज्ञा निर्शंक ॥
एक रामके राज्यमें, रह्यो चंद्र सकलंक ॥ ४१ ॥
प्रश्नोत्तर कहिये जहां, प्रश्नोत्तर बहुबंद ॥
बाल अरुण क्यों नयन विन, दिय प्रसाद नलचंद॥

यथा--संख्याअलंकार वर्णनम्

वस्तु अनुक्रम है जहां, यथा संख्य तिहि नाम ।
रमा उमा वाणी सदा, हरि हर विधि सँग वाम ।४३।

ऐक्यावली अलंकार ॥

किये जँजीरा जोर पद, एकावली प्रमान ॥
श्रुतिवश माति मतिवश भगति, भक्तिवश्यभगवान

पर्य्यायअलंकार ॥

तजि तजि आशय कर्मते, जानि लेहु पर्य्याय ॥
तनु तजि बाढि हगन गई, थिरता हगतजिपाय ४५॥

इति अलंकार ॥

अथ संसृष्टि लक्षणम् ॥

दोहा—एक छंद में जहँपरै, अलंकार बहु दृष्टि ॥
तिल तन्दुलसे हैं मिले, ताहि कहैं संसृष्टि ॥ ४६ ॥

यथा—कवित्त ॥

घनसे सघन श्याम केश वेश भामिनीके,
व्यालिनसी बेनीभाल ऐसो एक भालही ॥
भ्रुकुटीकमान दोऊ दुहुँनको उपमान,
नैनसे कमल नासा करिमद घालही ॥
गरब कपोलनि मुकुर सम ताको सीय,
श्रवण आगे ओठ आगे बिम्ब यक हालही ॥
मोतिनकी सुखमा बिलोकियत दंतनमें,
दास हास बीजुरीको देख्यो एकचालही ॥ ४७ ॥

अस्य तिलक ॥

यहां केशपै पूर्णोपमालंकार, बेनीपै लुप्तोपमालंकार, भालपै अनन्वय अलंकार, भ्रुकुटीपै उपमानोपमेय अलंकार, नयन नासिका कपोलपै तीनोंप्रतीपालंकार, श्रवण ओठपै चौथो प्रतीपहै, दृष्टांतके तुल्ययोग्यतादंत औ हास्यपै निदर्शना भिन्न भिन्न पाइयतुहै ताते संसृष्टि अलंकार कहिये ४९

पुनर्यथा—कवित्त ॥

तीकोमुख इन्दुहै जु स्वेदन सुधाको बुन्द,
मोतीयुत नाक मानो लीने शुक चारोहै।
ठोढी रूप कूपहै किगाडोई अनूपहै,

कि आभिराम मुखछावि धामको पनारोहै ।
ग्रीवा छबि सीवां में ललित लाल माल लखि,
आवत चकोर जान अमल अंगारोहै ।
देखत उरोज सुधि आवतहै साधुनके,
ऐसोई अचल शिव साहेब हमारोहै ॥ ४८ ॥

अस्य तिलक ॥

यहां मुखपै रूपक अलंकार स्वेदपै अपन्हुति अलंकार मोतीयुत नाकपै उत्प्रेक्षालंकार ठोढीपै संदेहालंकार ग्रीवा पै भ्रान्ति अलंकार उरोजनप सुमिरनालंकार पाइयतुहै ताते याहू संसृष्टिहै ॥ ४८ ॥

अथ अलंकार शंकर लक्षणम् ॥

दोहा—द्वै कि तीन भूषण मिलैं, क्षिर नीर के न्याय ।
अलंकार शंकर कहैं, तिहि प्रवीन कविराय ॥४९॥
एक एकको अंगकहुँ, कहुँ सम होहिं प्रधान ।
कहूं रहत संदेहमें, शंकर तीनि प्रमान ॥ ५० ॥

अथ अंगांगि शंकर अलंकार वर्णनम् ॥

दोहा—मिटतनहीं निशि बासरहु, आनन चन्द्र प्रकाश ।
बनेरहैं याते उरज, पंकज कलिका दास ॥ ५१ ॥

अस्य तिलक ॥

इहां रूपकालंकार काव्यलिंग अलंकारको अंगहै याते अगांगिशंकर है ॥ ५१ ॥

अथ समप्रधान शंकर अलंकार वर्णनम्—कवित्त ॥

सुयश गँवावै भगतनहींसों प्रेमकरै,

चित अतिऊजरे भजत हरिनाम है ।
दीनके दुखनदेखै आपने सुखन लेखै,
विप्र पाँ परत तनमंजु मोह धाम है ।
जगपर जाहिरहै धरम निबाहिर है,
देवदरशनते लहत विश्रामहै ।
दासजू गनायेजे असज्जनके कामनहीं;
समुझिदेखो एई सब सज्जनके काम है ॥ ८२ ॥

अस्य तिलक ॥

इहां श्लेष विरुद्ध निदर्शना ये तीनो अलंकार प्रधानहैं याते समप्रधान शंकर कहा ॥ ८२ ॥

यथा ॥

दोहा-ग्रंथगूढ बन तरुनी, गौनी गणिका बाल ॥
इनकी शोभा तिलकहै, भूमिदेव भुविपाल ॥ ८३ ॥

अस्य तिलक ॥

यहां श्लेष दीपक तुल्य योग्यता तीनों अलंकार प्रधान हैं याते समप्रधान शंकर कहा ॥ ८३ ॥

अथ संदेह शंकर अलंकार-कवित्त ॥

कलप कमल वर बिम्बनके बैरी बंधु;
जीवनके बैरी लाल लीलाके धरन हैं ।
संध्याके सुमन सूर सुवन मजीठ ईठ,
कौहर मनोहरकी आभाके हरन हैं ।
साहब सहाबके गुलाब गुडहर गुर,
ईंगुर प्रकाशदास लालीके लरनहैं ।

कुसुम अनारी कुरविन्दके अंकुरकारी,
निन्दक पवारी प्रागप्यारीके चरनहैं ॥ ५४ ॥

अस्य तिलक ॥

यहां उपमा प्रतीप व्यतिरेक उल्लेखा ये चारों अलंकार संदेह शंकरहैं याको संकीर्ण उपमाभी कहतहैं॥५४॥

संकीर्ण उपमालंकार ॥

दोहा–बंधु चोरवादी सुहृद्, कलप कलप तरुजान ।
गुरुरिपु सुत प्रभु कारनो, संकीरन उपमान ॥५५॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंश श्रीमन्महाराजकुमारबाबूहिंदूपति विरचितेकाव्यनिर्णयेअलंकारमूलवर्णननाम तृतीयउल्लासः॥३॥

अथ रसांगवर्णनंस्थायीभाव ॥

दोहा–प्रीति हँसीसो केरिसौ, उत्साहौ भय मित्त ।
घृण विस्मय थिरभाव ये, आठबसैं शुभचित्त॥१॥

अथ शृंगार रसादिरस पूर्णता वर्णनम् ॥

उचित प्रीति रचना वचन, सो शृँगाररस जान ।
सुनत प्रीतिमय चितद्रवै, तब पूरण करिमान ॥२॥

हास्यरस ॥

हँसी भरयो चित हँसि उठै, जो रचना सुनि दास ।
कवि पंडित ताको कहैं, यह पूरण रसहास ॥ ३ ॥

करुणारस ॥

शोकचित्त जाके सुने, करुणामयह्वै जाइ ।
ताकविताईको कहैं, करुणारस कविराइ ॥ ४ ॥

वीररस ॥

दोहा–जो उत्साहिलु चित्तमें, देत बढाइ उछाह।
सो पूरणरस वीरहै, रचै सुकवि करि चाह ॥ ५ ॥

रुद्र, भयानक वीभत्सअद्भुतयेचारोंरसएकहीदोहेमेंजानना ॥

दोहा–ह्वैरिस बाढै रुद्र रस, भयहि भयानक लेखि।
घृणते है वीभत्सरस, अद्भुत विस्मय देखि ॥ ६ ॥
जाहिय प्रीति न सोकहै, हँसी न उत्सव ठान।
ते बाते सुनि क्यों द्रवै, दृढ ह्वै रहै पषान ॥ ७ ॥
ताते थाई भावको, रसको बीज गनाउ।
कारण जानि विभाव अरु, कारज है अनुभाउ॥८॥
व्यभिचारी ते तीस ये, जहँ तहँ होत सुजाइ।
क्रमते रंचक अधिक अति,प्रकट करैं थिरभाइ॥९॥
जानो नायक नायका, रसशृंगार विभाव।
चंद्र सुमन सखि दूतिका, रागादिको बनाव ॥१० ॥
औरनके न विभावमें, प्रकट कह्यो इहिकाज।
सबको नरे विभावहै; औरोहै बहु साज ॥ ११ ॥
सिंह विभाव भयानकहु, रुद्र वीरहू होइ।
ऐसी सामिलु रीतिमें, नियम कहै क्यों कोइ ॥१२॥
थंभ स्वेद रोमाञ्च स्वर, भंग कंप वैवर्ण।
सबहीके अनुभाव ये, सात्विक औरो अर्ण ॥ १३॥
भिन्न भिन्न वर्णन करैं, इन सबको कविराइ।
सबहीको करि एक पुनि, देत रसै ठहराइ ॥ १४ ॥

लखि विभाव अनुभावही, चर थिर भावै नेकु ।
रस सामग्री जो रमै, रसै गन धरि टेकु ॥ १५ ॥

थाई भाव कथनम् यथा—कवित्त ॥

मंद मंद गौनेसों गयंदगाति खोने लगी, ॥
बोने लगी विषसों अलक अहिछोनेसी ।
लंक नवलाकी कुचभारन डुनोनें लगा,
होने लगी तनकी चटक चारु सोनेसी ।
तिरछी चितौनसों विनोदनि ढितोनेलगी,
लगी मृदुबातनि सुधारस निचोनेसी ।
मौन मान सुन्दर सलोने पद दास लोने,
मुखकी बनक ह्वै लगन लगी टोनेसी ॥ १६ ॥

विभाव कथनम् यथा—कवित्त ॥

धीर ध्वनि बोलै थंभि थाभि झरखोलै,
मंडे करत कलोलै वारि वाहक आकाशमें ।
नृत्यत कलापी झिल्ली पिकहैं अलापी,
विरहजिन विलापी हैं मिलापी रसरासमें ।
संपाको प्रकाश वक अवलीको अवकाश,
बूढनि विकास दास देखिवेको यासमें ।
बनिता विलास मनकीन्हौंहै मुनीपनि सुनी
पनिकी बास लखि फैली निजवासमें ॥ १७ ॥

अनुभाव कथनम् यथा—सवैया ॥

जीबँधिही बाँधि जातुहै ज्यों ज्यों सु,
नीवीतनीनको बांधती छोरती ।

दास कटीलेहै गात कप,
बिहँसौंहीं लजौंहीं लसै दृग लोरती।
भौंह मरोरती नाक सिकोरती,
चीर निचोरती औ चित चोरती।
प्यारे गुलाबके नीरमें बोरयो,
प्रिया लपटेरस भीरमें बोरती ॥ १८ ॥

अथ व्यभिचारीभाव अपस्मार वर्णनम् ॥

दोहा--को जानै कैसी परी, कहूं विहाल प्रवीन।
कहूं तार तुम्बर कहूं, कहूं सारि कहुँबीन ॥ १९ ॥

अथ श्रृंगाररस वर्णनम् ॥

दोहा--प्रीति नायका नायकहि, सो शृँगार रस ठाउ।
बालक मुनि माहपाल अरु, देव विषे रतिभाउ॥ २०

वार्त्तिक ॥

सो श्रृंगार रस दो प्रकारका १ संयोग २ वियोग ॥
संयोग १ प्रकारका। वियोग ५ प्रकारका ॥ २० ॥

यथा ॥

दाहा- एकहोत संयोग अरु, पांच वियोगहि थापु ॥
सो अभिलाष प्रवास अरु, विरह असूया सापु॥ २१॥

अथ संयोग श्रृंगार वर्णनम्—सवैया ॥

विपरीति रची नंदनंदसों प्यारी अनंदके कन्दसों पागि रही। विथुरी अलकैं श्रमके झलकैं तनुओप अनूपम जागिरही ॥ अतिदास अघानी अनंदकला अनुरागिनहीं अनुरागि रही। तिरछे ताकिकै छबिसों छकिकै, थिरह्वै थाकिकि हियलागि रही ॥ २२ ॥

अथ अभिलाष हेतु वियोग—यथा ॥

दोहा—सुने लखे जहँ दंपतिहि, उपजे प्रीति सुभाग ।
आभिलाषै कोऊ कहै, को पुरवा अनुराग ॥२३॥

यथा—कवित्त ॥

आजु वहि गोपीकी न गोपी रही हाल कछु,
हाल बनमालके हिंडोरे आनि झूलिगो ।
अँखियां मुखाम्बुज में भारह्व समानी भई,
वाणी गद्‌गद् कद कदमसों फूलिगो ॥
जामग सिधारे नन्दनन्द ब्रजस्वामीदास,
जिनकी गुलामी मकरध्वज कबूलिगो ।
वाही मग लागीनेह घटमें गँभीर भरी,
नीर भरिबेको घाट घाटहिमें, भूलिगो ॥ २४ ॥

प्रवास हेतुकावियोग—यथा ॥

दोहा—प्रीतम गये विदेश जो, बिरह जोर सरसाइ ।
वही प्रवाल बियोगहै, कहैं सकल कविराय॥२५॥

यथा—कवित्त ॥

चंद्र चढि देखै चारु आनन प्रवीनगति,
लीन होतो माते गजराजनिको ठिलिठिलि ।
वारिधर धारानिते बारानिपै ह्वै रहे,
पयोधनिको ज्वैरहै पहारानिको पिलि पिलि ॥
दई निर्दयी दास दीन्हों है विदेश तऊ,
करो न अँदेश तुवध्यानहीमें हिलिहिलि ।

एकदुख तेरोहों दुखारी नित प्राणप्यारी,
मेरो मन तोसों नित आवतो है मिलिमिलि॥२६॥

विरह हेतु वियोग यथा–सवैया ॥

नैननको तरसैये कहांलों कहांलों हियो बिरहागिमें तैये ।
एक घरी न कहूं कलपैये कहांलगि प्राणनको कलपैये ॥
आवै यही अब जीमें बिचार सखीचलि सौतिहूके गृहजैये
मानघटेते कहा घटिहै जुपै प्राणपियारेको देखन पैये२७ ॥

असूयाहेतुक वियोग यथा–कवित्त ॥

नींद भूख प्यास उन्हैं व्यापत न तापसीलों;
तापसी चढत तनु चंदन लगायेते ।
अतिहीं अचेत होत चैतहूकी चांदनीमें,
चन्द्रक खवायेते गुलाबजल न्हायेते ।
दासभो जगत प्राण प्राणको वधिक औ,
कृशानुते अधिक भयो सुमन बिछायेते ।
नेहके बढाये उन येतो कछू पाये तेरो,
पाइबो न जान्यो बलि भौंहन चढायेते ॥ २८ ॥

शाप हेतुक वियोग–यथा ॥

दोहा- सबते माद्री पांडुको, शाप भयो दुखदानि ।
बसिबो एकहि भौनको,मिलत प्राणकी हानि॥२९

बालविषे रतिभाव वर्णनम्–सवैया ॥

चूंबिवेके अभिलाषन्ह पूरिक दूरते माखनलीन्हे बुलावति ।
लालगोपालकी चाल वकैयन दासजु देखतही बनिआवति।

ज्यों ज्यों हँसै विकसैंदँतियां मृदुआनन अंबुजमेंछविछावति
त्यों त्यों उछंगलै प्रेमउमंगसों नंदकीरानि आनन्द बढावति।

मुनिविषे रतिभाव वर्णनम्–सवैया ॥

आजु बड़े सुकृती हमहीं भयो पातकहानि हमारी धरातें ।
पूरुबहू किये पुण्य बडोई भयो प्रभुको पद धारिवो तातें।
आपकोहै सबभाँति भलोई विचारिबो दासजू एती कृपातें
श्रीऋषिराज तिहारे मिले हमैं जानि परीं तिहुँकालकीबातें

अथ हास्यरस वर्णनम्–कवित्त ॥

काहू एक दास काहू साहिबकी आशैमै,
कितेक दिन वीत्यो रीत्यो सबभांति बलहै ।
व्यथा जो विनयसों कहै उतरु यहीतो लहै,
सेवाफलहैही रहै यामें नहीं चलहै ।
एक दिन हासहित आयो प्रभु पासतन,
राखे न पुरानो बास कोउ एक थलहै ।
करत प्रणामसो विहँसि बोल्यो यह कहा,
कह्यो करजोरि देव सेवाहीको फलहै ॥ ३२ ॥

अथ करुणारस वर्णनम्–कवित्त ॥

बतियां हुती न सपनेहू सुनिवेकी सो,
सुन्योमैं जुहुतीन कहिवेकी सो कह्याइम ।
रोवें नर नारी पक्षी पशुदेह धारी रोवें,
परम दुखारी ऐसे शूलनि सह्योइमैं ।
हाइ अपलोक वोक पंथहि गह्योमैं,

बिरहागिनि दह्योमैं शोकसिंधु निबह्योईमैं ।
हाय ! प्राणप्यारे रघुनंदन दुलारे तुम,
बनको सिधारे तनुप्राणले रह्योईमैं ॥ ३३ ॥

अथ वीररसवर्णनम्–कवित्त ॥

देखत महांध दशकंध अंध धुंधदल,
बंधुसो बलकि बोल्यो राजा राम बरिवंड ।
लक्षण विचक्षण सम्हारे रहो निज पक्ष,
देखिहों अकेले होंही अरिअनी परचंड ।
आजु अचवाऊं इन शत्रुनके शोणितन दास,
भनि बाढी मेरे बाणन तृषा अखंड ।
जानि प्रणसक्कस तरकि उठ्यो सक्कस,
करकि उठयो कोदंड फरकि उठयो भुजदंड॥३४॥

अथ रुद्ररस वर्णनम्–सवैया ॥

क्रुद्धदशानन बीस भुजानिसों लैकपि ऋच्छ अनीसरवट्टत।
लक्षण तत्क्षण रक्त किये दृग लक्षविपक्षनके शिरकट्टत ॥
मारु पछारु पकारु दुहूँदल रुण्ड झपट्टि दपाट्टि लपट्टत ।
रुण्डलरैं भटमत्थनि लुट्टत योगिनि खप्पर ठट्टनिठट्टत ॥

भयानकरस वर्णनम्–कवित्त ॥

आयो सुनि कान्ह भूलयो सकल हुस्यारपन,
स्यारपन कंसको न कहतु सिरातुहै ।
व्याल बलपूर औ चणूर द्वार ठाढे तऊ,
भभरि भगाई भयो भीतरही जातुहै ।

दास ऐसी डरडरी मति है तहांऊं ताकी,
भरभरि लागी मन थरथरी गातुहै ।
खारहूके खरकत धकधकी धरकत,
भौनको न सकुरत सरकतु जातुहै ॥ ३५ ॥

अथ वीभत्सरस वर्णनम्—कवित्त ॥

बरषाके सरेमरे मृतकहूं खात न घिनात,
करै कृमिभरे मांसनके कौरको ।
जीवत वराहके उदर फारि चूसतहै,
भावै दुर्गंध वो सुगंध जैसे बौरको ।
देखत सुनत सुधि करतहू आवै घिन,
साजे सब अंगनि घिनावनेही डौरको ।
मतिके कठोर मानि धरमको तोर करै,
करम अघोर डरै परम अघोरको ॥ ३६ ॥

अथ अद्भुतरस वर्णनम्—कवित्त ॥

शिव शिव कैसो हुत्यो छोटोसो छबीलो गात,
कैसो चटकीलो मुखचंद्रसो सोहावनो ।
दास कौन मानिहै प्रमाण यह ख्यालहीमें,
सिगरो जहान द्वैकफाल बिचल्यावनो ।
बारबार आवै यही जियमें विचार यह,
विधिहै कि हरहै कि परमेश पावनो ।
कहिये कहाजू कछू कहत न बनिआव,
अतिहीं अचंभाभरयो आयो यह बावनो ॥

व्यभिचारीभाव लक्षणं-कवित्त ॥

निर्वेद ग्लानि शंका असुया औ मद भ्रम,
आलस दीनता चिंता मोह स्मृति धृतिजानि ।
ब्रीडा चपलता हर्ष आवेग औ जडता,
विषाद उत्कंठा निद्रा औ अपस्मार मानि ।
स्वपन विवोध अमरष अवहित्तगानि,
उग्रता औ मति व्याधि उन्माद मरन आनि ।
त्रास औ वितर्क व्यभिचारी भाव तेतिस ये,
सिगरे रसनिके सहायकसे पहिचानि ॥ ३८ ॥

दोहा-नाटकमें रस आठई, कह्यो भरत ऋषिराइ ।
अनत नवम किय शान्तरस, तहँनिर्वेदे थाइ ॥३९॥

अथ शांतरस वर्णन ॥

दोहा-मनविराग सम शुभ अशुभ, सो निर्वेद कहन्त ॥
ताहि बढेते होतुहै, संत हिये रससंत ॥ ४० ॥

सवैया ॥

भूखे अघाने रिसानें रसाने हितू अहितूनसों स्वच्छ मनेहैं॥
दूषणभूषण कंचन कांचजु, मृत्तिको माणिक एकगनेहैं ॥
शूलसोंफूलसोंशालपलाशसों, दास हिये समसुः खसनेहैं ॥
रामके नामसों केवलकामते ईजगजीवनमुक्त बनेहैं॥४१॥

दोहा-शृंगारादिक भेद बहु, अरु व्यभिचारी भाउ ।
प्रगटचो रस सारांश मैं,ह्यांको करै बढाउ ॥ ४२ ॥

दोहा-भाव उदयसंध्यो सवल, शांत्यो भावाभास ।
रसाभास ये मुख्य कहुँ,होत रसहिंलों दास ॥ ४३ ॥

भावउदयभाव संधिलक्षणम् ॥

दोहा—उचित बात तत्क्षण लखें, उदयभावकी होइ ।
बीचहिमें द्वै भावके, भाव संधिहै सोइ ॥ ४४ ॥

भावउदय यथा—सवैया ॥

देखिरी देखि अली संगजाइधों कौनिहै का घरमें वहरातिहौ
आननमोरिकै नैनन जोरि अवैगई ओ झठ ह्वै मुसुकातिहै
दासजुजा मुखज्योतिलखेते सुधाधरज्योतिखरी सकुचातिहै
आगिलिये चलिजातिसुमेरेहियेबिच आगिदियेचलिजातिहै

अथ भावसंधि—यथा ॥

दोहा—कंसदलनपर दौरि उत, इत राधाहित जोर ।
चलि रहि सकै नश्याम चित, ऐंचलगी दुहुँओर ४६॥

अथ भावसवल—वर्णनम् ॥

दोहा—बहुत भाव मिलिकै जहां, प्रगट करैं इकरंग ।
सवलभाव तासों कहैं, जिनकी बुद्धि उतंग ॥ ४७॥
हरि संगति सुखमूल सखि, ह्वै परपंची गाँउं ॥
तूकहि तो तजि शंक उत, हगबचाई द्रुतजाउँ४८॥

अस्यातिलक ॥

उत्कंठा शंकादीनता धृति आवेग अवहित्थाको सबलताहै ॥

दोहा—भावशान्त सोहै जहां, मिटत भाव अन्यास ।
भाव जो अनुचित ठोरहै, सोई भावाभास ॥ ४९ ॥

अथ भावशान्त—यथा ॥

दोहा—वदन प्रभाकर लाललखि, विकस्यो उर अरबिंद ।

कहो रहे क्यों निशि बस्यो, हुत्यों जुमान मलिंद ॥५०॥

भावाभास-यथा ॥

दोहा-दर्पणमें निज छाँह सँग, लखि प्रीतमकी छाँह ॥
खरी ललाई रोषकी, ल्याई अँखियन माँह ॥ ५१ ॥

अस्यातिलक ॥

नाहक क्रोधभावहै ताते भावाभास कहिये ॥

अथ रसाभास-वर्णनम् ॥

दोहा-सुधा सुराधर तुअनजारि, तूमोहनी सुभाइ ।
अछकन देत छकाइहै, मार मरेन को ज्याइ ॥५२॥

अस्यातिलक ॥

एक नायका बहुत नायकको वसकरैहै ताते रसा भासहै ॥

दोहा-भिन्न भिन्न यद्यपि सकल, रसभावादिक दास ॥
रसैव्यंगि सबको कह्यो, ध्वनिको जहां प्रकाश ॥५३॥

इतिश्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंस श्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबू-
हिन्दूपति विरचितेकाव्यानिर्णयेरसांगवर्णनंनामचतुर्थोल्लासः ॥ ४॥

अथ रसको अपरांग वर्णनम् ॥

दोहा-रसभावादिक होत जहँ, और औरको अंग ॥
तहँ अपरांग कहैं कोऊ, कोउ भूषण इहि ढंग॥१॥
रसवत प्रेयोउर्यस्वी, समाहितालंकार ।
भावो देवत संधिवन, और सबलवत धार ॥ २ ॥

रसवतालंकार-यथा ॥

दोहा-जहँ रसको कैभावको, अंगहोत रसआइ ।
तिहि रसवत भूषण कहैं. सकल सुकवि समुदाइ॥३

अथ शांतरसवत अलंकार वर्णनम्-सवैया ॥

वादिन वो रस व्यंजन खाइबो वादिन वो रसमिश्रितगैबो॥
वादि जराऊ मयंक बिछाइ प्रसून घने परिपायँ लुढैबो ॥
दासजू वादि जनेश मनेश धनेश फणेश गणेश कहैबो ॥
या जगमें सुखदायक एक मयंकमुखीन को अंकलगैबो४
दोहा-चंद्रमुखिनके कुचनपर, जिनको सदा बिहार ।
अहहकरै ताही करन, चरवन फेरवहार ॥ ५ ॥

अस्यातिलक ॥

इहां करुणारसको शृंगार रस अंगहै ॥ भय। "एक मयंक मुखीनको अंकलगैबो" ॥ ५ ॥

इहां शांतरस शृंगाररसके अंगमें है ताते रसवत कहिये ॥

अद्भुतरसवत वर्णनम्-सवैया ॥

जाहि दवानल पानकियेते बढी हियमें शरदी सरदेसों ॥
दास अघासुर जोर हरचो जु लह्यो वत्सासुरसे वरदेसों ॥.
बूडत राखि लियो गिरि लै ब्रजदेश पुरंदर वेदरदेसों ॥
ईशहमैं परदे परदे सो मिलौं उडि ताहरिसों परदेसों ॥६ ॥

अस्यातिलक ॥

यहां चिन्ताभावको अद्भुतरस अंग है ॥

अथ शृंगार रसवतवर्णनम् भयानकरसवत–कवित्त ॥

भूल्योफिरै भ्रमजालमें जीवके,
ख्यालकी खालमें फूल्यो फिरैहै।
भूत सुपांच लगें मजबूतहै,
सांच अबूतहै नाच नचैहै।

कानमें आतुरदास कहीको,
नहींतै तुही मनमें पछितैहै।
कामके तेजन कामतपै,
बिन रामजपै बिसराम न पैहै॥ ७॥

अस्य तिलक॥

यहां शान्तरसको भयानकरस अंगहै॥

अथ प्रेयालंकारवर्णनम्॥

दोहा–भावै जहँहै जातुहै, रस भावादिक अंग।
सो प्रेयालंकारहै, वर्णत बुद्धि उतंग॥ ८॥

यथा–कवित्त॥

मोहन आपने राधिकाको बिपरीतको चित्रबिचित्र बनाइकै
डीठि बचाइ सलोनीकी आरसी मैं चपकाइ गयो बहराइकै
घूमि घरीकमें आइ कह्यो कहा बैठि कपोलन चंद्र तुलाइकै
दर्पणत्यों तियचाह्योतही मुसुकाइरही दृगमोरिलजाइकै ९॥

अस्य तिलक॥

यहां स्पर्शको लज्जाभाव अंगहै॥

दोहा–दुरेदुरे ताकि दूरिते, राधे आधे नैन।
कान्ह कँपैतुर दरशते, गिरि डगुलात निगरैं॥ १०॥

अस्य तिलक ॥

यहां कंपभावको शंकाभाव अंग है ॥

यथा—कवित्त ॥

पीतपटी कटिमें लकुटी करगुंजके मालहिये दरशावें
सौरभ मंजरी काननिमें शिखिपच्छनि शीशकिरीट बनावें
दास कहाकहो कामरिओढ अनेक बिधाननि भौंह नचावें।
कारे डरारे निहारि इन्हें सखि रोम उठै अंखियांभरिआवें॥

अस्य तिलक ॥

यहां अवहित्था भावको निंदाभाव अंगहै ॥

उर्यस्वीअलंकार वर्णनम् ॥

दोहा--काहूको अंग होत रस, भावा भास जुमित्त ।
उर्यस्वी भूषण कहैं, ताहि सुकवि धारि चित्त॥१२॥

यथा— सवैया ॥

ऊधो तहांई चलोलै हमैं जहँ कूबरी कान्ह बसैं इक ठौरी ।
देखिये दास अघाइ अघाइ तिहारे प्रसाद मनोहर जोरी
कूबरीसों कछु पाइये मंत्र लगाइये कान्हसों प्रेमकी डोरी॥
कूबर भक्ति बढाइये वृंद चढाइये वंदन चन्दन रोरी ॥

अस्य तिलक ॥

सौतिके सुख देखिवेकी उत्कंठा मंत्रलीवेकी चिन्ता औ कूबरकी भक्ति ये तीनों भावाभास हैं सो वीभत्सरसको अंग हैं ॥

यथा—सवैया ॥

चंदन पंक लगाइकै अंग जगावती आगि सखी बरजोरै ॥
तापर दास सुवासन ढारिकै देतिहै वारि बयारि झकोरै ॥

पापी पपीहा न जीहा थकै तुव पीपी पुकार कैकै उठिभोरैं॥
दूत कहाहे दहे परदाहि गई करि जाहि दईके निहोरैं॥ १४॥

अस्य तिलक ॥

पपीहासो दीनता भावाभासहै सो विषादभाव प्रलाप दशाको अंग है ॥

यथा—कवित्त ॥

दारिद बिदारिवेको प्रभुके तलासतौ,
हमारे यहां अनगन दारिदकी खानिहै ।
अघकी शिकारी जो हैं नजरि तिहारी,
तौहों तन मन पूरन अघन राख्यो ठानिहै ॥
दास निज संपति सुसाहिबके काज आये,
होत हरषित पूरो भाग उनमानिहै।
आपनी विपतिको हुजूरहो करत लखि,
रावरेकी विपति बिदारनकी बानि है ॥ १५ ॥

अस्य तिलक ॥

दानवीरको रसाभासहै सो दीनता भावको अंगहै ॥

समाहितालंकार ॥

दोहा--काहुको अँग होत है, जहँ भावनकी शांति ॥
समाहिता लंकार तहँ, कहै सुकवि बहु भांति॥ १६

यथा ॥

दोहा—राम धनुषटंकोर सुनि, फैल्यो सब जग सोर ।
गर्भश्रवहिं रिपुरानियां, गर्व श्रवहिं रिपुजोर॥ १७॥

अस्य तिलक ॥

यहां भयानक रसको गर्व भावशान्त अंगहै ॥

यथा-सवैया ॥

जो दुखसों प्रभु राजीरहै तौ कहो सुखसिद्धिनिदूरिबहाऊं॥
पै यह निंदा सुनो निजश्रोणसों कौनसोंकौनसोंमौनगहाऊं॥
मैं यह सोच बिसूरि बिसूरि करों बिनती प्रभुसांझपहाऊं ॥
तीनिहुँलोकके नाथसमत्थहैं मैहीं अकेली अनाथ कहाऊं॥

अस्य तिलक ॥

यहां निन्दा सुनिबेकी कोपशांति चिन्ताभावको अंगहै ॥

भावसंधिवत वर्णनम् ॥

दोहा-भावसंधि अँगहोइ जो, काहूको अन्यास ॥
भावसंधिवत तिहि कहैं, पंडित बुद्धि विलास॥१९॥
पियपराध तिलआधातिय, साधु अगाधु गनैन ।
जानिललौहैं होहिंगे, सौहैं करति न नैन ॥ २० ॥

अस्य तिलक ॥

उत्तमा नायकामें क्रोध अवहित्था उत्कण्ठा लज्जाकी संधि अपरांगहै ॥

भावोदयवत-यथा ॥

दोहा-रसभावादिकको जुकहुँ, भाव उदय अँगहोइ ॥
भावोदयवत तिहिकहैं, दास सुमति सब कोइ ॥२१॥
चलत तिहारे प्राणपति, चलिहैं मेरे प्रान ।
जगजीवन तुम बिन हमैं, धिकजीवन जगजान॥२२॥
यहां प्रवत्स्यत्प्रेयसी नायकाको ग्लानि भाव अंग है ॥

भावसबलवत–यथा ॥

दोहा–भावसबलकहि दासजो, काहूको अँगहोइ ॥
भावसबलवत तिहि कहैं, कवि पंडितसबकोइ२३

यथा–कवित्त ॥

मेरेपग भाँवतोहो भावतो सलोनोहों,
हँसत कही बालम बिताई कत रतियां ।
इतनो सुनत रूसि जात भयो पीछे पछिता,
इहों मिलन चली गोये भेष भतियां ॥
दासबिनु भेंटे हो दुखित फिरिआई सेज
सजनी बनाई बूझि आइबेकी घतिआं ।
बारलागे लागी मगजोहै हो किवाँर लागी,
हाय अबतिनको सँदेशहू न पतियां ॥ २४ ॥

अस्य तिलक ॥

यहां आठो नायकाको सबल प्रोषितपतिकाको अंगहै ॥

यथा–कवित्त ॥

सुमिरि सकुचिना थिराति शंकी त्रसति,
तरकि उग्रवानिस गलानि हरषातिहै ।
उनिदति अलसाति सोवति सधीर चौंकि,
चाहि चित्तभ्रमित सगर्ब इरखाति है ॥
दास पियनेह छन छन भाव बदलति,
श्यामा सबिराग दीन मतिकै मखातिहै ।
जल्पति जकाति कहराति कठिनाति मति,

मोहाति मराति बिललाति बिलखातिहै ॥२९॥

अस्य तिलक ॥

यहां प्रवास विरहकेये तेंतीसो व्यभिचारी अंगहै ॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंशश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिंदूपति विरचितेकाव्यनिर्णयेरसभावके अपरांगादिवर्णननाम पंचमोल्लासः ॥ ५ ॥

अथ ध्वनिभेद वर्णनम् ॥

दोहा—बाच्य अर्थते व्यंग्यमें, चमत्कार अधिकार ॥
ध्वनि ताहीको कहतसो, उत्तम काव्य विचार॥१

यथा—कवित्त ॥

भौंर तजि कुचन कहत मखतूल औ क-
पोलनिकों कंबुतें मधूके भांति भांति है ।
बिद्रुम बिहाइ सुधा अधरन भाषै कौल,
बरज कुचनि करि श्रीफलकी ख्याति है ॥
कंचन निदरि गनै गातको चंपक पात,
कान्ह मति फिरि गई कालिहीकी राति है ।
दासयों सहेली सों सहेली बतराति सुनि,
सुनि उत लाजनि नवेली गडी जातिहै ॥ २ ॥

दोहा—ध्वनिको भेद विभांतिको, भनैभारती धाम ।
अविवांक्षितो विवांक्षितो,वाच्य दुहूनको नाम ॥३॥

अथ अविबांक्षितबाच्य लक्षणम्—दोहा ॥

वक्ताकी इच्छा नहीं, वचनाहिंको जुस्वभाउ ।
व्यंग्य कढै तिहि बाच्यको,अविवांक्षित ठहराउ॥४॥

अर्थान्तर संक्रमित इक, है अविवांक्षित वाच्य।
पुनि अत्यंत तिरस्कृता, दूजो भेद पराच्य ॥ ५ ॥

अथ अर्थान्तर संक्रामितवाच्यध्वनि लक्षणम् ॥

अर्थ ऐसही, बनतजहँ, नहीं व्यंग्यकी चाह।
व्यंग्यनिकारि तऊ करै, चमत्कार कविनाह ॥ ६ ॥
अर्थान्तर संक्रमितसो, वाच्य जु व्यंग्यअतूल।
गूढ व्यंग्ययामें कही, होत लक्षणा मूल ॥ ७ ॥

यथा-दोहा ॥

सुमधु प्याइ प्रीतम कहै, प्रिया पियहि सुख मूलि।
दासहोइ ता समयमें, सब इंद्रिय दुखदूरि ॥ ८ ॥

अस्य तिलक ॥

मधु छुयेते त्वचाको सुखहोइ पीवेते जीवको बोल सुनेते कानोंको देखेते दृगनको सुगंधते नाकका सुख होइयों पांचों इंद्रियनको दुख दूरि होतुहै ॥

अथ अत्यंत तिरस्कृत वाच्यध्वनि-दोहा ॥

है अर्थान्त तिरस्कृत जु, निपट तजे ध्वनि होइ ॥
रसमय लक्ष्यत पाइये, मुख्य अर्थको गोइ ॥ ९ ॥

यथा-दोहा ॥

सखीहाल इन सोच तुव, तू किय मो सब काम ॥
अब आनहि चित सुचितई, सुखपैहै परिणाम ॥ १० ॥

अस्य तिलक ॥

कहा विवांक्षित ध्वनि चाहिकरै कवि जाहि ॥ असंलक्ष्य क्रमलक्ष्य क्रमहोत भेद द्वैताहि ॥ १० ॥

दोहा-कहा बिवांक्षित वाच्य ध्वनि, चाहिकरै कवि जाहि॥
असंलक्ष्य क्रमलक्ष्य क्रम, होत भेद द्वैताहि॥११॥

असंलक्ष्य क्रमध्वनि॥

असंलक्ष्यक्रम व्यंग्यजहँ, रस पूरणता चारु॥
लखि न परै क्रम जेहि द्रवै, सज्जन चित्त उदारु१२॥
रसभावानक भेदकी, गणनी गनी न जाइ॥
एक नाम सबको कह्यो, रसै व्यंग्य ठहराइ॥१३॥

अथ रसव्यंग्य कथन यथा-सवैया॥

मिस सोइबो लालको मानि सही हरिही उठि मौनमहाधरिकै
पटटारि रसीली निहाररही मुखकी रुचिको रुचिको करिकै
पुलकावलिपेखिकपोलमैंलनिकैसुखि साइ लजाइमुरीअरि
लखि प्यारे विनोदसौं गोदगह्योउमह्योसुखमोदाहियोभरिकै

अथ लक्ष्यक्रमव्यंग्य लक्षणम्॥

दोहा-होत लक्ष्य क्रम व्यंग्यमें, तीनिभांतिकी व्यक्ति॥
शब्द अर्थकी शक्तिहै, अरु शब्दारथ शक्ति॥१५॥

अथ शब्दशक्ति लक्षणम्॥

दोहा-अनेकार्थमय शब्दसों, शब्दशक्ति पहिंचानि॥
अभिधामूलक व्यंग्यजहँ पहिले कह्यो बखानि१६॥
कहूं वस्तुते वस्तुकी, व्यंग्यहोत कबिराज॥
कहूं अलंकृत व्यंग्यते, शब्द शक्ति द्वैसाज॥१७॥

अथ वस्तुते वस्तु व्यंग्यध्वनिलक्षणम्-दोहा॥

सूधी कहनावनि जहां, अलंकार ठहरैन॥

ताहि वस्तु संज्ञाकहैं, व्यंग्य होइकै बैन ॥ १८ ॥

अथ शब्दशक्तिध्वनिवस्तुतेवस्तुध्वनितत्परव्यंग्य–यथा ॥

दोहा–लालचुरी तेरे अली, लागत निपट मलीन ॥
हरियारी करि देउँगी, हौंतौ हुकुम अधीन ॥ १९ ॥

अस्य तिलक ॥

एक अर्थ साधारणहै एक अर्थमें दूतत्वहै यह वस्तुते वस्तु व्यंग्य॥

अथ वस्तुते अलंकार व्यंग्य ॥

दोहा–फैलि चलो अगणित घटा, सुनत सिंह घहरानि ॥
परो झोर चहुँओरते, होत तरुनको हानि ॥२०॥

अस्य तिलक ॥

घटा जोहै गजसमूह सो सिंहकी गर्ज सुन भाजिचले वृक्षनकी हानि है वो उचितहै यह समालंकार व्यंग्य है ॥

कवित्त ॥

जानिकै सहेट गई कुंजन मिलन तुम्हैं,
जान्यो न सहेट को बदैया ब्रजराज को ।
सूनोलखि सदन शृंगार ज्यों अंगार भयो,
सुखदेनवारो भयो दुखद समाजको ॥
दास सुखकंद मंद शीतल पवन भयो,
तनते ज्वलन उत कवन इलाज को ।
बालके बिलापन बियोग लतापनको,
लाजभई मुकुत मुकुत भई लाजको ॥ २१ ॥

अस्य तिलक ॥

यहां शब्दशक्तिते अन्योक्ति उपमालंकार करिकै अन्योन्या लंकार काव्य लिंगालंकार यथा संख्या अलंकार ॥

अथ समाअलंकारव्यंग्य अथ शक्तिलक्षणम्

दोहा--अनेकार्थमय शब्दताजि, और शब्द जे दास ।
अर्थशक्ति सबको कहै, ध्वनिमें बुद्धिविलास ॥२२॥
वाचक लक्षक वस्तुको, जग कहनावतिजानि ।
स्वतः संभवी कहतहै, कविपण्डित सुखदानि ॥ २३ ॥
जग कहनावतितेजु कछु, कवि कहनावति भिन्न ॥
तिहि प्रौढोक्ति कहैं सदा, जिनकीबुद्धिअखिन्न ॥२४ ॥
उज्ज्वलताई कीर्तिकी, श्वेतकहै संसार ॥
तमछायो जगमों कहै, खुले तरुनि केवार ॥२५॥
कहैहास्यरस शान्तरस, श्वेतवस्तुसे श्वेत ॥
श्याम शृंगारो प्रीति भय, अरुणरुद्र गनिलेत ॥२६ ॥
करुणा अरुण अवीरसो रविसों तप्त प्रताप ॥
सकल तेज मंते अधिक, कहैं विरह संताप ॥ २७ ॥
सांची वातनयुक्ति बल, झूंठीकहत बनाइ ॥
झूंठी वातनको प्रगट, साँचुदेत ठहराइ ॥ २८ ॥
कहे कहा वै युक्तिसों, बाते बिबिध प्रकार ॥
उपमामें उपमेयको, देहि सकल अधिकार ॥ २९ ॥
योंही औरो जानिये, कवि प्रौढोक्ति विचार ॥
सिगरी रीति गनावते, बाढै ग्रंथ अपार ॥ ३० ॥

सोरठा—वस्तुव्यंग्यकहुं चारु, स्वतः संभवी वस्तुते ॥
बस्तुहितेऽलंकार, अलंकारते वस्तु कहँ ॥ ३१ ॥
कहूं अलंकृत बात, अलंकार व्यंजितकरै ॥
योंही पुनि गनिजात, चारिभेद प्रौढोक्तिमें ॥३२॥

अथ स्वतःसंभवी वस्तुते वस्तुध्वनि यथा ॥

दोहा—सुनि सुति प्रीतम आलसी, धूर्त सूम धनवंत ॥
नवलबाल हियमें हरष, बाढत जात अनंत॥३३॥

अस्य तिलक ॥

नायक आलसीहै तौ कहूं जाइगो नहीं धनवंतहै वो सूमहै तौ दरिद्र होनेका डरनहींहैंयाते सबभूषण बसन मिलैगोधूर्तहै तोकामी होइगो याते सब वाकी चितचाही बातहै ताते यह वस्तुव्यंग्यहै ॥

स्वतःसंभवी वस्तुते अलंकार व्यंग्य ॥

दोहा—सखि तेरो प्यारो भलो, दिन न्यारो ह्वै जात ॥
मोतें नहिं बलबीरको, पल बिलगात सुहात॥३४॥

अस्य तिलक ॥

आपको बाते बडी स्वाधीन पतिका जनावतिहै यह व्यतिरेकालंकार व्यंग्य है ॥

अथ स्वतःसंभवी अलंकारते वस्तुव्यंग्य—कवित्त ॥

गिलिगये स्वेदनि जहांई तहां छिलि गये,
मिलिगये चंदन भिरेहै इहि भायसों ।
गाढेह्वै रहेही सहे सन्मुख तुकानिलीक,
लोहित लिलार लागी छीट अरिघायसों ॥
श्रीमुख प्रकाश तन दासरीति साधुनकी,

अजहूंलों लोचन तमीले रिसतायसों ।
सोहै सर्वांग सुख पुलक सोहाये हरि,
आये जीति समर समर महारायसों ॥ ३५ ॥

अस्य तिलक ॥

रूपक उत्प्रेक्षालंकार करिकै नायकाको अपराध जाहिर करतिहै यह वस्तु व्यंग्य है ॥

अथ अलंकारते अलंकार व्यंग्य ॥

दोहा–पातक तजि सब जगतको, मोमैं रह्यो बजाई ॥
राम तिहारे नामको, इहां न कछू बसाइ॥ ३६ ॥

अस्य तिलक ॥

मोहीमें पापरह्यो यह परि संख्यालंकार तिहारो नाम समर्थ है यहां कछु नहीं वसातो यह विशेषोक्ति अलंकार व्यंग्य सबते मैं बडी पापीहूं यह व्यतिरेकालंकार इति स्वतः संभवी ॥

अथ प्रौढोक्ति वस्तुते वस्तु–सवैया ॥

दासके ईश जगै यश रावरो गावतीं देववधू मृदुतानन। जातो कलंक मयंकको मूँदि औ धामते काहू सतावतो भानन ॥ सीरोलगै सुनि चौंकिचितै दिगदंतिककैं तिरछे दृग आनन श्वेत सरोज लगैंकै सुहाय घुमायकै शुण्ड मलैदुहुँकानन ॥ ३७ ॥

अस्य तिलक ॥

तिहारी कीर्ति स्वर्गहूं दिगन्तहूं पहुँची शीतल है उज्जलहै यह वस्तु व्यंग्य ॥

यथा ॥

दोहा–करत प्रदक्षिण बाडवहि, आवत दक्षिण पौन ।
विरहिनि वपु बारत बरहि, बरजनवारो कौन॥३७॥

अस्य तिलक ॥

तिहारे विरहके मारे हम विरहिनी लोग मरती हैं यह वस्तुव्यंग्य।

अथ कविप्रौढोक्ति वस्तुते अलंकार व्यंग्य ॥

दोहा–निज गुण मान समानहो, धीरज किय हिय थाप ।
सुतो श्याम छवि देखतहि, पहिले भाग्योआप३८॥

अस्य तिलक ॥

बिनामनाये मानछूटयो यह विभावनालंकार व्यंग्य ॥

दोहा–द्वार द्वार देखत खडी, गैल छयल नँदनंद ।
सकुचि बांचे दृग पंचकी, कसाति कंचुकीबंद॥३९॥

अस्यातिलक ॥

हर्ष प्रफुल्लितासे बंद ढील भये ताको संकिकै छपावतिहै यह व्याजोक्ति अलंकार व्यंग्यते व्यंग्य प्रौढोक्ति ॥

अथ प्रौढोक्तिकारि अलंकारते वस्तु व्यंग्य॥

दोहा–कहां ललाई लेरही, अँखियां बेमर्याद ॥
लाल भाल नख चंद्र द्युति,दीन्हों इन्है प्रसाद॥४०॥

अस्यातिलक ॥

रूपकालंकारते तुम परस्त्रीपै रहे हो यह वस्तु व्यंग्य ॥

अथ प्रौढोक्ति कारि अलंकारते अलंकार व्यंग्य ।

दोहा–मेरो हियो पषाणहै, तियदृग तीक्षणबान ।
फिरि फिरि लागतही रहैं, उठै वियोग कृशान४१॥

अस्य तिलक ॥

रूपकालंकारते समालंकार व्यंग्य ॥

यथा—सवैया ॥

करै दासै दया वह वाणी सदा, कवि आननकोलजूबैठीलसै ॥
महिमा जग छाई नवोरसकी, तनु पोषक नाम धरै छरसै ।
जगजाके प्रसाद लता पर शैल, शशीपर पंकज पत्रलसै ॥
करि भांति अनेकनि यों रचनाजु, विरंचिहुकीरचनाकोहँसै ॥

अस्यतिलक ॥

रूपक रूपकातिशयोक्ति करिकै विरेकालंकार व्यंग्य ॥

यथा सवैया ॥

ऊंचे अवास विलासकरै अंसुआनको सागरकै चहुँ फेरै ।
ताहूते दूरिलौं अंगकी ज्वाल कराल रहै निशि वासर घेरै ।
दास लेहै वह क्यों अवकाश उसास रहै नभओर अभेरै ॥
है कुशलात इती पहि बीचुजु मीचु न आवन पावत नेरै४३

अस्यतिलक ॥

काव्य लिंग अलंकार करिकै उत्तर विशेषोक्ति अलंकार व्यंग्य॥

इति अर्थ शक्ति ॥

अथ शब्दार्थ शक्ति लक्षणम् ॥

दोहा—शब्द अर्थ दुहुँशक्ति मिलि, व्यंग्य कढे अभिराम ॥
कवि कोविद तिहि कहतहैं, उभै शक्ति इहिनाम ४४

कवित्त ॥

सीवा सुधरम जानो परमकिसानो माधो,
पापजंतु भाजे भ्रमश्यामारुन सेतमै ।

देशी परदेशी बवै हेम हय हीरादिक,
केशमेद चीरादिक श्रद्धा सम हेतमै ॥
परसी हुलारै कै हलारै पहिलेही दास,
राशि चारिफलनकी अमर निकेतमै ।
फेरि ज्योति देखिवेको हरवर दानदेत,
अद्भुत गतिहै त्रिबेनीजूके खेतमें ॥ ४५ ॥

अस्यातिलक ॥

यहाँ उभयशक्तिते रूपक समासोक्तिको शंकर करिकै अतिशयोक्ति अलंकार व्यंग्य ॥

अथ एकपद प्रकाशित व्यंग्य–दोहा ॥

पदसमूह रचनानिको, वाक्य विचारो चित्त ।
तासु व्यंग्य वरण्यो,सुन्यो पदव्यंजक अबमित्त४६
छंद भरेमें एकपद, ध्वनि प्रकाश करिदेइ ।
प्रगट करों क्रमते बहुरि, उदाहरन सबतेइ ॥४७॥

अर्थान्तर संक्रमितवाच्य पदप्रकाश ध्वनि–यथा ॥

दोहा–सुन्दर गुण मंदिर रसिक, पास खरो ब्रजराज ।
आली कौन सयानहै, मान ठानिबो आज॥ ४८ ॥

अस्यतिलक ॥

आज शब्दते घातकी समय प्रकाशित होता है ।

अथ अत्यंत तिरस्कृत वाच्य–यथा ॥

दोहा–भाल भ्रुकुटि लोचन अधर, हियोहिये की माल ।
छला छिगुनियाँ छोरको, लख सिरात हगलाल ४९

अस्यतिलक ॥

सिराइवेते जरिवो व्यंजित करिकै अपराध प्रकाश्यो ॥

अथालक्ष्य क्रम रसव्यंग्य यथा—कवित्त ॥

जातिहै तू गोकुल गोपालहूं पै जैबे नेकु,
आपनी जो चेरी मोहिं जानती तू सहीहै।
पाँय परि आपुहीसों पूंछिबे कुशल क्षेम,
मोपै निज ओरते नजात कछू कही है ॥
दास मधुमासहूके आगमन आये तो,
पतियनसों सँदेशनकी बात कहा रही है ॥
एती सखी कीवी यह अम्बबौर दीवी अरु,
कहिवी वा अमरैयां राम राम कही है ॥ ५० ॥

अस्यातिलक ॥

वा शब्दते पछिलो संयोग प्रकाशितहै ॥

अथ शब्दशक्ति वस्तुते वस्तु व्यंग्य—यथा ॥

दोहा—जोहि सुमनहि तू राधिके, लाई करि अनुराग।
सोई तोरत साँवरो, आपुहिं आयो वाग ॥ ५१ ॥

अस्यातिलक ॥

तोरत शब्दते तोसों अशक्त यह शब्दवस्तु व्यंग्य ॥

अथ शब्दशक्तिते अलंकार व्यंग्य वर्णनं ॥

दोहा—जल अखंड घन झँपि मही, बरखत वर्षाकाल।
चली मिलन मनमोहनै, मैनमई ह्वै बाल ॥ ५२ ॥

अस्यतिलक ॥

मैनमई शब्दते मोमनको रूपक होता है ॥

अथ स्वतःसंभवीवस्तुते वस्तुव्यंग्य ॥

दोहा—मंद अमंद गनो न कछु, नँदनंदन व्रजनाह ।
छैलछबीले गैलमें, गहो न मेरी बाँह ॥ ५३ ॥

अस्य तिलक ॥

गैलशब्दते एकांत मिलैगी यह व्यंग्य ॥

अथ स्वतःसंभवीवस्तुतेअलंकार वर्णनम् ॥

दोहा—मनसा वाचा कर्मना, करि कान्हरसों प्रीति ।
पार्वती सीता सती, रीति लई तु जीति ॥ ५४ ॥

अस्यतिलक ॥

कान्हर शब्दते व्यतिरेकालंकार व्यंग्य ॥

अथ स्वतःसंभवीअलंकारते वस्तु वर्णनम् ॥

दोहा—हम तुम तनु द्वै प्राण इक, आजु फुऱ्यो बलबीर ।
लग्यो हिये नख रावरे, मेरे हियमें पीर॥ ५५ ॥

अस्य तिलक ॥

असंगत अलंकारते आजु शब्दते तुमनई स्त्रीविहार कियो
यह नई भावी वस्तु व्यंग्य ॥

अथ स्वतः संभवी अलंकारते अलंकार व्यंग्य ॥

दोहा--लाल तिहारे दृगनको, हाल नवरणो जाइ ॥
सावधान रहिये तऊ, चित वित लेत चुराइ ॥५६॥

अस्यतिलक ॥

रूपक विभावना करिकै चोरते ये अधिकहैं यह व्यतिरेका
लंकार व्यंग्य ॥

अथ कवि प्रौढोक्ति वस्तुते वस्तु व्यंग्य ॥

दोहा—राम तिहारो सुयश जग, कीन्हों सेत इकंक ।

सुरसारि मग आरि अयश सों,कीन्हों भेंट कलंक ५७

अस्यातिलक ॥

सुरसरि मगते यह व्यंजित भयो जो यशको कलंकनछ्वैसक्यो

अथ कवि प्रौढोक्ति वस्तुते अलंकार वर्णनम् ॥

दोहा–कहत मुखागर बातके, रहत बन्यो नाहिं गेहु ।
जरत बाँचि आई ललन, बाँचि पातिही लेहु॥५८॥

अस्य तिलक ॥

जरत शब्दते व्याधि प्रकाशित कियो सँदेशसों मुकुरगइ यह आक्षेपा अलंकारव्यंग्य ॥

अथ कवि प्रौढोक्ति अलंकारते वस्तु व्यंग्य वर्णनम् ॥

दोहा–हरि हरि हरि व्याकुल फिरै, तजि सखीनको संग ।
लखि यह तरल तुरंग दृग, लटकन मुकुत सुरंग ५९॥

अस्यातिलक ॥

सुरंग पदते तदगुणालंकारहै आसक्त ह्वैवो वस्तु व्यंग्यहै ॥
ऐसोई तेरो कामहै यह प्रौढोक्तिअलंकार व्यंग्य ॥

अथ कविप्रौढोक्ति अलंकारते अलंकार व्यंग्य ॥

दोहा–बालविलोचन बालते, रह्यो चंद्र मुख संग ।
विषबगारिवोको सिख्यो, कहो कहाँते ढंग ॥ ६०॥

अस्य तिलक ॥

शशि मुख रूपक ताते विषबगारिवो विषमालंकार व्यंग्य ॥

अथ प्रबंधध्वनि–यथा ॥

दोहा–एकहि शब्द प्रकाशमें, उभय शक्ति न लखाइ ।
अस सुनि होत प्रबंध ध्वनि, कथा प्रसंगहि पाइ६१॥

यथा

दोहा--बाहर काढि करजोरिकै, रविको करो प्रणाम ।
मनईक्षित फल पाइकै, तौ जैवो निजधाम ॥ ६२॥

अस्यातिलक ॥

जब न्हान समयमें गोपिनको वस्त्र लयोहै ता समय कृष्णको वचन ॥

अथ स्वयंलक्षित व्यंग्य वर्णनम् ॥

दोहा--वाही कहे बनैजु विधि, वा सम दूजो नाहिं ।
ताहि स्वयं लक्षित कहै, व्यंग्यसमुझि मनमाहिं६३॥
शब्द वाक्य पदपदहुको, एक देशपद वर्ण ।
होत स्वयं लक्षित तहाँ, समुझै सज्जन कर्ण ॥६४॥

स्वयंलक्षितशब्दवर्णनं कवित्त ॥

पात फूलदातनको दीबेको अरथ धर्म,
काम मोक्षचारोफल मोल ठहरावती ।
देखो दास देव दुर्लभ गति दैकै महा,
पापिनके पापनकी लूटि ऐसी पावती ॥
ल्यावत कहूंते वनजात रूप कोऊ ताको,
जातरूप शैलहीकी साहिबी सजावती ॥
संगतिमें वाणीके कितेक युग बीते देवि,
गंगापै न सौदाकी तरह तोहिं आवती ॥ ६५ ॥

अस्यतिलक ॥

यही वाणीशब्दमें चमत्कार है और नाम सरस्वतीके नहीं लहते ॥

अथ स्वयंलाक्षितवाक्य लक्षणम्—कवित्त ॥

सुनि सुनि मोरनकी सोर चहूं ओरनते,
धुनि धुनि शीश पछिताती पाइ दुखको ।
लुनि लुनि भाल खेत बई विधि वालन्हको,
पुनि पुनि पानि मीडि मारती वपुषको ॥
चुनि चुनि साजती सुमनसेज आली तऊ,
भुनि भुनि जाती अवलोके वाहि रूखको ।
गुनि गुनि बालमको आइबो अजहुँ दूरि,
हुनि हुनि देती विरहानलमें सुखको ॥ ६६ ॥

अस्यतिलक ॥

या कवित्तमें ग्रन्थकर्ताने पुनरुक्तिमें चमत्कार किया है औरमें नही ॥

अथ स्वयंलक्षितपद वर्णनं—सवैया ॥

बार अँध्यारानिमें भटक्यो,
हों निकायो मैं नीठि सुबुद्धिनसों घिरि ।
बूडत आनन पानिपनीर,
पटीरकी आडसों तीर लग्यो तिरि ।
मोमन बावरो योंहीं हुत्यो,
अधरा मधु पानके मूढ छक्यो फिरि ।
दास कहो अब कैसे कढै,
निज चाडसो ठोढीकी गाढ पर्यो गिरि ॥ ६७ ॥

अस्यतिलक ॥

इहां पठीरहीकी आड भली जो बूडतेको काढमिलतु है केसरि रोरी आदि नही भली ॥

अथ स्वयंलक्षितपदविभागवर्णनं ॥

दोहा–हौं गँवारि गाँवहिं वसौं, कैसो नगर कहंत ।
पै जानौं आधीन करि, नागरीनको कंत ॥ ६८ ॥

अस्यतिलक ॥

इहां नागरीन बहु वचनहीं भलो एकवचन नहीं ॥

अथ स्वयंलक्षित रस वर्णनं ॥

दोहा–क्रुद्ध प्रचण्डी चाण्डिका, तक्कत नयन तरेरि ।
मूर्छि मूर्छि भूपरपरे, गव्वररहे जुघेरि ॥ ६९ ॥

अस्यतिलक ॥

यहां रुद्ररसहै उद्धतही वर्ण चाहिये ॥

दोहा–द्वै अविवांक्षित वाच्य अरु, रसव्यंगी इक लेखि ।
शब्दशक्तिद्वै आठ पुनि, अर्थ शक्ति अत्रेखि ७०॥
उभयशक्ति इक जोरि पुनि, तेरहशब्द प्रकाश ।
इक प्रबंध ध्वनि पाँच पुनि, स्वयंलक्षगुरुदास ७१॥
एसब तैंतिस जोरि दश, वक्र आदि पुनि ल्याइ ।
तैंतालीस प्रकाश ध्वनि, दीन्हों मुख्य गनाइ॥७२॥
सब बातन सब भूषणनि, सब शंकरनि मिलाइ ।
गुणि गुणि गणना कीजिये, तौ अनंत वढिजाइ७३॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबू हिंदूपतिविरचितेकाव्यनिर्णये ध्वनिभेदवर्णननामसष्ठोल्लासः ॥ ६ ॥

अथ गुणीभूतलक्षणवर्णनं ॥

दोहा–जा व्यंग्यारथमें कछू, चमत्कार नहिं होइ ।
गुणभूत सो व्यंग्य है, मध्यम काव्यो सोइ ॥ १ ॥

सोरठा–गुणि अगूढ अपरांग, तुल्य प्रधानो स्फुटहि ।
काकुवाच्य सिद्धांग, संदिग्धो अरु सुंदरो ॥ २ ॥
आठो भेद प्रकाश, गुणभूत व्यंग्यहि कहै ।
लगै सुहाई जास, वाच्यार्थहिकी निपुणता ॥ ३ ॥

अथ अगूढ व्यंग्य–यथा ॥

दोहा–अर्थान्तर संक्रमित, अत्यंत तिरस्कृत होइ ।
दास अगूढो व्यंग्यमें, भेद प्रगटहैं दोइ ॥ ४ ॥

यथा ॥

दोहा–गुणवन्तनमें जासु सुत, पहिलो गनोनजाइ ।
पुत्रवती वह मातुतौ, बन्ध्याको ठहराइ ॥ ५ ॥

अस्य तिलक ॥

जाको पुत्र निगुणीहै वहै बंध्याहै यह व्यंग्य सो प्रगटहीहै ॥

अथ अत्यंत तिरस्कृतवाच्यवर्णनं ॥

दोहा–बंधु धंधु अवलोकि तुअ, जानिपरै सब ढंग ।
बसिबिरो यह बसुमती, जैहै तेरे संग ॥ ६ ॥

अस्य तिलक ॥

हेबंधु भलाई करु पृथ्वी काहूके संग नही गई यह व्यंग्यहै

अथ अपरांग–यथा ॥

दोहा–रसवतादि वर्णन किये, रसव्यंजक जे आदि ।
ते सब मध्यमकाव्यहै, गुणी भूत कहि वादि ॥७॥

उपमादिक दृढ करनको, शब्दशक्ति जोहोइ ।
ताहूको अपरांग गान, मध्यम भाषत लोइ ॥ ८ ॥

यथा ॥

दोहा--संगलै सीतहि लक्ष्मणहि, देत कुवल यहि चाउ ।
राजत चंद्र स्वभावसों, श्रीरघुवीर प्रभाउ॥ ९ ॥

अस्य तिलक ॥

यहां उपमालंकार शब्दशक्तिसों दृढ करतेहैं ॥

अथ तुल्य प्रधान लक्षण वर्णनम् ॥

दोहा--चमत्कार में व्यंग्य अरु, वाच्य बराबरि होइ ।
वाही तुल्य प्रधानहै, कहै सुमति सबकोइ ॥ १० ॥

यथा ॥

दोहा--मानो शिरधारि लंकपति, श्रीभृगुपतिकी बात ।
तुमकरिहो तो कराहिंगे, वोऊ द्विज उत्पात ॥ ११॥

अस्य तिलक ॥

व्यंग्य यह कि तुमहूं द्विजहो परशुराम मारहिंगे सो वाच्यकी बराबरी है ॥

यथा--कवित्त ॥

आभरन साजि बैठो ऐंठो जनि भौंहैं लखि,
लालन कहैगो प्यारी कला जैसी चन्द्रकी ।
सुंदरि शृंगारन बनाइबेके व्योंतमें,
तिलोत्तमैसी ठहरैहों सोहैं सुखकंदकी ॥
दास बर आनन उदास मंजु देखिकै,
कहैही जो कमल सोहै पाणी नँदनंदकी ॥

योंही परखति जाति उपमाकीपंगतिहो,
संगति अजहुँ तजो मान मतिमंदकी ॥ १२ ॥

अस्य तिलक ॥

मानछोडाइवो वाच्यस्यभाववर्णिवो व्यंग्य दोऊ प्रधान हैं ॥

अथस्फुट ॥

दोहा--जाको व्यंग्य कहे विना, व्यंग्य न आवै चित्त ।
जो आवै तो सरलही, स्फुट सोई मित्त ॥ १३ ॥

यथा–कवित्त ॥

देखे दुरजनसंक गुरजन संकानि सों
हियो, अकुलात दृगहोति न तुषित है ।
अनदेखे होती मुसुकानि वतरानि मृदु,
वाणि ये तिहारी दुखिदानि विमुखित है ।
दास धनितेहैं जे वियोगहीमें दुख पावैं,
देखो प्राण पीको होति जियमें सुखितहै ।
हमैंतो तिहारे नेह एकहू न सुख लाहु,
देखेहु दुखित अनदेखेहु दुखितहै ॥ १४ ॥

अस्य तिलक ॥

यह नायका निशंक जगह मिलवेकी विनय करती है ॥

अथकाक्षिप्तव्यंग्यवर्णनं ॥

दोहा--सहीवातते काहुको, जहाँ नहीं करिजाइ ।
काक्क्षिप्त सो व्यंग्यहै, जानिलेउ कविराइ ॥१५॥

यथा ॥

दोहा--जहाँ मनरमै रैनि दिन, तहीं रहो करि भौन ।

इन बातन पर प्राणपति, मान ठानती हौन ॥ १६ ॥

अस्य तिलक ॥

मान कियेही है वहिकिबो काकुहै ।

अथ वाच्यसिद्धांग लक्षण ॥

दोहा–जालगि कीजत व्यंग्यसो, बातहिमें ठहरात ।
कहत वाच्य सिद्धांगको, अर्थ सुमति अवदात१७

यथा ॥

दोहा–वर्षाकाल नलाल गृह, गौन करौं केहिहेतु ।
व्यालबलाहक विष बरषि,विरहिनको जियलेतु१८

अस्यतिलक ॥

विष जलहूको कहिये पै व्यालहूको कह्योहै ताते वाच्य सिद्धांगहै

यथा ॥

दोहा–श्यामसंक पंकज मुखी, जकै निरखिनिशिरंग ॥
चौंकि भजै निजछाँह ताकि,तजै न गुरुजन संग१९

अस्यतिलक ॥

श्यामताकी संका व्यंजित होतहै सो नायककी संका छोडिकै प्रयोजनही नायक पर वाच्य सिद्धांग व्यंग है ॥

अथसंदिग्धलक्षणवर्णनम् ॥

दोहा–होइ अर्थ संदेहमें, पै नहिं कोऊ दुष्ट ।
सो संदिग्ध प्रधानहै, व्यंग्यकहै कविपुष्ट २० ॥

यथा ॥

दोहा–जैसे चंद्र निहारिकै, इकटक तकत चकोर ।
त्यों मनमोहन तकि रहे, तियबिंबाधर वोर २१॥

अस्यातिलक ॥

शोभा वर्णन चूमिवेको अभिलाष दोऊ संदेह प्रधानहैं ॥

अथ असुंदर वर्णनम् ॥

दोहा-व्यंग्यकढे बहु तकनपै, वाच्य अर्थ संचार ।
ताहि असुंदर कहत कवि, करिकै हिये विचार२२॥

यथा ॥

दोहा-विहगसोर सुनि सुनि समुझि, पछवारेकी बाग ।
जातपरी पियरी खरी, प्रिया भरी अनुराग॥२३॥

अस्यातिलक ॥

नायकको सहेट वदि राख्यो सो आयोहै यह व्यंग्यकढी सो वाच्यार्थही है ताते चारु नहीं ॥

दोहा--यही विधि मध्यमकाव्यको, जानिलेहु व्यवहार ।
तितनेही सबभेदहैं, जितने ध्वनि विस्तार ॥२४॥

अथ और काव्य ॥

दोहा-वचनारथ रचना जहाँ, व्यंग्य ननेकु लखाइ ।
सरल जानि तेहि काव्यको, और कहै कविराइ२५॥

अथ और काव्य ॥

दोहा--और काव्यहूमें करै, कविसुघराई मित्र ।
मनरोचक करि देतहै, वचन अर्थको चित्र॥२६ ॥

अथ वाच्यचित्र कवित्त ॥

चंद्र चतुरानन चखनके चकोरनके,
चंचरीक चंडिपति चित्त चोप कारिये ।
चहूंचक्र चारोंयुग चरचा चिरानी चले,

दास चारो फलद चपल भुज चारिये ॥
चोपदीजै चारु चरणन चित चाहिवेकी,
चेरनिको चेरो चीन्हि चूकन्ह नेवारिये ।
चक्रधर चक्कवै चिरैयाकै चढैयाचिंता,
चूहरीको चित्तते चपल चूरि डारिये ॥ २७ ॥

अथ चित्रवर्णन सवैया ॥

नीर बहाइकै नैन दोऊ मलिनाईकी खेह करै सनि गारो ॥
बातैं कठोर लुगाई करै अपनी अपनी दिशि ढेलसों डारो ॥
दासको ईश कर नमैन जहँ बैरी मनोजहु कूमतिवारो ॥
छातीके ऊपर व्याधिको भौन उठावतो राज सनेहतिहारो ॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंश श्रीमन्महाराजकुमारबाबूहिंदूपति विरचितेकाव्यनिर्णयेगुणीभूतादि वर्णनन्नाम सप्तमोल्लासः ॥

दोहा--अलंकार रचना बहुरि,करों सहित बिस्तार ।
एक एक पर होत जे, भेद अनेक प्रकार ॥ १ ॥
कवि सुघराईको कहै, प्रतिभा सब कविराइ ।
तेहि प्रतिभाको होतुहै, तीनि प्रकार स्वभाइ ॥ २ ॥

अस्य तिलक ॥

ओ प्रतिभा जो है तिसको ग्रन्थकर्ता तीन प्रकारको कहा, एक प्रतिभा शब्द शक्तिसे होतीहै, दूसरीप्रतिभा कवि प्रौढोक्ति करिकै होती है, तीसरी प्रतिभा स्वतःसम्भवी जानिये ॥

दोहा--शब्द शक्ति प्रौढोक्ति अरु, स्वतःसंभवी चार ।
अलंकार छबि पावतो, कीन्हों त्रिविधप्रकार ॥ ३ ॥

छंदभरेमें येकही, भूषणको विस्तार ।
करो घनेरो धर्म मणि, कै माला सजिचार ॥ ४ ॥
और हेतु नहिं केवलै, अलंकार निर्वाहु ।
कवि पंडित गानि लेतहैं, और काव्यमें ताहु ॥ ५॥
रुचिर हेतु रसको बहुरि, अलंकार युतहोइ ।
चमत्कार गुणयुक्त है, उत्तम कविता सोइ ॥ ६ ॥

अपरमध्यमकाव्य ॥

दोहा--अलंकार रस बात गुण, ये तीनों दृढ जाहि ॥
और व्यंग्य कछु नाहिं तौ,मध्यम कहिये ताहि ॥ ७ ॥

छप्पय ॥

उपमा पूरण अर्थ लुप्त उपमा न अनन्वय ।
उपमेयोपम अरु प्रतीपश्रोत्री उपमाचय ॥
पुनि दृष्टांतबखानि जानि अर्थान्तर न्यासहि ।
विकस्वरो निदर्शना तुल्य योग्यता प्रकाशहि ॥
गनि लेहु सुप्रति वस्तूपना, अलंकार बारहाविदित।
उपमान और उपमेयको है बिकार समुझो सुचित॥

अथ उपमालक्षणं ॥

दोहा--जहँ उपमा उपमेयहै, सो उपमा विस्तार ।
होत आरथी श्रोत्रियो, ताको दोइ प्रकार ॥ ९ ॥
वर्णनीय उपमेयहै, समता उपमा जानि ।
जो है आई आदिते, सो आरथी बखानि॥ १० ॥

अथ आरथीउपमा-यथा ॥

दोहा--समतासम वाचक धरम, वर्णचारि इकठौर।
शशिसों निर्मल मुख यथा, पूरण उपमागौर ॥११॥

अस्य तिलक ॥

यहां शशि उपमानसा वाचक निर्मल धर्म मुख उपमेय ये चारों जहां रहैं तिनको पूर्णोपमा कहिये ॥

शशि समतासों सम वचन, निर्मलताहै धर्म।
वर्णि सुमुख इहि भाँतिसों, जानो चारो मर्म॥१२॥

तिलक ॥

पूर्णोपमा बहुधर्मते ॥

यथा ॥

दोहा-संपूरण उज्ज्वल उदित, शीत करन अँखियान।
दास सुखद मनको प्रिया, आनन चन्द्रसमान।१३।

यथा-कवित्त ॥

कढिक निशंक पैठि जाती झुण्ड झुण्डनमें,
लोगनको देखि दास आनँद पगतिहै।
दौरि दौरि जहीं तहीं लाल करि डारतिहै,
अंग लगि कंठलागिवेको उमगति है ॥
चमक झमक वारी ठमक जमकवारी,
रमक तमकवारी जाहिर जगतिहै।
राम असरावरोकी रणमें नरनमें,
निलज्ज वनितासी होरी खेलन लगतिहै ॥ १४ ॥

तिलक ॥

पूर्णोपमाका माला ॥

अथपूर्णोपमा लक्षणं ॥

दोहा—कहुँ अनेककी एकहै, कहुँ एककी अनेक।
कहूँ अनेक अनेककी, मालोपमा विवेक ॥ १५ ॥

अथअनेककोएक—यथा ॥

दोहा—नैन कंजदलसे बडे, मुख प्रफुलित ज्यों कंजु।
कर पद कोमल कंजसों, हियो कंज सों मंजु ॥ १६ ॥

अथ एककी अनेक—यथा ॥

दोहा—जहँ एककी अनेक तहँ, भिन्नधर्मते कोइ।
कहूं एकही धर्मते, पूरण माला होइ ॥ १७ ॥

अथ भिन्नधर्मकी मालोपमा—यथा ॥

दोहा—मर्कतसे दुतिवंतहै, रेसमसे मृदुवाम।
चिक्कन महिन मुरारि से, कचकाजरसे श्याम ॥ १८ ॥

अथ एक धर्मते मालोपमा—सवैया ॥

शारद नारद पारद अंगसी क्षीर तरंगसी गंगकी धारसी ॥ शंकर शैलसी चंद्रिका फेलसी सार सरेलसी हंसकुमारसी ॥ दास प्रकाश हिमाद्रिबिलाससी कुंदसी काशसी मुक्ति भंडारसी ॥ कीरति हिंदूनरेशकी राजति उज्ज्वल चारु चमेलीकी हारसी ॥ १९ ॥

अथ अनेक अनेककी मालोपमा वर्णनम्—सवैया ॥

पंकजसे पगलाल नवेलीके केदलीखंभसी जानु सुढारहै ॥ चारिके अंकसी लंक लगी तनु कंजकलीसे उरोज प्रकारहै

पल्लवसे मृदुपाणि जपाके प्रसूननिसे अधरा सुकुमारहै ॥
चंद्रसों निर्मल आनन दासजू मेचक चारुसे वारसेवारहै ॥

अथ लुप्तोपमा—यथा ॥

दोहा--समतादिक जे चारिहैं, तिनमें लुप्त निहारि ।
एक दोइके तीनितो, लुप्तोपमा विचारि ॥ २१ ॥

धर्मलुप्तोपमा—यथा ॥

दोहा--देखि कंजसे बदनपर, दृगखंजनसे दास ।
पायो कंचन बेलिसी, बनिता संग विलास ॥ २२ ॥

अस्य तिलक ॥

यामें काव्यलिंगको शंकरहै ॥

अथ उपमालुप्त वर्णनम् ॥

दोहा--सुवश करन बर जोर सखि, चपल चित्तको चौर ।
सुंदर नंदकिशोरसे, जगमें मिलै न और ॥ २३ ॥

अथ वाचकलुप्त वर्णनं ॥

दोहा--अमल सजल घनश्याम तनु, तडित पीतपट चारु ।
चंद्र विमल मुखहरि निरखि,कुलकी काहि सँभारु२४

अथ उपमेयलुप्त वर्णनं ॥

दोहा--जपापुहुपसे अरुणमें, मुकुतावलिसे स्वच्छ ।
मधुर सुधासी कढतहैं, तिनते दास प्रत्यक्ष ॥२५॥

अथ वाचक धर्मलुप्त वर्णनं ॥

दोहा--लखि लखि सखि सारस नयन,इंदु वदन घनश्याम ।
बिज्जु हास दारचो दशन,विम्बाधर अभिराम२६॥

अथ वाचक उपमान लुप्त वर्णनं ॥

दोहा--हिय सियरावै बदन छवि, रस दरशावै केश ॥
परमघाय चितवनकरै, सुंदरि यही अँदेश ॥ २७ ॥

उपमेयधर्म लुप्ता वर्णनं ॥ कवित्त ॥

मग्गु डारत ईंगुर पांवडेसे सुमनासों बगारत आइ गई।
जियरेमें ठगौरीसी दैकै भली हियरेबिच होरीसी लाइगई ॥
नहिं जानिये कोही कहांकीहै दासजू धन्य हिरण्यलतासीनई
शशिसों दरशाइ सरेसो लगाइसुधासोंसुनाइकै जात भई२८

अथ उपमेय वाचक धर्मलुप्ता वर्णनं ॥

दोहा--तिहूं लुपते वोरहै, केवलही उपमान।
ताहीको रूपातिशय, उक्ति कहैं मतिमान॥ २९ ॥

यथा ॥

दोहा--नभ ऊपर सर वीच युत, कहा कहौं ब्रजराज।
तापर बैठो मैं लख्यो, चक्रवाक द्वै आज ॥ ३० ॥

अथ अनन्वय उपमेय उपमा लक्षणम् ॥

दोहा--जाकी समता जाहिको, कहत अनन्वय भेव।
उपमा दोऊ दुहूंकी, सो उपमा उपमेव ॥ ३१ ॥

अथ उपमा उपमेय--यथा ॥

दोहा--तरल नयन तुअ कचनसे, श्याम तामरस तार ॥
श्याम तामरस तारसे, तेरे कच सुकुमार ॥ ३२॥

अनन्वय ॥

दोहा-मिली न और प्रभारती, करी भारती दोर।
सुन्दर नंदकिशोरसे, सुन्दर नंदकिशोर ॥ ३३ ॥

अस्य तिलक॥

जहां जिसवस्तुको वर्णन करै तहां उस वस्तुको उसीके समान उसीको वर्णनकरै तहां उपमा उपमेय अलंकार होताहै—जैसे रामके समान रामहीहैं शिवके समान शिवही हैं इत्यर्थ॥

उपमान उपमेय॥

दोहा—तरल नैन तुव कचनसे, श्यामताम रसतार॥
श्याम ताम रस तारसे, तेरे कच सुकुमार॥

अस्य तिलक॥

उपमान उपमेय अलंकार उसको कहतेहैं वह वस्तुसे वह वस्तु शोभापावै जैसे रैनि मिलेसे चन्द्रमा शोभा पाताहै, तैसेही चन्द्रमा से रैनि शोभाको प्राप्त होती है॥

अथ प्रतीप प्रतीपाकार पांच प्रकारका वर्णनम्॥

दोहा—सो प्रतीप उपमेयको, कीजै जब उपमान॥
कै काहूविधि वर्णको, करै अनादरठान॥ २४॥

अथ उपमेयको उपमान यथा॥

दोहा—लख्यो गुलाब प्रसूनमें, मैंमदछक्यो मलिंदु।
जैसो तेरो चिबुक में, ललिता लीलाबिंदु॥ २५॥
छुटे सदा गति सँग लसैं, पानिप भरे अमान॥
श्यामघटा सोहै अली, सुन्दरि कचन समान॥२६॥

अनादरवर्ण्य प्रतीपवर्णनं—कवित्त॥

विद्या बरबानी दमयंतीकी सयानी मंजु,
घोषा मधुराई प्रीतिरतिकी मिलाईमैं।
चख चित्ररेखाके तिलोत्तमाके तिलले,

सुकेशीके सुकेश शची साहिबी सुहाईमें ॥
इंदिरा उदारता औ माद्रीकी मनोहराई,
दास इंदुमतीकी लै सुकुमारताई मैं ॥
राधाके गुमानमें समान बनितानताके,
ह्वेत याबिधान एक ठान ठहराईमें ॥ ३७ ॥

यथा ॥

दोहा–महाराज रघुराजजू, काज कहा गुमान ।
दण्डकोशदलके धनी, सरसिज तुम्हैं समान॥३८॥

अथ प्रतीपको लक्षण ॥

दोहा–उपमाको जु अनादरै, वर्ण आदरै देखि ॥
समता देइ न नामलै, तऊ प्रतीपै लेखि ॥ ३९ ॥

अथ उपमाको अनादर–यथा ॥

दोहा–बागलता मिलि लेहि किन, भौंरन प्रेम समेत ।
आवति पाद्मिनि ग्रामढिग, फिरि न लहैगी सेत४०॥

समतानदीबो–यथा ॥

दोहा–द्विजगणको आशनबडो, देवनको तियप्रान ।
ता रघुपति आगे कहै, सुरतरु करे गुमान ॥४१ ॥

यथा–कवित्त ॥

अलकपै अलिवृन्द भालपै अरधचंद्र,
भ्रुपैधनु नैननपै वारों कंजदलमें ।
नाशा कारि मुकुर कपोल बिम्ब अधरन,
दारों वारों दशनन ठोढी अम्बफलमें ॥
कम्बुकंठ भुजन मृणालदास कुच कोक,

त्रिबली तरंग वारों भौंर नाभि थलमें ॥
अचल नितम्बनपै जंघानि कदलि खंभ,
वालपगतलवारों लाल मखमलमें ॥ ४२ ॥

यथा ॥

दोहा–सही सरस चंचल बडे, मढे रसीली वास।
पै नादिरेफन इन दृगन, सारिस कहौ मैं दास ॥४३॥

पुनःप्रतीपलक्षणं ॥

दोहा–जहँ कीजत उपमेय लखि, उपमा व्यर्थ विचार।
ताहू कहत प्रतीपहैं, यह पाँचयों प्रकार ॥ ४४ ॥

यथा ॥

दोहा–जहाँ त्रिया आनन उदित, निशि वासर सानंद।
तहाँ कहा अर्बिंदहै, कहा वापुरो चंद ॥ ४५ ॥
प्रभाकरन तमगुनहरन, धरन सहसकर राज।
तुव प्रतापहीजगतमें, कहा भानुको काज ॥ ४६ ॥

इति आर्थी उपमा ॥ अथ श्रोती उपमालक्षणं ॥

दोहा–धर्म सहज श्लेष लखि, सुकवि सुरुचिकहि देइ।
श्रोती उपमा पूरणै, सुनै सुमति चितलेइ ॥ ४७ ॥

यथा ॥

दोहा–बुध अगुणो गुण संग्रहै, खोलै सहित विचार।
ज्यों हरगर गोये गरल,प्रगटै शशिहिं लिलार॥४८॥

श्लेषधर्म ॥

ज्यों अहिमुख विष सीप मुख, मुकुतस्वातिजलहोइ ॥
विगरत कुमुख सुमुख बनत, त्योहीं अक्षर दोय ॥ ४९ ॥

यथा—सवैया ॥

ऊपरहीं अनुरागलपेटते अंतरको रंगहै कछु न्यारो ॥
क्योंनातिन्हैं करतार करै हरुवो अरु गुंजनिलौं मुहुँकारो ॥
भीतर बाहिरेहूं यह दास वही रंग दूजोको नाहिं सचारो ॥
ते गुणवन्त गरूहै करैं नित मूँग ज्यों मोतिन संगविहारो॥

अथ मालोपमा एक धर्मते—कवित्त ॥

दास फनि मनिसों ज्यों पंकज तरनिसों ज्यों,
तामसी रजनिसों ज्यों चोर उमहतहै ।
मोर जलधरसों चकोर हिमकरसों ज्यों,
भौंर इंदीबरसों ज्यों कोविदकहतहै ॥
कोकिल बसंतसों ज्यों कामिनी सुकंतसों ज्यों,
संत भगवंतसों ज्यों नेमही गहतहै ।
भिक्षुक भुआलसों ज्यों मीन जलमालसों ज्यों,
नैन नँदलालसों ज्यों चापनि बहतहै ॥ ८१ ॥

मालोपमा अनेक धर्मते यथा—सवैया ॥

मित्र ज्यों नेहनिवाहकरै कुल नारिनि ज्योंपरलोकसुधारिनि।
संपति दान सुसाहिब सोंगुरुलोगनि ज्योंगुरुज्ञान पसारिनि।
दासजूभ्रातनिज्योंबलदाइनिमातानिज्योंबहुदुःखनिवारिनि।
याजगमें बुधिवंतनिको बरविद्या बडीपितु ज्योंहितकारिनि

अथ मालोपमाश्लेषते—कवित्त ॥

चंद्रकी कलासी शीत करनि हियेकी गुनि,

पानिपकलित मुकुताहलके हारसी ॥
वेनीबर विलसै प्रयाग भूमि ऐसीहै,
अमल छबि छाजि रही जैसे कछू आरसी ॥
दासनित देखिये शचीसी संग उरवशी,
कामद अनूपकल्प द्रुमनके डारसी ॥
सरस शृंगार सुबरन बर भूषनसी,
वनिताकी फविताहै कविता उदारसी ॥ ५३ ॥

अथ दृष्टांतालंकार वर्णनं ॥

दोहा–लखी बिम्ब प्रतिबिम्ब गति,उपमेयो उपमान ।
लुप्त शब्द वाचक किये, है दृष्टांत सुजान ॥ ५४ ॥
साधर्मो बेधर्मसो, कहुँ वैसोई धर्म ।
कहूं दूसरी बातते, जानिपरै सोइ मर्म ॥ ५५ ॥

उदाहरण साधर्म दृष्टांतको ॥

दोहा–कान्हर कृपा कटाक्षकी, करै कामना दास ।
चातक चितमें चेतती, स्वाति बूंदकी आस ॥५६॥

यथा–सवया ॥

औरसों केतऊबाल हँसै पर प्रीतमकी तू पियारी है प्रानकी।
केती चुनै चिनगीको चकोरपै चोपहै केवल चंदछटानकी
जौलों नतू तबहींलों अलीगतिदासकैइशपैऔरतियानकी ॥
भास तरैयनमेंतबलों जबलोंप्रगटै न प्रभा जगभानकी५७॥

अथ मालायथा–सवैया ॥

अरविंद प्रफुल्लित देखिकै भार अचानक जाइ अरैपै अरै॥

बनमाल थली लखिकै मृगसावक दौरि बिहार करैपैकरै ॥
सरसी ढिग पाइकै व्याकुल मीन हुलाससों कूदि परैपैपरै ।
अवलोकि गुपालको दासजूए अँखियाँ ताजि लाजढरै पैढरै॥

वैधर्म दृष्टांत ॥

दोहा–जीवन लाभ हमैं लखै, लाल तिहारी कांति ।
बिना श्याम घन छन प्रभा,प्रभा लहै किहि भाँति५९

अर्थान्तरन्यासलक्षण ॥

दोहा–साधारण कहिये वचन, कछु अवलोकि सुभाय ।
ताको पुनि दृढ कीजिये,प्रगट विशेषि बताय ६० ॥
कै विशेषही दृढकरौं, साधारण कहि दास ।
साधर्महुँ वेधर्मते, है अर्थान्तर न्यास ॥ ६१ ॥

साधर्म साधारणअर्थान्तरन्याससामान्यकी दृढता विशेषसों ॥

दोहा–जाको जासों होइ हित, वहै भलो तिहि दास ।
जगतज्वालमें जेठही, जीसों चहै जवास ॥ ६२ ॥
बरजतहू याचक जुरै, दानवंतकी ठार ।
करी करन झारतरहै, तऊ भ्रमतहै भौंर ॥
जीवत लाभ हमैं लखे, लालतिहारी कांति ।
विना श्याम घनछन प्रभा, प्रभालहै केहि भांति ॥

मालायथा–सवैया ॥

धूरि चढै नभ पौनप्रसंगते कीच भई जल संगति पाई ॥
फूल मिलै नृपपै पहुँचै क्रमि काठनिसंग अनेक व्यथाई ॥

चंदन संग कुदारु सुगंधहै नींब प्रसंग लहै करुआई ॥
दासजु देखो सही सबठौरन संगतिको गुण दोषनजाई६४।

वैधर्म--यथा ॥

दोहा–जाको जासों होइ हित, वहै भलो हितदास ।
सावन जग ज्यावन गुनो कालै करै जवास ॥६५॥

मालायथा--कवित्त ॥

पंडित पंडित सों सुख मण्डित सायर सायरके मनमानै ॥
संतहि संत अनंत भलो गुणवंतनको गुणवंत बखानै ॥
जापहँ जाकहँ हेतु नहीं कहिये सुकहा तिहिकी गतिजानै॥
सूरको सूर सतीकोसती अरुदासयतीको यती पहिचानै६६

अस्यतिलक ॥

पंडितसों पंडितोंसे आनंद होताहै शायरसों शायरको आनंद होताहै संतसे संतको हर्ष होताहै गुणवंतसे गुणवंतको हर्ष होताहै और जैसे सूरको सूरसे आनंदहोताहै सतीको सतीसे आनंद होताहै तैसेही जेहिसे जेहिको संबंध नहींहै उससे उसको क्या आनंद होगा जैसे पंडित और मूर्ख वेश्या और संत ॥

विशेषककीदृढता सामान्यकी साधर्म ॥

दोहा--कैसे फूले देखियत, प्रातकमलकी ज्योत ।
दास मित्र उद्योत लखि, सबै प्रफुल्लित होत ॥६७॥

वैधर्म--यथा ॥

दोहा--मूढ कहां गत हानिकी, सोच करत मलि हाथ ।
आदि अंत भारि इंदिरा, रही कौनके साथ ॥ ६८॥

तिलक ॥

हे मूर्ख ! तुम क्यों सोच करतेहो यह संसारमें जो पुरुष जन्म लेतेहैं, धनवान होतेहै, उनके पास आदि अंतभरि लक्ष्मी नहीं रहती अतएव सोचकरना अनुचितहै ॥

अथविकेश्वरालंकारवर्णनं ॥

दोहा--कहि विशेष सामान्य पुनि, कहिये बहुरि विशेष ।
ताहि बिकेश्वर कहतहैं, जिनके बुद्धि अशेष॥ ६९

सवैया ॥

देती सुकीया तू पीको सुखै निजकेतीबगारतहीमतिमैली॥
दासजू अवगुणहै जिनमें तिनहीकी रहै जगकीरतिफैली ॥
बातसही विध कीन्हो भलोतिहि यौंहीभलाइनसोंनिरमैली
काटिअँगारनमें गढिगारहूंदेतिसुबासता चंदनचैली॥७०॥

निदर्शनालंकारलक्षणम् ।

दोहा-सम अनेक वाक्यार्थको, एक कहै धरिटेक ।
एकै पदके अर्थको, थापै यह वह एक ॥ ७१ ॥
एक क्रियाते देत जहँ, दूजी क्रिया लखाइ ॥
सत असतहुको कहतहैं, निदर्शना कविराय॥७२॥

वाक्यार्थकी एकता सतसतकी जानिये--सवैया ॥

तीरथतो मनहाननि कै बहुदाननिदै तपपुंज तपैतू ।
जोमुकै सामुहै जंगजुरे हठहोमकै शीश धरै अरिपैतू ॥
दासजू वेद पुराणनको करि कण्ठ मुखागर नित्यलपैतू ।
द्यौस तमाममै जो इक यामहूंरामको नामनिकामजपैतू७३

वाक्यार्थअसतकी ऐक्यता–कवित्त ॥

प्राण विहीनके पाँइपै लोट्यो अकेले ह्वै जाय घने बन रोयो।
आरसी अंधके आगे धस्यो बहिरेसों मतो करि उत्तर जोयो॥
ऊसरमें बरस्यो बहुबारि पषाणके ऊपर पंकज बोयो।
दास वृथा जिन साहब सूमके सेवनमें अपनो दिन खोयो॥

वाक्यार्थ असतसतकी ऐक्यता कवित्त ॥

जोगुनू भानुके आगे भलीविधि आपनीज्योतिनकोगुनगैहै।
माखियो जाय खगाधिपसों उडिबेकी बडीबड़ीबातचलैहै॥
दास जुवै तुक जोरिनहारि कवींद्र उदारनिकी सरि पैहै।
तौकरतारहूसोंऔकुम्हारसों एकदिनाझगरो बनिऐहै॥७८॥

अस्य तिलक ॥

जुगनू जो है सो मार्तंडके सामने ज्योतिकीप्रशंशाकरैगा मा-
खी जो है सो गरुडके सामने अपने उडिबेकी प्रशंसा करैगी। तुक
जोरनेवाले जितने हैं सो कवियोंके सामने प्रशंसाकरैंगे अपने
बनानेकी तौ हे भाई करतार जो ब्रह्माहै औ कुम्हार जोहै सो
इनमें तकरार होगी ॥

सवैया ॥

पूरबते फिरि पश्चिम ओर कियो सुर आपगा धारन चाहै।
तूलन तोपिकै ह्वै मतिअंध हुताशन धंध प्रहारन चाहै॥
दासजूदेख्योकलानिधिकालिमाछूरिनिसोंछिलिडारनचाहै।
नीति सुनाइके मोहियतेनँदलालको नेहनिवाहनचाहै।७९॥

पदार्थकी ऐक्यता–यथा ॥

दोहा–इन दिवसन मनभावती, ठहरायो सविवेक।

सूर शशी कंटक कुसुम, गरल गंध वह एक॥७७॥

कवित्त ॥

बाल मृणाल सुढाल कराकृति भावतेजूकी भुजानमें देख्यो।
आरसी सारसी सूरशशी द्युतिआननआनँदखानिमें देख्यो॥
मैमृगमीनममोलनकीछबिदासउन्हींअँखिआनिमें देख्यो ।
जोरस ऊषमयूषपीयूषमेंसो हरिकी बतियानिमेंदेख्यो७८॥

एक क्रियाते दूसरी क्रियाकी ऐक्यता ॥

दोहा—तजि आशा तनु प्रानकी, दीपहि मिलत पतंग ।
दरशावत सब नरनको, परमप्रेमको ढंग ॥ ७९ ॥

तिलक ॥

पतंग अपने प्राणकी आशाको तजिकै दीपमें जरि जाती है सो सबनरनको प्रेमका प्रकाश दिखाती है ॥

दोहा—पद्मिनि उरजनि परलसत,मुकुतमाल युत ज्योति ।
समुझावत यों सुथलगति,मुक्त नरनकी होति ॥८०॥

अथ तुल्य योग्यतालंकार वर्णनम् ॥

दोहा--समवस्तुनिगनि बोलिये, एक बारहीं धर्म ।
समफल प्रदहित अहितको, काहूको यह कर्म ॥ ८१॥
जा जा सम जेहि कहनको, वहै वहै कहि ताहि ।
तुल्य योग्यता भूषनहि, त्रयविधि देहु निवाहि ॥८२॥

यथा ॥

सम वस्तुनको एक वार धर्म ॥

दोहा--सांझ भोर निशि बासरहुँ, क्योंहूं क्षीणनहोति ।
शीत किरिनिकी कालिमा,बालबदन छबि ज्योति८३॥

यथा–सवैया॥

थाह न पैये गंभीर बडेहैं सदाही रहैं परिपूरणपानी॥
एके विलोकिकै श्रीयुतदासजू होत उमाहिलमें उनमानी॥
आदि वही मर्याद लियेरहे है जिनकी महिमा जगजानी॥
काहूको क्योंहू घटाये घटैनहीं सागर औ गुणआगरप्रानी॥

भावार्थ॥

विशेष क्यालिखूं सागर जोहै औ गुणआगर प्राणी है तिनकी महिमा किसीके घटाये कमती नहीं होती॥

हिताहितको समफल यथा–सवैया॥

जे तट पूजनको विसतारें पखारें जे अंगनकी मलिनाई॥
जो तुअ जीवन लेतहै जीवन देतहै जेकरि आप ढिठाई॥
दास नपापी सुरापी तपी अरु जापीहितू अहितूविलगाई॥
गंगतिहारी तरंगनसों सब पावै पुरंदरकी प्रभुताई॥८५॥

दोहा–जो सींचै सर्पिख सिता, अरु जो हनै कुठाल।
कटु लागै तिन दुहुँनको, वहै नींबकी छाल॥८६॥

अथ समताकामुख्यहा कहिवो॥

दोहा–सोवत जागत सुख दुखद, सोई नन्दकिशोर।
सोइ व्याधि वैदो सोई, सोइ साहु सोइ चोर॥८७॥
जाइ जोहारे कौनको, कहां कहूहै काम॥
मित्र मातु पितु बधु गुरु, साहब मेरो राम॥८८॥

यथा–कवित्त ॥

गुम्बज मनोजके महलके सोहाये स्वच्छ,
गुच्छ छवि छाये गज कुंभ गजगामिनी ।
उलटे नगारे तने तम्बू शैल भारे मठ,
मंजुल सुधारे चक्रवाक गाति यामिनी ॥
दास युग शंभुरूप श्रीफल अनूप मन,
घावरे करन घावरन किलकामिनी ॥
कंदुक कलस बडे संपुट सरस मुकु--लित-
तामरसहै उरज तेरे भामिनी ॥ ८९ ॥

अस्यातिलक ॥

यामें लुप्तोपमाको संदेह शंकर है ॥

अथ प्रतिवस्तुउपमा अलंकारवर्णनम् ॥

दोहा--नाम जुहै उपमेयको, सोई उपमा नाम ।
ताही प्राति वस्तूपमा, कहत सकल गुणधाम ९०॥
जहँ उपमा उपमेयको, नाम अर्थहै एक ।
ताहूप्रति वस्तूपमा, कहैं सुबुद्धि विवेक ॥ ९१ ॥

यथा–सवैया ॥

मुक्तनरोघने जामें विराजत रात सितासितभ्राजतऐनी ॥
मध्यसुदेशतेहैं ब्रह्मांडलों लोग कहै सुरलोक निशैनी ॥
पावन पानिप सों परिपूरण देखत दाहि दुखै सुखदैनी ॥
दास भरै हरिके मन कामकोबीसाविश्वेयहवेनीसीवेनी ९२॥

दोहा--नारी छूटि गये जुभौं, मोहनकी गति सोइ ।

नारिनछूटिगये जुगति, और नरनकी होइ ॥ ९३ ॥

अस्य तिलक ॥

नारीनाम स्त्रीके छूटेते मोहन जो कृष्णचन्द्र हैं तिनकी गति ऐसी होतीहै कि जैसे हाथकी जो नाडी है इसके छूटेते जैसे मनुष्यकी गति होतीहै वैसीही उनकी होती है तात्पर्य विह्वल होजाते हैं ॥

दोहा—लालविलोचन अधखुले, आरस संयुत प्रात ।
निंदत अरुण प्रभावको, विकसत सारसपात॥९४॥
जहां बिम्ब प्रतिबिम्ब नहिं, धर्महिंते सम ठान ।
प्रतिवस्तुपमा तिहि कहैं, दृष्टांतहिमें जान ॥ ९५॥

यथा– सवैया ॥

कौन अंचभो जो पावक जारै गरू गिरिहै तो कहाअधिकाई।
सिंधुतरंग सदैव खराइ नईकछु सिंधुर अंग कराई ॥
मीठो पियूष करू विष रीतिये दासजू यामें न निन्दा बडाई।
भार चलाइहि आये धुरी नभलेनको अंग सुभावैभलाई९६

अस्य तिलक ॥

भलेका अंग जो है सौ स्वभावहीसे जानपडता है जैसे अग्नि जोहै सो कोई वस्तुको जारडारै तिसमें आश्चर्य क्या है इसका तौ ऐसा स्वभावही है और बडा गुरु जो वस्तु है वह गिर पडै इसमें क्या अयोग्य है इसका तो यही धर्म है गरू है और रत्नाकरका जल खाराहै तिसमें क्या असंभवहै और पियूष जो अमृतहै सो जो मीठाहै तिसमें क्या आश्चर्य और विष जो है सो

कडुआहै तिसमें क्या आश्चर्य है तैसे मैं कहताहूं भले पुरुष जो हैं तिनका ऐसाही धर्महै इसमें क्या अयोग्य है नीचका धर्म नीचही है ॥

इतिश्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंस श्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबू-हिन्दूपतिविरचितेकाव्यनिर्णयेउपमादिअलंकारवर्णननामाष्टमोल्लासः ॥

अथ उत्प्रेक्षादिवर्णनं ॥

दोहा-उत्प्रेक्षारु अपन्हुत्यों, सुमिरण भ्रम संदेहु ।
इनके भेद अनेकहैं, ये पाँचों गनिलेहु ॥ १ ॥

उत्प्रेक्षा अलंकार जोहै, अपन्हुत अलंकार सुमिरन अलंकार भ्रम अलंकार संदेह अलंकार इन पांचोंके भेद बहुततरहके हैं पर ये पांचों प्रसिद्ध हैं ॥

उत्प्रेक्षालंकार वर्णनं ॥

दोहा-वस्तु निरखिके हेतु लखि, के आगम फल काज ।
कवि कै वक्ता कहतु है, लगे औरसों आज ॥ २ ॥
समवाचक कहुँ परत है, मानहु मेरे जान ।
उत्प्रेक्षा भूषण कहैं, इहिविधि बुद्धिनिधान॥ ३ ॥

वस्तूत्प्रेक्षावर्णनं ॥

दोहा-वस्तुतप्रेक्षा दोइविधि, उक्ति अनुक्ति विषेन ।
उक्ति विषे जग अनउकिति, होत कविहिको वैन ॥

अथ उक्तिविषयावस्तूत्प्रेक्षा ॥

दोहा-रैनि तिमहले तिय चढी, मुखछवि लखि नँदनंद ।

घरीतीनि उदयाद्रिते, जनु चढि आयो चंद ॥ ५ ॥

अस्य तिलक ॥

चंद्रमाको चढिबो आश्चर्य नहीहै ताते उक्तिविषया अलंकार कहिये जनु शब्द जोहै सोईहै उत्प्रेक्षा ॥

यथा ॥

दोहा--लसैं बालवक्षोजयों, हरी कंचुकी संग।
दलतल दबे पुरैनिके, मनो रथंग विहंग ॥ ६ ॥

अस्य तिलक ॥

पुरैनिदलतरे रथांग जोहै चकवा ताको दबिबो आश्चर्य नहीं ताते उक्तिविषया मनो शब्द इतना उत्प्रेक्षा ॥

यथा-सवैया ॥

श्याम स्वभावमें नेह निकाममें आपु ह्वैगयेराधिकाजैसी।
राधेकौं अवराधो जुमाधोमें रीति प्रतीति भई तनु मैसी ॥
ध्यानहीं ध्यानलै ऐसोकहाभयो कोऊ कुतर्क करै यह कैसी।
जानतहौंइन्हैं दास मिलै कहूं मंत्रमहा परपिंडप्रवैसी ॥७॥

अस्य तिलक ॥

परपिण्ड प्रवैसी मंत्रको मिलबो आश्चर्य नहीं ॥ अनुक्ति विषया वस्तूत्प्रेक्षा ॥

अलंकार-सवैया ॥

चंचल लोचन चारु विराजित पास लुरी अलकैं थहरैं।
नाकमनोहर औ नकमोतिनकी कछुबात कहीं न परैं ॥
दास प्रभानि भरयो तियआनन देखतही मनुजाइ अरैं।
खंजन सांप सुआसँग तारे मनो शशि बीच विहार करैं ॥

अस्य तिलक ॥

खंजन, साँप, सुग्गा इन सबको चंद्रमाके बीचविहार करिवो आश्चर्यहै ताते अनुक्ति विषया अलंकार है ॥

यथा—सवैया ॥

दासमनोहर आनन बालको दीपति जाकी दिपै सब दीपै ।
श्रौन सुहाय बिराजि रहे मुकुताहलसों मिलि ताहि समीपै
सारी मिहीनसों लीन विलोकि बखानतुहैं कविके अवनीपै
सोदर जानि शशीहि मिलों सुत संग लिये मनी सिंधुमेंसीपै

अस्य तिलक ॥

सीपको शशिसों मिलवो आश्चर्यहै ताते अनुक्तिविषया कहिये सोदर जानिवो हेतु समर्थनहै ॥

हेतूत्प्रेक्षाअलंकार लक्षणम् ॥

दोहा—हेतु फलनके हेतु द्वै, सिद्धि असिद्धि विधान ।
होनी सिद्धि असिद्धिको, अनहोनी पहिंचान ॥ १० ॥

सिद्धि विषयाहेतूत्प्रेक्षावर्णनम्—सवैया ॥

जो कहों काहूके रूपसों रीझ तो औरको रूप रिझावनवारो
जो कहों काहूके प्रेमपगेहैं तो औरके प्रेम पगावन वारो ।
दासजू दूसरी बात न और इती बडी वेर वितावन वारो ॥
जानतहों गई भूलि गुपालै गली इहि वोरकी आवनवारो ११

अस्य तिलक ॥

गलीको भूलिवो सिद्धि विषयाहै आश्चर्य नहीं है ।

असिद्ध विषया हेतूत्प्रेक्षा वर्णनम् ॥

दोहा—पूसदिननमें ह्वैरह्यो, अग्निकोनमें भान ।

जानतहौं जाडो बली, सोऊ डरै निदान ॥ १२ ॥

अस्य तिलक ॥

सूर्यको डरिबो आश्चर्यहै याते असिद्धि विषया हेतुहै ॥

दोहा--विरहिनिके अँशुआनिते, भरनलग्यो संसार ।
मैं जानो मर्यादतज, उमडो सागरखार ॥ १३ ॥

अस्य तिलक ॥

सागरको उमडिवो असिद्धि हेतोक्त उत्प्रेक्षाहै ॥

अथ सिद्धिविषया फलोत्प्रेक्षा वर्णनम् ॥

दोहा—बाल अधिक छबि लागिनिज, नयनन अंजन देति।
मैं जानो मोहननको, बानन बिष भारि लेति ॥१४॥

अस्य तिलक ॥

बाननिमें विष भरिवेमें मारिवेको फल सिद्धहै ॥

दोहा—विरहिनि अँसुवन विधुरहैं, दरशावत नित शोधि ॥
दास बढावनको मनो, पूनो दिनन पयोधि ॥१५ ॥

अस्य तिलक ॥

पूनोदिननमें पयोधिको बाढिवो सिद्धि फलहै ॥

असिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा वर्णनम् ॥

दोहा—खंजरीट नहिं लखि परत, कछुदिन साँची बात ।
बालदृगनि सम होनको, मनो करन तपजात॥१६॥

अस्य तिलक ॥

खंजनको तपको जैवो असिद्धविषयहै ॥

अथलुप्तोत्प्रेक्षा वर्णनम् ॥

दोहा—लुप्तोत्प्रेक्षा तिहि कहैं, वाचक बिन जो होइ ।
याकी बिधि मिलि जातुहै, काव्यलिंगमें कोइ ॥१७॥

यथा ॥

दोहा–बिनहुँ सुमनगन बागमें, भरेदेखियतभौंर ।
दास आजु मनभावती, शैल किये यहि ओर ॥ १८ ॥

यथा ॥

दोहा–बालम कलिका पत्र अरु, खौरि सजे सब गात ।
लाल चाहिवे योग यह, चित्रित चंपक पात ॥ १९ ॥

अस्य तिलक ॥

मनो शब्द लुप्त कहै सोई बाचकुहै ।

उत्प्रेक्षाकीमाला–कवित्त ॥

चौखंडेते उतारि बडेही भोर बाल आई,
देवसरि आई मानो देवी कोऊ व्योमते ।
शोभासों सफरि खडी तट सोहै भींगोपट,
बलित बरफसों कनकवेली मोमते ॥
धोयेते डिठौनादिक आनन अमलभयो,
काढिगयो मानहु कलंक पूरे सोमते ।
अलकन जलकन धायोमनो आवै चली,
पतिपै हराधिरली तारातम तोमते ॥ २० ॥

अथ अपन्हुतिअलंकार वर्णनम् ॥

दोहा–और धर्म जहँ थापिये, साँचो धर्म दुराइ ।
औरहि दीजै युक्तिबल, और हेतु ठहराइ ॥ २१ ॥
मेटि औरसों गुणजहाँ, करै औरमें थाप ॥
भ्रम काहूको ह्वैगयो, ताको मिटवत आप ॥ २२ ॥
काहू पूछे मुकुरि करि, औरै कहै बनाइ ।

मिसुकरि और कथन छविधि, होत अपन्हुति भाइ॥२३॥

अस्यतिलक॥

अपन्हुति अलंकार छै प्रकारकाहै १ पहिला अपन्हुति उसको कहते हैं कि सांचोधर्म दूरायके दूसरेमें स्थापनकरै २ दूसरा अपन्हुति उसको कहते हैं कि युक्तबलि करके हेत जो है दूसरेमें ठहरावै और ३ अपन्हुति सोहै कि एकका गुण मेटिकै दूसरे थापै चौथी अपन्हुति सोहै कि किसीके भ्रमको मिटावे ५ पांचवां अपन्हुति सोहै जो कोई वस्तु पूंछै उसको निषेध करिकै दूसरी-वस्तु बनाइके कहै६ अपन्हुति सोहै मिसकरिकै और कथनकरै॥

दोहा—धर्म१हेतु२परिजस्त३भ्रम४, छेक५कहत्वाहि६देखि।
वाचक एक नकारहै, सबमें निश्चय लेखि॥२४॥

अथ धर्मापन्हुति यथा—सवैया॥

चौहरी चौकसों देख्यो कलामुख पूरबते कढ्यो आवतहैरी।
ठाढो संपूरण चोखो भशो विष सों लहि घायनि घूमै घनेरी॥
मांजिमिसी मुँह जोरुद्यो सोइ दास विचै विच श्यामलगैरी।
चाइ चवाइवियोगनिको द्विजराज नहीं द्विजराजहै बैरी२५॥

हेत्वापन्हुति॥

दोहा—अरी घुमरि घहरात घन, चपला चमकतजान।
काम कुपित कामिनिनपर, धरत सान किरपान२६॥

अथ परजस्तापन्हुति—सोरठा॥

कालकूट विष नाहिं, विषहू केवल इंदिरा।
हर जागत छविजाहि, वा सँग हरि नींद न तजे॥२७॥

अथ भ्रान्तापन्हुति–सवैया ॥

आननहै अरबिंद न फूल्यो अलीगणभूल्यो कहामडरातुहो ।
कीरतुम्है कहावाइलगी भ्रमाबिम्बके ओठनको ललचातुहो॥
दासजूव्याली नबेनी बनावहै पापी कलापी कहा इतरातुहो ।
बोलतीबालनबाजतीबीनकहासिगरेमृगघेरत जातुहो २८ ॥

अथ छेकापन्हुति–सवैया ॥

दक्षिण जातिन्हके बिच ह्वैकै हरे हरे चाँदनीमें चलिआयो॥
वासवगारिकै ढारि रसै लगि सीरोऊ हीरोकियो मनभायो ॥
दासजू वा विन या उद्वेगसों प्राण वही यहि जानिहों पायो॥
भेंटचोकहूंमनरौनअली नहिंरी सखिराति कोपौनुसोहायो२९

अथ कैतवापन्हुति–यथा–कवित्त ॥

दासलख्यो ठटकोकरिकै नट कोऊकियोमिसकान्हरकेरो ॥
याको अचंभोनईठिगनोइहि डीठिको बांधिवो आवै घनेरो
मो चितमें चढि आपुरह्यो उतरै न उपाइ कियो बहुतेरो ॥
तौहूं कहै अरु हो हू लख्यो इहि ऊपर चित्तरह्यो चढिमेरो॥

अथ अपन्हुतिनकी संसृष्टि लक्षणकथनम्–कवित्त ॥

एक रदहै न शुभ्र शाखा बढिआई लम्बो,
दरमें विवेक तरु जोहै शुभ्रबेशको ।
शुण्डादण्ड कैतव हथ्यार है उदण्ड यह,
राखत नलेश अघ बिघन अशेषको ॥
मदकहै भूलि न झरत सुधाधार यह,
ध्यानहींतेहीको दृढ हरन कलेशको ॥

दास यह व्यजन विचारो तिहूं तापनको,
दूरिको करनवारो करन गणेशको ॥ ३१ ॥

अथ सुमिरनभ्रमसंदेहालंकार ॥

दोहा–सुमिरन भ्रम संदेहये, लक्षणप्रगटै नाम ॥
उत्प्रेक्षादिकमें नहीं, तदपि मिलै अभिराम॥३२॥

सुमिरनयथा ॥

दोहा–कछु लखि सुनि कछुसुधिकरिय,सो सुमिरन सुखकंद
सुधि आवत ब्रजचंदकी, निरखि सँपूरनचंद ॥३३॥

यथा–सवैया ॥

लखे सुखदान पयानते जानि मयूरन देति भगाइ भगाई॥
मनेकै दियो पियरे पहिरावको गाऊं मैंप्यादे लगाइलगाई॥
भुलावति याके हियेते हरीहि कथानिमें दास पगाइ पगाई॥
कहा कहिये पिय बोलिपपीहा व्यथाजिय देत जगाइ जगाई॥

भ्रांतालंकार वर्णनम्–यथा ॥

दोहा–ओढे जाली जरदलखि, कंचनवरणीबाल ॥
चतुराचिरीचित फँदिगयो, भ्रम्यो भूलि रँगजाल ३५

अस्य तिलक ॥

यह रूपक संकलितहै ॥

दोहा–विनविचारि प्रवसन लग्यो, व्यालशुण्डमें व्याल ।
ताहू कारी ऊषभ्रम, लियो उठाइ उताल ॥ ३६ ॥

अस्य तिलक ॥

यह अन्योन्य संकलितहै ॥

यथा—सवैया ॥

पन्ननकी किरनालि खरीरी हरीरी लतानिको तूलिरहीहै ॥
नीलक माणिक आभा अनूपम सोसन लालनि हूलि रहीहै॥
हीरन मोतिनकी दुति दासजू बेला चमेलीसी फूलिरहीहै॥
देखि जराउको आंगनराउको भौरनिकी मति भूलिरहीहै२७

अस्यतिलक ॥

इहां उद्दात अलंकारको शंकरहै फुलवारीरूपक व्यंग्यहै ॥

यथा—कवित्त ॥

देखतही जाके वैरी वृन्द गजराजनके,
धीर नरहत यश जाहिर जहानहै ॥
गज मुकुतानिको खेलौना करि डारतुहै,
उमँगिउछाह सों करत जवैदानहै ॥
बाहन भवानीको पराक्रम बसतु औरै,
अंगनमें शूरताको प्रगट प्रमानहै ॥
हिंदूपति साहेबके गुणमें बखानै मृगराज,
जियजानै की हमारो गुणगानहै ॥ ३८ ॥

अस्य तिलक ॥

इहां शब्दशक्तिभ्रांतालंकारहै प्रतीपालंकार व्यंग्यहैं ॥

अथ संदेहालंकारवर्णनम्—सवैया ॥

लखै उहि टोलमें नौलबधू इक दास भये दृग मेरे अडोल॥
कहौकटिखीनकोडोलनौडौलकीपीननितम्बउरोजकी तोल
सराहूं अलौकिक बोल अमोलके आनन कौलमेंरंग तमोल॥

कपोलसराहूंकिनीलनिचोलकिधोंबियलोचनलोलकलोल ॥

यथा ॥

दोहा-तमदुखहारिनिरविकिरन, शीतलकारिनि चंद ॥
विरह कतल काती किधों, पाती आनँदकंद ॥४०॥

यथा-कवित्त ॥

चारुमुखचंद्रको चढायो विधि किंशुकन,
किंशुक यों बिम्बाधर लालच उमंगुहै ॥
नेह उपजावन अतूल तिलफूल कैधों,
पानिप सरोवरकी उरमि उतंगहै ॥
दास मन्मथ साही कंचन सुराहीमुख,
वासयुत पालकी कि पालशुभरंगहै ॥
एकहीमेंतीनोंपुर ईशकोहै अंश कैधों,
नाक नवलाकी सुरधाम सुरसंगहै ॥ ४१ ॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिन्दूपति विरचितकाव्यनिर्णये उत्प्रेक्षादि अलंकारवर्णनन्नाम नवमोल्लासः ॥९॥

अथ व्यतिरेकरूपकालंकारवर्णनम् ॥

दोहा-व्यतिरेकहु रूपकहुके, भेद अनेक प्रकार ॥
दास इन्हें उल्लेखयुत, गनो तीनि निरधार ॥ १ ॥

अथ व्यतिरेकालंकारवर्णनम् ॥

दोहा-पोषनकारि उपमेयको, दोषन कारि उपमान ॥
नहिं समान कहिये तहां, हैव्यतिरेक सुजान ॥ २ ॥

कहुँ पोषन कहुँ दोषनै, कहूं कहूं नहिं दोउ ॥
चारिभाँति व्यतिरेकहै, यह जानत सबकोउ ॥ ३॥

अथ पोषन दोषन दुहुँनको कथनम् ॥

दोहा–लाल लाल उनमानकै, उपमा दीजै और ॥
मृदुल अधर सम होइ क्यों, विद्रुम निपट कठोर॥ ४

यथा–सवैया ॥

सखि वामें जगै छन ज्योति छटा इत पीतपटा दिन रैनि मडो
वह नीर कहूं बरसै सरसै यहतो रसजाल सदाहिं अडो ॥
वह श्वेतह्वै जातो अपानिपह्वै इहिरंग अलौकिकरूपैगडो॥
कहि दास बराबरि कौनकरै घनसों घनश्यामसों बीचबडो

पोषनहीको कथन ॥

दोहा--प्रबल तीनिहूंलोकमें, अचल प्रभा करि थाप ॥
जीत्योदास दिवाकरहि, श्रीरघुबीर प्रताप ॥ ६ ॥
सरस सुवास प्रसन्नअति, निशिबासर सानन्द ॥
ऐसो मुखको कमलसों क्यों भाषत मतिमंद॥ ७ ॥

दोषनहीको कथन ॥

दोहा--घटै बढै सकलंक लखि, जग सब कहै सशंक ॥
बालबदन समहै नहीं, रंकमयंक यकंक ॥ ८ ॥

यथा–कवित्त ॥

बारिद लेखतहों पर देखतहों तजिकै जल देत नआनहै ॥
पारस कोउ नमानतहों पहिंचानतहों तो निदान पषानहै ॥
हैं पशुजातिकी कामदुघा कलपद्रुमवापुरो काठ प्रमानहै॥

और मैं काहि कहों प्रभु दूसरो दानकथानमें तोहिं समान है॥

शब्द शक्तिते यथा—कवित्त ॥

आवै जित पानिप समूह सरसात नित,
मानो जलजात सोतौ न्यायहीं कुमतिहोइ ॥
दास या दरपको दरप कंदरपको है,
दरपन सम ठाने कैसे बात सतिहोइ ॥
और अवलाननमें राधिकाके आनन,
बराबरीको बल कहै कविक्रुर अतिहोइ ॥
पैयेनिशि बासर कलंकित नअंक सम,
वरणेमयंक कविताईकी अपति होइ ॥ १० ॥

दोहा—सब सुख सुखमासों भरयो, तेरो वदन सुवेश ।
तासम शशि क्यों वरणिये,जाको नाम कलेश११॥

अथ व्यंग्यार्थमेंव्यतिरेक ॥

दोहा--कहाकंज केसरि तिन्हैं, कितिक केतकी बास ॥
दास बसे जे एक पल,वा पद्मिनिके पास ॥ १२ ॥

रूपकालंकारलक्षणं ॥

दोहा--उपमा अरु उपमेयते, वाचकधर्ममिटाइ ॥ १३ ॥
एकै करिआरोपिये, सो रूपक कविराइ ॥
कहुँ कहिये यह दूसरो कहुँ राखिये न भेद ॥
अधिकहीनसम तृविधि पुनि,ते तद्रूप अभेद॥ १४॥

अथतद्रूपरूपकअधिकोक्ति—यथा ॥

दोहा—सतको कामद असतको, भयप्रद सब दिशिदौर॥

दास याचिबे योग्य यह, कलपवृक्षहै और ॥ १५॥

अथ तद्रूप हीनोक्ति–यथा ॥

दोहा--लखि सुनि जाइ न ज्वाबदै,सहैपरै कृतनीचु ॥
बास खलनके बीचको, बिना मुयेकी मीचु ॥१६॥

अथ तद्रूपरूपकसमोक्ति यथा ॥

दोहा–दृगकैरवकी दुखहरनि, शीतकरनि मनुदेश ॥
यह वनिता भुवलोककी, चंद्रकला शुभ वेश१७॥
कमलप्रभा नहिं कमतुकै, दृगनि न देत अनंदु ॥
कैनसुधाधर तियवदन,क्योंगर्वित कहु चंद ॥ १८॥

अस्य तिलक ॥

यामें प्रतीपकी संव्यंग्यहै ॥

अथ अभेदरूपकअधिकोक्ति यथा–सवैया ॥

है रतिको सुखदायक मोहन वामकराकृत कुण्डल साजै॥
चित्रित फूलनिको धनुबाणतरचोगुणभौंरकीभ्रांतिकोभ्राजै।
शुभ्रस्वरूपनिमें गनो एक विवेक हनै तिय सैनसमाजै ॥
दासजू आज बने ब्रजमें ब्रजराजसदेह अदेह बिराजै॥१९॥

दोहा–बंधनुडर नृपसों करै,सागरकहा विचारि ॥ २० ॥
इनको पारनु शत्रुहै, अरु हरिगई ननारि ॥

अस्य तिलक ॥

इहां व्यंगार्थमें रूपकहै वस्तुते अलंकार ॥

अथ अभेदरूपकहीनोक्ति यथा ॥

दोहा–सबके देखत व्योमपथ, गयोसिंधुके पार ॥
पक्षिराज बिनु पक्षको,वीर समीर कुमार ॥ २१ ॥

यथा—सवैया ॥

कंजके संपुटपैहैखडोहियमें गडिजात ज्यों कुंतकी कोरहै ॥
मेरुहै पै हरिहाथ न आवत चक्रवतीपै बडेई कठोरहैं ॥
भावती तेरे उरोजनमें गुन दास लख्यो सब औरई औरहैं॥
शंभुहै पै उपजावैं मनोज सुवृत्तहै पै परचित्तके चोरहैं२२॥

अस्यातिलक ॥

इहां व्यतिरेक रूपकको संकर है ॥

दोहा—रूपकहोत निरंगपै, परंपरित परिणाम ॥
अरुसमस्तविषयक कहूं,विविधभाँति अभिराम२३

अथनिरंगरूपक—यथा ॥

दोहा—हरिमुखपंकज भ्रुव धनुष, खंजनलोचनमित्त ॥
बिम्बअधर कुंडल मकर,बसे रहत मोचित्त ॥२४॥

अथपरंपरितरूपक—यथा ॥

दोहा—जहांवस्तु आरोपिये, और वस्तुके हेत ॥
श्लेषहोइकै भिन्नपद, परंपरितसो चेत ॥ २५ ॥
सबतजि दास उदासता, रामनाम उर आनि ॥
तापतिनूका तोमको,अग्नि किनूका जानि॥२६॥

अथ परंपरितमाला—यथा—कवित्त ॥

कुवलय जीतिवेको बीर वरिवण्ड राजै,
करनपै जाइवेको याचक निहारेहैं ॥
सितासित अरुणारे पानिपके राखिवेको,
तीरथके पतिके अलेख लखिहारेहैं ॥
बेधिवेको शरमोहिमारिवेको महाविष,

मीन कहिबेको दास मानस विहारे हैं ॥
देखतहीं सुबरन हीरा हरिबेको,
पश्य-तोहर मनोहर ये लोचन तिहारेहैं ॥ २७ ॥

यथा भिन्नपद-कवित्त ॥

नीतिमगमारिबेकोठगहैं शुभग मनु,
बालक विकल करिडारिबेको टोनेहैं ॥
डीठिखग फांदिबेको लासाभरे लागें हिय,
पिंजरेमें राखिबेको खंजनके छौने हैं ॥
दास निज प्राणगथअंतरते बाहर न,
राखतहैं केहूं कान्ह कृपिणके सोनेहैं ॥
ज्ञान तरुवर तोरिबेको करिवर जिय,
लोचन तिहारे प्रियलोचन सलोनेहैं॥२८ ॥

अथ मालारूपक-यथा-कवित्त ॥

यक्षिणीसुखद मो उपासना कियेकी,
श्री-जुसारसहियेकी दारू दुखकीजुआगिहै ॥
बपुष बरतकी जुबरफ बसाइशीत,
दिनकी तुराई जोगुनन्ह रही तागिहै ॥
दास दृगमीनन्हकी सरित सुशीले प्रेम,
रसकी रसीली कब सुधारस पागिहै ॥
हाइ ममगेह तमपुंजकी उज्यारी प्राण-
प्यारी उतकंठसों कबहिं कंठ लागिहै ॥ २९ ॥

यथा—कवित्त ॥

अबतो बिहारीके वै बानक गयेरी तेरी,
तनुद्युति केसरिको नैनक समीरभो ॥
श्रौन तुव वाणी स्वातिबुंदनको चातकभो,
श्वासनिको भरिवो द्रुपदजाको चीरभो ॥
हियको हरष मरुधरणिको नीर भोरी,
जियरो मनोभव शरनको तुणीरभो ॥
एरी वेगि करिकै मिलाप थिरथापु न तो,
आपु अब चाहत अतनुको शरीरभो ॥ ३० ॥

अथ परिणामरूपक ॥

दोहा—करतु जुहै उपमानहै, उपमेयहिको काम ॥
नाहिं दूषण उनमानिये, है भूषण परिणाम ॥ ३१ ॥
करकंजनि खंजनि दृगनि, शशिमुखि अंजनदेत ॥
बीजहासते दासजू, मनविहंग गहिलेत ॥ ३२ ॥

समस्त विषयक रूपक लक्षणम् ॥

दोहा—सकलवस्तुते होत जहँ, आरोपित उपमान ॥
तिहि समस्त विषयक कहैं, रूपकबुद्धिनिधान ३३ ॥
कहुँ उपमा वाचक कहूं, उत्प्रेक्षादिक होइ ॥
कहूं लियेपरिणामकहुँ, रूपक रूपक सोइ ॥ ३४ ॥

उपमावाचक—यथा—कवित्त ॥

नेम प्रेम साहि माति विमाति सचिव चाहि,

दुकुलकी शील हाव भाव पीलसरिजू ॥
पति औ सुपति नैनगति औतरल तुरै,
शुभाशुभ मनोरथ रथरहे लरिजू ॥
आठो गांठि धरमकी आठोभाव सात्विकी ज्यों,
प्यादे दास दुहुँघा प्रबलभिरै अरिजू ॥
लाज औ मनोज दोऊ चतुर खेलार उर,
वाके सतरंजकेसी बाजी राखी भरिजू ॥ २५ ॥

उत्प्रेक्षा वाचक–यथा–कवित्त ॥

धूसरित धूरिमानो लपटी विभूति भूरि,
मोतीमाल मानहु लगाये गंगाजलसों ॥
विमल वघनहां बिराजै उर दास मानो,
वालविधु राख्यो जोरि द्वैके भालथलसों ॥
नील गुण गूँदे मणिवारे आभरन कारे,
डौंरू उरधारे जोरि द्वैक उत्तपलसों ॥
ताके कमलाके पति गेह यशुदाके फिरैं,
छाके गिरिजाके ईश मानो हलाहलसों ॥ २६ ॥

अथ अपह्नति यथा–कवित्त ॥

धावै धुरवारी नदवारी असवारीकीहैं,
कारी कारी घटान मतंग मदधारी हैं ॥
न्यारी न्यारी दिशिचारी चपला चमतकारी,
वरणैअन्यारी एकटारी तरवारी हैं ॥

केका किलकारी दास बूंदन सरारी पौन,
दुंदुभि धुकारी तोप गरज डरारीहैं ॥
विना गिरिधारी झरभारी मिस मैन,
ब्रजनारी प्राणहारी देवदलनि उतारीहैं ॥ ३७ ॥

रूपक रूपका यथा-कवित्त ॥

गिलिगये स्वेदनि जहांई तहां छिलिगये,
मिलिगये चंदन भिरेहैं इहिभायसों ॥
गाडेह्वै रहेही सहे सन्मुख तुकानि लीक,
लोहित लिलार लागी छींट अरिघायसों ॥
श्रीमुख प्रकाश तनु दासरीति साधुनकी,
अजहूंलों लोचन तमीले रिसि तायसों ॥
सोहै सर्वंग सुख पुलक सोहाये हरी,
आये जीति समर समर महारायसों ॥ ३८ ॥

यथा कवित्त ॥

केलि थल कुण्डसाजि समिध सुमन सेज,
विरहकी ज्वालवाल वरै प्रतिरोमुहै ॥
उपचार आहुतिकै बैठी सखी आसपास,
स्रुवापल हुनै नेह अँसुआ अधोमुहै ॥
बलिपशु मोदभयो बिलपनिमंत्र ठयो,
अवधिकी आश गनिलयो दिननौमुहै ॥
दास चलि वेगि किनकीजिये सफलकाम,
रावरे सदन श्याम मदनुको होमुहै ॥ ३९ ॥

परिणाम समस्त विषय–सवैया ॥

अनी नेह नरेशकी माधो बने बनी राधे मनोजकीफौजखरी।
भटभेरो भयो यमुनातट दासजू सानदुहूंकी जुसान घरी ॥
उरजात चंडोलनगोल कपोलन जौलौं मिलाप सलाह करी।
तौलौं हरौल भटाक्षन सोरी कटाक्षनकी तरवारि परी।४०॥

उल्लेखालंकारवर्णनम् ॥

दोहा–एकैमें बहुबोधकै, बहुगुणसों उल्लेष ॥
परंपरित मालानिसों, भिन्हों भिन्न विशेष ॥ ४१ ॥

एकमें बहुतको बोध–यथा–सवैया ॥

प्रीतम प्रीतिमई उनमानै परोसिनि जानै सुनीतिनिसों ठई॥
लाजसनीहै बडी निभनी बरनारिनमें शिरताज गनीगई ॥
राधिकाको ब्रजकी युवती कहै याही सोहाग समूह दईदई ॥
सौती हलाहलसोतीकहैं औ सखी कहैं सुंदरिशील सुधामई॥

एकमें बहुतगुण ॥

दोहा–साधुनको सुखदानिहै, दुर्जनगण दुखदाम ॥
वैरिन विक्रमहानिप्रद, राम तिहारो नाम ॥ ४३ ॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवशावतसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिंदूपतिविरचितेकाव्यनिर्णयेव्यतिरेकरूपकालंकारवर्णनन्नामदशमोल्लासः॥१०॥

अथ अतिशयोक्ति अलंकार वर्णनम् ॥

दोहा–अतिशयोक्ति बहुभाँतिकी, उदाहितो तहँ ल्याइ ॥
अधिक अलप सविशेषनो, पंचभेद ठहराइ ॥ १ ॥

अतिशयोक्ति लक्षणम् ॥

दोहा—जहँ अत्यन्त सराहिये, अतिशयोक्ति सु कहंत ॥
भेदक संबोधो चपल, अक्रमाति अत्यंत ॥ २ ॥

भेदकातिशयोक्ति—यथा ॥

दोहा—भेदकातिशय उक्ति जहँ, सुन हमही सब बात ॥
जगते यह कछु औरई, सकल ठौर कहिजात ॥ ३ ॥

यथा—कवित्त ॥

भावी भूत वर्तमान मानविनहूँहै ऐसी,
देवी दानवीनहूंओं न्यारो यह डौरई ॥
याविधिकी वनिता जो विधिना बनायो चाहै,
दासतौ समुझिये प्रकाशै निजबौरई ॥
चित्रित करै क्योंहै चितेरो यह चालिकालि,
परौदिन बीते द्युति औरै और दौरई ॥
आजु भोर औरई प्रहरहोत औरई है,
दुपहर औरई रजनि होत औरई ॥ ४ ॥

दोहा—अनन्वयहुकी व्यंग्य यह, भेदकातिशय उक्ति ॥
उतहिं कियो थापित निरखि, परबीननकी युक्ति ५ ॥

संबंधातिशयोक्ति—वर्णनम् ॥

दोहा—संबंधातिशयोक्तिको, द्वैविधि, वर्णतलोग ॥
कहुँयोग्यते अयोग्यहै, कहुँ अयोग्यते योग ॥ ६ ॥

अथ योग्यते अयोग्यकलपना ॥

दोहा—छामोदरी उरोजतू, होत उरोज उतंग ॥

अरी इन्हैं ये अंगमें, नहिं समानको ढंग ॥ ७ ॥

यथा–सवैया ॥

घांघरो झीनसों सारी मिहीनसों पीननितम्बनि भारउठैखचि
दास सुबास शृंगार शृंगारत बोझनि ऊपर बोझ उठै माचि॥
स्वेदचलै मुखचंद्रते च्वैडग द्वैकधरे महिफूलनिसों सचि ॥
जातिहैयंक जपात बयारिसों वा सुकुमारिकोलंकललालचि।

अस्यतिलक ॥

कुच अंगमें अमाव योग्यहै कह्यो न अमातहै नायका चलिवे योग्य है कह्यो न चलिसकैगी ॥

अयोग्यको योग्य कल्पना ॥

दोहा–कोकनआति सबलोकते, सुखप्रद रामप्रताप ॥
बन्यो रहत जिन दंपतिन्ह, आठोंपहर मिलाप॥९॥

कवित्त ॥

कंचनकलित नग लालनिबलित सौंध,
द्वारका ललित जाकी दीपति अपारहै ॥
ताके परबलभी विचित्र अति ऊंची जासों,
निपटै नजीक सुरपतिको अगारहै ॥
दास जब जब जाइ सजनी सयानीसंग,
रुक्मिणिरानी तहाँ करत विहारहै ॥
तब तब शची सुरसुंदरी निकरलै,
कलपतरुफूललै मिलत उपहारहै ॥ १० ॥

चपलातिशयोक्ति ॥

दोहा-निपट उतालीसों जहाँ, वर्णतहैं कछुकाज ॥
सो चपलातिशयोक्तिहै, सुनो सुकविशिरताज ११॥

यथा-कवित्त ॥

काहू शोधदयो कंसराइके मिलाइबेको,
लेनआयो कान्है कोऊ द्वारका अलंगते ॥
त्यौंहीं कह्यो आलीसों गयो न हरि ज्वाबदयो,
मिलैं हम कहाँ ऐसो मूढ बिन ढंगते ॥
दास कहै तासमय सोहागिनिको करभयो,
बलया विगत दुहूं बातन प्रसंगते ॥
अधिक ढरकिगई विरहकी छाम ताते,
अधिक तरकिगई आनँद उमंगते ॥ १२ ॥

यथा-कवित्त ॥

तेरे योग्य काम यह रामके सनेही जाम्ब-वंत,
कह्यो औधिहूको धौसदशा द्वैरह्यो ॥
एतीबात अधिक सुनत हनुमंत गिरि,
सुंदरते कूदिकै सुवेलपर ह्वै रह्यो ॥
दास आति गतिकी चपलता कहालों कहों
भालु कपि कटक अचंभा जकिज्वैरह्यो ॥
एक छिन वार पार लगिपारावारके,
गगनमध्य कंचन धनुष ऐसो वैरह्यो ॥ १३ ॥

अस्य तिलक ॥

यामे उपमाको अंगांगिसंकरहै ॥

यथा सवैया ॥

चकि चौंकती चित्रहुके कपिसों जाकि क्रूरकथानि सुनेजुडरै
सुनि भूत पिशाचनिकी चरचानि विमोहितह्वै अकुलाइपरै।
चलिवो सुनि पाँउ दुखै तनुघामके नामहिसों श्रमभूरि भरै।
तिहि सीय चह्यो वनकोचलिवोहियरेधृग तू न अजौं विहरै॥

अक्रमातिशयोक्ति–यथा

दोहा--अक्रमातिशयउक्ति जहँ, कारज कारण साथ ॥
जा परसतहै साथहीं, तोसर अरु अरिमाथ॥ १५॥

यथा–कवित्त ॥

रामआसि तेरी असुवैरिनको कीन्हों हाथ,
ताते दोऊ काज एक साथहीं सजतुहै ॥
ज्योंहीं यह कोषको तजतहै दयालु त्योंहीं,
वेऊ सब निज निज कोषको तजतुहैं ॥
दास यह धाराको सजति जब जब तब,
तब वै सकल अश्रुधाराको सजतुहैं ॥
याको तूँकपाइकै भजावतहै ज्यों ज्यों त्यों त्यों,
वेऊ कंपि कंपि ठौर ठौरनिभजतुहैं ॥ १६ ॥

अत्युक्ति यथा ॥

दोहा–जहां दीजिये योग्यको, अधिक योग्य ठहराइ ॥
अलंकार अत्युक्ति तिहि, वर्णतहैं कविराइ ॥१७॥

यथा--सवैया ॥

एती अनाकनी कीवो कहा रघुके कुलमें को कहाइकै नायक
आपनोमेरोयों नामविचारिहोदीन अधीन तू दीनको दायक।
मैहों अनाथ अनाथनमें तजि तेरई नाम न दूजो सहायक॥
मंगन तेरे यों मंगनसों कलपद्रुम आजुहैंमांगिवेलायक१८॥

यथा ॥

दोहा–सुमनमई महिमें करै, जब सुकुमारि विहार।
तब सखियां संगहीं फिरैं, हाथ लिये कचभार॥ १९

अत्यंतातिशयोक्ति ॥

दोहा–जहाँ काज पहिले सधै, कारणपीछे होइ॥
अत्यंतातिशयोक्तितिहि, वर्णतहैं सबकोइ॥ २०॥

यथा–कवित्त ॥

जातेसबैहुते माहकी राति निदाघकद्योसका साजुसजावते॥
फेरि विदेशको नाम न लेते सुश्याम दशा यह देखन पावते
दास कहा कहिये सुनहो सुनि प्रीतम आवते प्रीतम आवते
जातभई पहिलेवह तापतो पीछेमिलाप भयो मनभावते२१

दोहा–अतिशयोक्ति संभावना, संकर करो निवाहु।
उपमा और अपह्नुत्यों, रूपक उत्प्रेक्षाहु॥ २२॥

संभावना अतिशयोक्ति–कवित्त ॥

सागर सरित सर जहाँलों जलाशय जग,
सबमें जो केहूं किलकज्जल रलावई।
अवनि अकासभरी कागजगजाइलै,
कलम कुश मेरु शिर बैठक बनावई॥

दास दिन रैनि कोटि कलपलों शारदा,
सहस करहै जो लिखिवेहीं चित लावई
होइ हद्दकाजर कलम कागजनको,
गुपाल गुणगणको तऊ नहद्द पावई ॥ २३ ॥

उपमाअतिशयोक्ति ॥

दोहा–बुधि बलते उपमान पर, अधिक अधिकई होइ ॥
तब उपमा अत्युक्तिहै प्रौढ उक्ति है सोइ ॥ २४ ॥

यथा–सवैया ॥

दासकहै लगै भादों कुहूकी अँध्यारीघटाघनसे कचकारे ॥
सूरजबिम्बमें इंगुरवोरेवंधूकसे हैं अधरा अरुनारे ॥
वाडोकि आंचके ताये बुझाये महाविषके जमजीके सँवारे॥
मारनमंत्रसे बीजुरीसान लगाये नराचसे नैन तिहारे॥२५॥

सापह्नुतिअतिशयोक्ति ॥

दोहा–जहँदीजै गुण औरको, औराहिमें ठहराइ ॥
सापह्नुति अत्योक्ति तिहि, वर्णतुहैं कविराइ ॥२६ ॥

यथा–सवैया ॥

तेरहीनीके लख्यो मृगनैनन तोहीको नीके सुधाधर मानै॥
तोहींसों होतिनिशाहरिको हमतोहींकलानिधिकामकीजान
तेरे अनूपम आननकी पदवी वहिको सबदेत सयानै ॥
तूहीहो वाम गोविन्दको लोचन चंद्राहितो मतिमंदबखानै२७

अस्य तिलक ॥

प्रजस्तापह्नुतिमें हेतु प्रगट करतहैं यामें नहीं ॥

रूपकातिशयोक्ति अलंकार ॥

दोहा-विदित जानि उपमाहिंको, कथन काव्यमें देखि ॥
रूपकातिशय उक्तिसों, वर्ण एकता लेखि ॥ २८॥

यथा ॥

दोहा--दास देव दुर्लभ सुधा, राहु शंक निरशंक ॥
सकलकला कब आगिहै, विगतकलंक मयंक॥२९॥

यथा-सवैया ॥

चंदमें ओप अनूपबढै लगी रागनिकी उमडी अधिकाई ॥
सोती कालिंदिजाकी कछु होतिहै कोकनिके दरम्यानलखाई
दासजू कैसी चंबेली खुलीलगी फैली सुबासहुकी रुचिराई
खंजन काननवोर चले अवलोकतहौ हरिसाँझ सोहाई३०॥

उत्प्रेक्षाते अतिशयोक्ति यथा-सवैया ॥

दास कहांलों कहोंमैं वियोगिनिके तनुतापनिकी अधिकाई
सूखिगये सरिता सर सागर स्वर्ग अकाश धरा अकुलाई॥
कामके वश्य भये सिगरे जग याते भई मनो शंभुरिसाई॥
जारिकै फेरि संवारनको क्षितिके हित पावकज्वाल बढाई

उदाताऽलंकार ॥

दोहा-संपतिकी अत्युक्तिको, सुकवि कहै उदात ।
जहँ उपलक्षण बडेको, ताहूको यह बात ॥ ३२ ॥

यथा

दोहा-जगत जनक वरणो कहा, जनकदेशको ठाट ।
सहल महल हीरन बने, हाट बाट कर हाट ॥ ३३ ॥

बडेनको उपलक्षण ॥

दोहा--भूषित शंभु स्वयंभु शिर, जिनके पगकी धूरि ।

हठकरि पाँ धुवावती, तिन्हसों तिय मगरूर॥ ३४॥

यथा—कवित्त ॥

महावीर पृथ्वीपति दलके चलत,
ढल--कत बैजयंत खलकत ज्यों सुरेशको ।
दास कहै बलकत महाबल वीरनके,
धलकत उरमें महीप देश देश को ॥
फलकत बाजिनके भूरि धूरिधारा उठै,
तारा ऐसो झलकत मण्डल दिनेशको ।
थलकत भूमि हलकत भूमि पर छलकत,
सातोसिंधु दलकत फणशेशको ॥ ३५ ॥

अधिकालंकार लक्षणम् ॥

दोहा--अधिकारी आधेयकी, जहँ अधारते होइ ।
अरु अधार आधेयते, अधिक्क अधिक ये दोइ ३६

यथा आधारते आधेयअधिक ॥

दोहा--शोभा नंदकुमारकी, पारावार अगाध ।
दास बोछरे दृगनमें, क्यों भरिये भरिसाध॥ ३७॥

आधेयते आधार अधिक वर्णनम् ॥

दोहा-वेश्या मित्र मुनीशकी, महिमा अपरंपार ॥
करत लगत आमलक्क सम, जिनको सब संसार ३८

यथा—सवैया ॥

सातो समुद्र घिरी बसुधा यह सातो गिरीश धरै सब बोरैं ।
सातही द्वीप धरै दरम्यानमें होहिंगे खंड किते तिहि ठौरैं॥
दास चतुर्दशैलोक प्रकाशित-है ब्रहमंडईकी सही जोरैं ॥

एतहिमें भाजि जैहै कहां खल श्रीरघुनाथसों वैर विथोरैं३९

अस्यतिलक ॥

इहाँ व्यंग्यार्थते रामको अमल अधिकहै जगते ॥

पुनः ॥

दोहा–सुनियत जाके उदरमें, सकललोक विस्तार ।
दासबसै तो उर सदा, सोई नंदकुमार ॥ ४० ॥

अथ अल्पालंकारवर्णनम् ॥

दोहा–अल्प अल्प आधेयते, सूक्ष्म होइ अधार ।
छला छिगुनियां छोरको, पहुँचनि करत विहार४१

यथा ॥

दोहा–दासपरमलघु सुतनतन, भोपरमान प्रमान ।
तहां बसतहो साँवरे, तुम्ते लघुको आन ॥४२ ॥

यथा–सवैया ॥

कोऊ कहै करहाटक तन्तुमें काहू परागनिमें उनमानी ।
ढूँढहुरी मकरंदके बुंदमें दासकहै जलजात न ज्ञानी ॥
छामता पाइ रमाह्वैगई पर्यंक कहाकरै राधिका रानी ।
कौलमें दास निवास कियेहैं तलास कियेहू नपावतप्रानी४३

विशेषालंकार ॥

दोहा–अनाधार आधेय अरु,एकहिते बहुसिद्धि ॥
एकै सबथल वर्णिये,त्रिविधविशेषन वृद्धि॥ ४४ ॥

अनाधार आधेय यथा ॥

दोहा--शुभदाता शूरोसुकवि,सेतुकरै आचार ॥
विनादेहहूं दासये, जीवत इहि संसार ॥ ४५ ॥

एकहिते बहुसिद्धि- यथा ॥

दोहा--तिय तुअ तरल कटाक्ष जे, सहै धीर उर धारि ॥
सही मानि ते सहिचुके, तुपक तीर तरवारि॥४६॥

एकै सबथल वर्णिवो–यथा ॥

जलमें थलमें गगनमें, जड चेतनमें दास ॥
चर अचरनमें देखिये, परमातमा प्रकाश ॥ ४७ ॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंश श्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबू-
हिंदूपतिविराचितेकाव्यनिर्णयेअत्युक्त्यादिअकलंकार
वणर्नन्नामएकादशोल्लासः ॥ ११ ॥

अथअन्योक्त्यादिअलंकारवर्णनम् ॥

दोहा–आप्रस्तुत परशंस अरु, प्रस्तुत अंकुर लेखि ॥
समासोक्ति व्याजस्तुत्यों, आक्षेपहि अवरेखि ॥१॥
परजाओक्ति समेत किय, षट भूषण इकठौर ॥
जानि सकल अन्योक्तिमय, सुनहु सुकवि शिरमौर२
कारज मुखकारन कथन, कारनके मुख काज ॥
कहुँ सामान्य विशेष है, होत ऐसही साज ॥ ३ ॥
कहूं सरिस शिर डारिकै कहत सरिस सो बात ॥
आप्रस्तुतपरशंसके, पंचभेद अवदात ॥ ४ ॥
कविइच्छा जिहि कथनकी, प्रस्तुत ताको जान ॥
अनचाहितहूं कहिपरै, अप्रस्तुत सो मान ॥ ५ ॥
अप्रस्तुतके कहत जहँ, प्रस्तुत जान्यो जाइ ॥
अप्रस्तुतै प्रशंस तिहि, कहहिं सकल कविराइ ६॥
दोऊ प्रस्तुत देखिकै, प्रस्तुत अंकुर लेषि ॥

समासोक्ति प्रस्तुतहिते, अप्रस्तुत अवरोषि ॥ ७ ॥
इनमें स्तुतिनिंदा मिले, व्याजस्तुति पहिचान ॥
सबमें यह योजितकिये, होत अनेक विधान ॥८॥

अप्रस्तुत प्रशंसा कारज मुख्यकारणको कथन—कवित्त ॥

न्हान समय दास मेरे पाँयन पर्योहै,
सिंधु--तट नररूपह्वै निपट बेकरारमें ॥
मैं कह्यो तू कोहै कह्यो बूझती कृपाकैतौ,
सहाय कछुकरो ऐसे शंकट अपारमें ॥
मैंहों बड़वानल बसायो हरिहीको मेरी,
विनती सुनावो द्वारिकेश दरबारमें ॥
ब्रजकी अहीरिनिकी अंसुआवलित आई,
यमुना जरावै मोहिं महानल झारमें ॥ ९ ॥

अस्य तिलक ॥

यहसब कारज कह्यो सो अप्रस्तुतहै गोपिनको विरह कारण है सोई प्रस्तुतहै सो कह्यो ॥

अप्रस्तुत प्रशंसा कारण मुख्यकारजको कथन—सवैया ॥

ज्योतिके गंजमें आधो बराइ विरंचित रज वृषभानुकुमारी ॥
आधोरह्यो फिरि ताहूमें आधो लै सूरज चंद्र प्रभानिमेंडारी ॥
दास द्वै भाग कियो उबरेको तरैयनमें छबि एककी सारी ॥
एकही भागते तीनिहूं लोककी रूपवती युवतीनिसँवारी १०

अस्यातिलक ॥

या कथा कारणते कारज जोहै नायका ताकी शोभा वरण्यो ॥

अप्रस्तुत सामान्य मुख्यविशेषको कथन—सवैया ॥

या जगमें तिन्हैं धन्य गनो जे स्वभाय पराये भले कहँ दौरैं ॥
आपनऊं सों भलो करै ताको सदा गुणमानेरहैं सब ठौरैं ॥
दासजू ह्वै जो सकै तौ करै बदले उपकारके आपु करोरैं ॥
काजहितूके लगे तनुप्राणके दानते नेकु नहीं मुँहमोरैं ११ ॥

अप्रस्तुत प्रशंसा विशेष मुखसामान्यकोकथन—सवैया ॥

दास परस्पर प्रेम लखो गुणक्षीरके नीरमिले सरसातुहै ॥
नीरबेंचावत आपने मोल जहां जहां जाइकै क्षीरबिकातुहै ॥
पावक जारन क्षीरलग्यो तब नीर जरावत आपनो गातुहै ॥
नीरकी पीर निवारिबे कारण क्षीर घरीही घरी ऊफनातुहै १२

तुल्यप्रस्तावमें तुल्यको कथन ॥

दोहा—तुही विशद यश भाद्रपद, जगको जीवनदेत ॥
रुचेचातकै कातिकै, बुंदस्वातिके हेत ॥ १३ ॥

शब्दशक्तिते—यथा ॥

दोहा—गुणकरनी गजकोधनी, गारो धरै सुसाज ॥
अहो गृही तिहि राजसों, साधै अपनो काज ॥ १४ ॥

यथा—सवैया ॥

दासजू याके स्वभाय यहै निजअंकमें डारि कितै नहिंमारै ॥
को हरुवो अरु को गरुवो को भलो को बुरो कबहूं न विचारै ।
औरको चोट सहाइबे काज प्रहार सहै अपनेउर भारै ॥
आइपरो खलखालीके बीचकरै अबको तुअ छोहछोहारै १५

प्रस्तुतांकुर कारण कारजदोऊप्रस्तुत ॥

दोहा—दास उसासन होतहै, श्वेतकमल वन नील ॥

राधेतनु आंचन अली, सूखत अँसुवाहील ॥ १६ ॥

अस्य तिलक ॥

यहाँ विरहको तेज आंसूको अधिकार दोऊ वर्णतहैं ॥

यथा–सवैया ॥

आरज आइबो आली कह्यो भजि सामुहेतेगई ओटमेंप्यारी॥
एकही एंडीमहावरही श्रमते दुहुँ फैली खरी अरुनारी ॥
दास न जाने धौं कौनेहै दीवो चितै दुहुँ पाँइन नाइ निहारी॥
आलीकह्यो अरी दाहिनेदैमोहिंजानिपरैपगवामहैभारी १७॥

अस्यातिलक ॥

इहां अंगकी सुकुमारता पांइकी ललाई सब प्रस्तुत है ॥

यथा–कवित्त ॥

सिंहिनी औ मृगिनीकी जाढिग जिकिरकहा,
वारहू मुरारहूते खीनि चित्तधरितू ॥
दूरिहीते नेसुक नजारिभाव पावतहीं,
लचकि लचकि जात जीमें ज्ञानकरितू ॥
तेरो परिमान परिमानके प्रमाणहैपै,
दास कहै गरुआई आपनी सँभारितू ॥
तूतो मनुहेरे वह निपटही तनु हेरे,
लंकपर दौरत कलंकसों तौ डरितू ॥ १८ ॥

अस्य तिलक ॥

यहां कटिको वर्णत मनहै ताको बरजिवो दोऊ प्रस्तुतहै ॥

अथ समासोक्ति अलंकार ॥

दोहा -जहँ प्रस्तुतमें पाइये, अप्रस्तुतको ज्ञान ।
कहुँ वाचक कहुँ श्लेषते,समासोक्ति पहिचान ॥१९॥

यथा-सवैया ॥

आननमें झलकै श्रमस्वेद लुरैं अलकैं बिथुरी छबिछाई ।
दास उरोज घने थहरैं छहरैं मुकुतानिकी माल सोहाई ॥
नैन नचाइ लचाइकै लंक मचाइ बिनोद खँचाइ कुराई ।
प्यारी प्रहार करै करकंज कहा कहोंकंदुक भाग्यभलाई२०

अस्य तिलक ॥

कंदुक पुरुष जान्यो जातुहै एकाम सब बिपरीति कैसो जान्यो जातुहै यह समासोक्तिहै ॥

यथा ॥

दोहा-शैशव हाति यौवन भयो, अब या तनु शिरदार ।
ध्वनि पगनते दृगन दिप,चंचलता अधिकार॥२१॥

श्लेषते यथा-अस्यतिलक ॥

शैशव यौवन दोऊ नृप पग दृगदोऊ अमिल चंचलता टहल सो जान्यो जात है ॥

श्लेषते यथा-सवैया ॥

बहुज्ञान कथानिलैथाकीहौंमैं, कुल कानिहुको बहुनेमलियो
यह तीखी चितौनिके तीरतिने,भनि दासतुणीरभयोईहियो
अपने अपने घर जाहु सबैअबलों,साखिसीखदियो सो दियो

अबतो हरि भौंह कमानन हेतु,हौं प्राणनको कुरबान कियो

अस्यतिलक ॥

भौंह कमानको प्राण न्यवछावर कियो यह प्रस्तुतहै कुरबान को कमान म्यानहू जान्यो जात है ॥

अथ व्याजस्तुति लक्षण वर्णनम् ॥

दोहा–अप्रस्तुत परशंस अरु, व्याजस्तुतिकी बात ।
कहूं भिन्न ठहरात अरु,कहूं युगलमिलिजात॥२३॥
स्तुतिनिंदाके व्याज कहुँ, निंदास्तुतिके व्याज ॥
स्तुति स्तुतिव्याजकहुँ, निंदा निंदासाज ॥ २४ ॥

अथ निंदाव्याजस्तुति यथा–कवित्त ॥

भौंर भीर तनु भनभाती मधुमाखी सम,
काननिलौं फाटी फाटी आंखें बंधीलाजकी ॥
व्यालिनीसी बेनी खीनलंक बलहीन श्रम,
लीनहोती सकलहि भूषन समाजकी ॥
दास परचित्तन्हकी चोर ठहराई उर,
जानिपाई पदवी कठोर शिरताजकी ॥
कौनजानै कौनधों सुकृतकी भलाईवश,
भामिनि भई तू मनभाई ब्रजराजकी ॥ २५ ॥

अथ स्तुतिव्याज निंदा–कवित्त ॥

गोरसको बेंचिबो बिहायकै गँवारिनि,
अहीरिनि तिहारे प्रेमपालिबेको क्योंअरै ।
एतेपर चाहियै जो रावरेको कोमल,

अथ समासोक्ति अलंकार ॥

दोहा-जहँ प्रस्तुतमें पाइये, अप्रस्तुतको ज्ञान ।
कहुँ वाचक कहुँ श्लेषते,समासोक्ति पहिचान ॥१९॥

यथा-सवैया ॥

आननमें झलकै श्रमस्वेद लुरैं अलकैं बिथुरी छबिछाई ।
दास उरोज घने थहरैं छहरैं मुकुतानिकी माल सोहाई ॥
नैन नचाइ लचाइकै लंक मनाइ बिनोद खँचाइ कुराई ।
प्यारी प्रहार करै करकंज कहा कहौंकंदुक भाग्यभलाई२०

अस्य तिलक ॥

कंदुक पुरुष जान्यो जातुहै एकाम सब बिपरीति कैसो जान्यो जातुहै यह समासोक्तिहै ॥

यथा ॥

दोहा-शैशव हाति यौबन भयो, अब या तनु शिरदार ।
छांनि पगनते दृगन दिप,चंचलता अधिकार॥२१॥

श्लेषते यथा-अस्यतिलक ॥

शैशव यौवन दोऊ नृप पग दृगदोऊ अमिल चंचलता टहल सो जान्यो जात है ॥

श्लेषते यथा-सवैया ॥

बहुज्ञान कथानिलैथाकीहौंमैं, कुल कानिहुको बहुनेमलियो
यह तीखी चितौनिके तीरतिने,भनि दासतुणीरभयोईहियो
अपने अपने घर जाहु सबैअबलौं,सखिसीखदियो सो दियो

अबतो हरि भौंह कमानन हेतु,हौं प्राणनको कुरबान कियो

अस्यतिलक ॥

भौंह कमानको प्राण न्यवछावर कियो यह प्रस्तुतहै कुरबान को कमान म्यानहू जान्यो जात है ॥

अथ व्याजस्तुति लक्षण वर्णनम् ॥

दोहा—अप्रस्तुत परशंस अरु, व्याजस्तुतिकी बात ।
कहूं भिन्न ठहरात अरु,कहूं युगलमिलिजात॥२३॥
स्तुतिनिंदाके व्याज कहुँ, निंदास्तुतिके व्याज ॥
स्तुति स्तुतिव्याजकहुँ, निंदा निंदासाज ॥ २४ ॥

अथ निंदाव्याजस्तुति यथा—कवित्त ॥

भौंर भीर तनु भननाती मधुमाखी सम,
काननिलों फाटी फाटी आंखीं बंधीलाजकी ॥
व्यालिनीसी बेनी खीनलंक बलहीन श्रम,
लीनहोती सकलहि भूषन समाजकी ॥
दास परचित्तन्हकी चोर ठहराई उर,
जानिपाई पदवी कठोर शिरताजकी ॥
कौनजानै कौनेधों सुकृतकी भलाईवश,
भामिनि भई तू मनभाई ब्रजराजकी ॥ २५ ॥

अथ स्तुतिव्याज निंदा—कवित्त ॥

गोरसको बेंचिबो बिहायकै गँवारिनि,
अहीरिनि तिहारे प्रेमपालिबेको क्योंअरै ।
एतेपर चाहिये जो रावरेको कोमल,

हियेको वह आपने कठोर कुचसों डरै ॥
दास प्रभु कीन्हीं भली दीन्हीं यों सजाइ अब,
नीके निशि बासर बियोगानलमें जरै ।
हौजू ब्रजराज सब राजनके राज तुम,
बिनु आजु ऐसी राजनीति और को करै ॥ २६ ॥

स्तुतिव्याजस्तुतिवर्णनम् ॥

दोहा—दास नन्दके दासकी, सरि न करै पुरहूत ॥
विद्यमान गिरिवर धरन, जाको पूतसपूत ॥ २७ ॥
अमल कमलकी है प्रभा, बालबदनके डौर ॥
ताकोनित चुम्बन करै, धन्यभाग्य तुअ भौंर॥२८॥

अस्यतिलक ॥

पहिलेमें दोऊ प्रस्तुतहैं प्रस्तुतांकुरमें मिलतुहैं दूजो बदन प्रस्तुतहै अप्रस्तुत प्रशंसामें मिलतुहै ॥

अथनिंदाव्याजनिंदावर्णनम्—यथा ॥

दोहा—नहिं तेरो यह विधिहुको, दूषण काग कराल ॥
जिन तोहूँ कलरवहुको, दीन्हों बास रसाल ॥२९॥
दई निर्दयीसों भई, दास बडीहै भूल ॥
कमलमुखीको जिन कियो, हियो कठिनई मूल३०॥

व्याजस्तुतिअप्रस्तुतप्रशंसासोमिलित ॥

दोहा—बात इती तोसों भई, निपट भली करतार ॥
मिथ्याबादी कागको, दीन्हयो उचित अहार ॥३१॥
जाहि सराहत सुभट तुम, दश मुख बार अनेक ॥

सुतो हमारे कटकमें, ओछो धावन एक ॥ ३२ ॥

यथा—कवित्त ॥

काहू धनवंतको नकबहूं निहारचो मुख,
काहूके नआगे दौरिवेको नेम लियोतैं ॥
काहूको नऋणकरै काहूके दिएही विन,
हरोतिन अशन बसन छोडि दियोतैं ॥
दास निज सेवक सखासों अविदूर रहि,
लूटै सुखभूरिको हरष परिहियोतैं ॥
सोवतोसुरुचि जागि जोवतो सुरुचि धंध,
बंधव कुरंग कहिं कहा तपु कियोतैं ॥ ३३ ॥

यथा—सवैया ॥

तेहूं सबैं उपमानते भिन्न विचारतहीं बहुद्योस मरोपचि ॥
दासजू देखे सुनै जु वही अतिचिंतानिके ज्वर जातखरो तचि
सोऊ बिनाअपनो अनु रूपको नायकभेंटव्यथानि रहीखचि
ए करतार कहा फलपाये तू ऐसी अपूरव रूपवती रचि३४

अथ आक्षेपालंकारवर्णनम् ॥

दोहा—जहां वराजिये कहि इहै, अवशि करो यह काज ॥
मुकुर परत जेहि बातको,मुख्य वही जहँ राज ३५॥
दुखी आपने कथनको, फेरि करै कछु और ॥
आक्षेपालंकारके, जानो तीनों ढ़ौर ॥ ३६ ॥

आयसु मिस बराजिवो—सवैया ॥

जैये विदेश महेश करो उतपात तिहारी सवै बनिआवै ॥

प्रीतमको बरजै कछुकाममें वाम अपानिनिके पद्दुपाँव ॥
एतीविनयकरो दासनिसों कहिजाइवी नेकु विलंबु न लावै॥
काहू पयान करो तुम तादिनमोंहिलै देवनदी नहवावै॥ ३७॥

अथ निषेधाभास वर्णनम्—सवैया ॥

आजुते नेहकोनातो गयो तुमने मगह्योंहौंहू नेम गहोंगी ॥
दासजू भूलि नचाहिये मोहिं तुम्हैं अब क्योंहू न होंगी ॥
वा दिनमेरी प्रयंकमें सोएहो हो यह दाउ लहों पै लहोंगी॥
मानो भलो कीबुरो मनमोहन शयन तिहारी में स्वैहीरहोंगी

अथ निजकथनको दूषण भूषणवर्णनम् ॥

दोहा—तुअ मुख विमल प्रसन्न आति, रह्यो कमलसों फूलि ।
नहिं नाहिं पूरण चंद्रसों, कमल कह्यो मैं भूलि॥ ३९॥
जियकी जीवनिमूरि मम, वह रमनी रमनीय ।
यहो कहतहों भूलिकै, दास वही मोजीय ॥ ४० ॥

अथ परजायोक्तिअलंकारवर्णनम् ॥

दोहा—कहिय लक्षणा रीतिलै, कछु रचनासो बैन ॥
मिसुकरि कारज साधिवो,परजायोक्ति सुऐन ॥ ४१॥

अथ रचनासो वयन यथा—सवैया ॥

जा तुव वेनीके बैरीके पक्षकी राजी मनोहर शीशचढाई ॥
दासजू हाथ लियेरहै कंठ उरोज भुजाचख तेरेको भाई ॥
तेरेही रंगकी जाकीपटा जिन तोरद ज्योतिकी माल बनाई
तो मुख केतो हरायल आजू दई उनकोआति हायलताई४२

मिसुकरि कारज साधिवो—कवित्त ॥

आजु चन्द्रावलि चंपलतिका बिशाखाको,

पठाई हरि बागते कलामैं कारि कोटि कोटि ॥
सांझसमै वीथिनमें ठानि दृग मीचनोभो ॥
राई तिन्ह राधेको जुगुतिकै निखोटि खोटि ॥
ललिताके लोचन मिचाइ चंद्रभागासों,
दुराइवेको ल्याई वै तहांई दास पोटि पोटि ॥
जानिजानिधारी तियवाना लरवरी ताकि,
आली तिहि घरी हँसि हँसि परी लोटि लोटि॥४२॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्री-
बाबूहिंदूपतिविरचितेकाव्यनिर्णयेअन्योक्त्याद्यलंकारवर्ण-
नंनामद्वादशोल्लासः ॥ १२ ॥

अथविरुद्धालंकारवर्णनम् ॥

दोहा–विविध रुद्ध विभावना, व्याघातहि उर आनि ॥
विशेषोक्तिअरुसंगतौ, विषमसमोक्ति छ जानि॥ १॥

विरुद्धालंकारलक्षणम् ॥

दोहा--कहत सुनत देखत जहां, है कछु अनमिल बात ॥
चमत्कार युत अर्थ युत, सो बिरुद्ध अवदात ॥ २॥
जाति जाति गुणजातिअरु, कृपा जाति अवरेख ॥
जातिद्रव्य गुणगणाक्रिया, क्रिया क्रिया गुण लेख३॥
क्रिया द्रव्य गुणद्रव्य अरु, द्रव्य द्रव्य पहिंचानि ॥
ए दशभेद बिरुद्धके, गनो सुमति उरआनि ॥ ४ ॥

जाति जातिसों विरुद्ध ॥

दोहा--प्राण न हरत न धरत उर, नेकु दयाको साजु ॥
एरी यह द्विजराजभो, कुटिल कसाई आजु ॥ ५ ॥

अस्यतिलक ॥

यामेंरूपक अपरांगहै जाति गुणनसोंविरुद्ध ॥

दोहा--दरशावत थिर दामिनी, केलि तरुणिगतिदेत ॥
तिल प्रसून सुरभितकरत,नूतन विधि झखकेत॥६॥

अस्य तिलक ॥

यामें रूपकातिशयोक्ति अपरांगहै जातिक्रियासों विरुद्धहै ॥

कवित्त ॥

पंगुनिको पगहोते अंधनको आशामग,
एकैजान ह्वैकै जग कीरति चलाई है ॥
विरचो बितान वैजयंती वारि गहै थांभै,
वाससी बिलासी विश्वविदित बडाई है ॥
छायाकरै जगको थहाया करै ऊंचो नीचो,
पायजिहिवंशकेमै बढति सदाईहै ॥
कान्ह मुखलागीकरै करम कसाइनको.
वाहीवंश बांसुरी जनमजरी जाई है ॥ ७ ॥

जाति द्रव्यसों विरुद्ध ॥

दोहा- चंद्र कलंकित जिनकियो; कियोसकंटमृणाल ॥
वहै बुधनि बिरहीकरै, अविवेकी करताल ॥ ८ ॥

गुणगुणसोंविरुद्ध ॥

दोहा-प्रिया फेरि कहि वैसहीं, कारि बियलोचन लोल ॥
मोहिं निपट मीठीलगै, यह तेरो कटुबोल ॥

क्रिया क्रियासोंविरुद्ध ॥

दोहा-शिव साहिब अचरज भरो, सकल रावरो अंग ॥

क्योंकामहि जारयो कियो, क्यों कामिनि अरधंग१०

गुणक्रियासोंविरुद्ध—कवित्त ॥

दक्षिणपौन त्रिशूल भयो त्रिगुनै नहिं जाने कि शूल है कैसो
सीरो मलैज गन्यौमैं बहूदुख देनको भो अहिसंगी अनैसो॥
वारिजहूं विपरीति लियो अव दास भयो अब औसर ऐसो
जाहि पियूष मयूष कहै वहै कामकौ रजनीचर कैसो११॥

गुणद्रव्यसों विरुद्ध ॥

दोहा—दास छोंडि दासीपनो, कियो न दूजो तंत ॥
भावी वश तिहि कूबरी, लह्यो कंत जगकंत ॥१२॥

क्रियाद्रव्यसों विरुद्ध ॥

दोहा—केश मेद कच हाडसों, बवै त्रिवेणीखेत ॥
दास कहा कौतुक कहौं, सुफल चारि लुनि लेत१३

द्रव्य द्रव्यसों विरुद्ध ॥

दोहा—जोपट लह्यो बघम्बरी, सज्योचन्द्र नखभाल ॥
डौंर व्याल त्यों संग्रहो, तजि मुरली बनमाल॥ १४

याकीसंसृष्टि—सवैया ॥

नेह लगावत रूखी परी नत देखि गही अतिउन्नतताई ॥
प्रीति बढावत वैरबढायो तू कोमली बात गही कठिनाई ॥
जेती करी अनभावती तू मनभावती तेती सजाइको पाई॥
भाकसीभौन भयो शशिसूर मलै बिषज्यों शरसेजसोहाई

अथविभावनालंकार ॥

दोहा—विनकै लघुकारणनिते, कारज परगट होइ ॥
रोकतहूं करि कारनी, वस्तुनिते विधिसोइ ॥१६ ॥

कारणते कारज कछू, कारजहीते हेतु ॥
होती छविधि विभावना, उदाहरन कहिदेतु॥ १७॥

विनकारणकारजविभावना–कवित्त ॥

पीरी होत जाति दिन रजनीके रंग बिन,
जीरो रहै बूडत तिरत बिन वारिहीं ॥
विषके वगारै विन वाके सब अंगानि,
विसारे करिडारेंहैं विलोकनि तिहारिहीं ॥
दास बिनचलै ब्रज बिनहीं चलाये यह,
चरचा चलैगी लाल बीते दिन चारिहीं ॥
हाय यह वनिता बरीरी बिनबारेहीं,
जरीरीबिनजारेही मरीरी बिनमारिहीं ॥ १८ ॥

थोडेहीकारणकारजविभावनालंकार–सवैया ॥

राखतहै जगकी परदाकहँ आपु सजे दिगअंबर राखैं ॥
भांग विभूति भंडार भरीपै भरे गृह दासके जो अभिलाखैं
छाहँ करैं सबको हरजू निज छाहँको चाहतहैं वटशाखैं ॥
वाहनहै बरदायकपै बरदायक बाजि औ वारनलाखैं॥ १९॥

रोकेहूंकाजकीसिद्धि विभावना ॥

दोहा–तुअ वेनी व्यालनिरहै, बांधी गुणनिबनाइ ॥
तऊ वाम ब्रजइंद्रको, बदी बदा डसिजाइ ॥ २०॥

अस्यातिलक ॥

यहां रूपक अपरांगहै ॥

अकारणीवस्तुते विभावना–सवैया ॥

पाहन पाहनते कढै पावक केहू कहूं यह बात फबैसी ॥

काठहु काठसों झूठो न पाठ प्रतीति परै जग जाहिरजैसी।
मोहन पानिपके सरसेर सरंगकी राधे तरंगिनि ऐसी॥
दास दुहूंके मिले बिछुरेउपजी यहदारुणआगिअनैसी२१॥

अस्यतिलक॥

इहां उपमा अपरांगहै॥

कारणतेकारजविरुद्ध॥

दोहा–श्रीहिंदूपति तेग तुव, पानिप भरी सदाहिं॥
अचरज याकी आँचसों,आरिगण जरिजारि जाहिं२२

कारणते कारजकी विभावना–सवैया॥

सखि चैतहै फूलनको करता करनेसु अचेत अचैन लग्यो॥
कहि दास कहा कहिये कलरौंहिजु बोलनवैकल वैन लग्यो
जग प्राण कहावत गौनके पौनहूं प्राणनको दुख देनलग्यो।
यह कैसो निशाकरमोहिबिनापियसांकरकैजिय लेनलग्यो।
दोहा–दास कहा कौतुक कहौं, डारि गरे निज हार॥
जैतुवार संसारको, जीति लेत यह दार॥ २४॥

कारजते कारणविभावना॥

दोहा–चंद्र निरखि सकुचत कमल, नहिं अचरज नँदनंद॥
यह अचरज तिस मुखकमल,निरखि जु सकुचत चंद।
फेरि काढिवी बारिते, वारिजात दनुजारि॥
चलि देखो जहँ कढत दृग, वारिजातते वारि॥ २६॥

अथव्याघात अलंकारवर्णनम्॥

दोहा–जाहि तथा कारी गनै, करै अन्यथा सोउ॥
काहू शुद्ध विरुद्धही, है व्याघातै दोउ॥ २७॥

तिलक तथा कारी अन्यथाकारी ॥

दोहा--जे जे वस्तु संयोगिनिन, होत परमसुखदानि ॥
ताही चाहि वियोगिनिन, होत प्राणकी हानि २८॥
दास सपूत कपूतही, गथ बल होइ नहोइ ॥
इहै कपूतहुकी दशा, भूलि न भूलै कोइ ॥ २९ ॥
तवस्वभाव भामिनि वहै, मोहियहै संदेह ॥
सौतिन्हको रूखी करै, पिय हिय भरै सनेह॥ ३०॥

काहूकोविरुद्धहीशुद्ध ॥

दोहा--लोभी धन संचयकरै, दारिदकी डर मानि॥
दास यहै उरमानिकै, दानदेतहै दानि ॥ ३१ ॥
मुनिगण जप तप करि चहै, शूली दरशन चाउ ॥
जिहि न लहै शूली यही, तस्कर चहै उपाउ॥ ३२॥

यथा-सवैया ॥

वाअधरारस रागी हियो जियपागी वहै छवि दास विसाली
नैनन सूझि परै वहै सूरति वैनन बूझिपरै वहै आली ॥
लोग कलंक लगाइहि वीत्यो लुगाई करौंकियो कोटिकुचाली
वादि व्यथा सखि क्यों न सहैरी गहै नभुजाभरिकयौवनमाली

विशेषोक्तिवर्णनम् ॥

दोहा-हेतुघनेहूं काजनाहिं, विशेषोक्ति नसंदेह ॥
देहदशा निशिदिन बरै, घटै न हियको नेह ॥३४॥

यथा- सवैया ॥

नाभि सरोवरी औ त्रिवलीके तरंगनि पैरतही दिनरातिहै॥
बूडीरहै तनु पानिपहीमें नहीं बनमालहूमें बिलगातिहै ॥

दासजूप्यासी नईअँखियां घनश्याम विलोकताहिंअकुलातिहै
पीवोकरैअधरामृतहूको तऊइनकीसखिप्यास न जातिहै २५

असंगतिअलंकारवर्णनम् ॥

दोहा–जहँ कारणहै और थल, कारज औरै ठाम ॥
अनत करनको चाहिये, करै अनतहीं काम॥२६॥
और काज करने लगै, करै जु औरै काजु ॥
त्रिविधि असंगति कहतहैं.सुकविनके शिरताजु२७

यथा–कारजकारणभिन्नथल ॥

दोहा दास द्विजेश घरानमें, पानिप बढ्यो अपार ॥
जहां तहां बूडे अमित,वैरिनके परिवार ॥ २८ ॥

यथा–कवित्त ॥

रीति तुव सौतिनकी कैसी तुवमाडै मुख,
केशरिसों उनको बदनहोत पियरो ॥
तेरे उरभार उरजातनको अधिकात,
उनको दरकि एकै अकुलात हियरो ॥
दास तुवनैननमें विधिने लोनाईभरी
उनको किरिकिरीते सूझत न नियरो ॥
पानिप समूह सरसात तुव अंगनमें,
बूडि बूडि आवतहै उनको क्यों जियरो ॥

यथा–कवित्त ॥

मोमति पैरन लागी अली हरिप्रेमपयोधिकी बात नजानी ॥
दास थक्यो मनशंक वहीगई बूडि कुलरीति कहानी ॥

फूलि उठ्यो हियरो भरि पानिप लाजभरी बहुरोउतरानी ॥
अंगदहै उपचारकी आगि सुकैसी नई भई रीति सयानी ४०

और थलकी क्रिया और थल ॥

सोरठा—मैं देख्यो वन न्हात, रामचन्द्र तुव अरितियन्ह॥
कटितट पहिरे पात, दृग कंकन करमें तिलक४१॥

यथा—कवित्त ॥

लाहु कहा खयें वेंदीदिये औ कहाहै तरौनाके बाहुगढाये ॥
कंकन पीठि हिये शशि रेखकी बात बनै बलिमोहिं बताये
दास कहा गुण ओठमें अंजन भालमें जावकलीकलगाये ॥
कान्हसुभायहीं बूझतहौं मैं कहाफल नैनन पानखवाये४२॥

और काज अरंभिये, और करिये ॥

दोहा—प्रगटभये घनश्याम तुम, जगप्रतिपालन हेत ॥
नाहक व्यथा बढाइ क्यों,अबलनिको जियलेत४३

यथा—सवैया ॥

आनंद बीजबयो अँखियांनि जमायी व्यथानिकी जीमें जईहै
बोलिपठायोचवाईकी जो ब्रज धामनि धामनि फैलिगई है॥
दास देखाइकै तांयरिफूल फली दयो आनि किसानमईहै॥
प्रीति बिहारीकी मालिनिरी इहिं बारीमेंरीति बगारीनईहै॥

अस्य तिलक ॥

यामें रूपकको संकर है ॥

अथविषमालंकारवर्णनम् ॥

दोहा—अनमिल बातनको जहां,परत कैसहूं संग ॥
कारणको रँग औरई, कारज औरै रंग ॥ ४५ ॥

करता को न क्रिया सफल, अनरथही फल होइ ॥
विषमालंकृत तीनिविधि, वर्णत है सबकोइ॥४६॥

अनमिलितबातनकोविषमालंकारवर्णनम् यथा-सवैया ॥

किलकंचनसी वहअंगकहा कहरंग कदम्बिनिके तनुकारो।
कह सेजकली बिकली वह होइ कहा तुमतोइरहोगहिडारो ।
नितदासजूल्याउहल्याउकहौ कछुआपनोवाकोनबीचविचारो
वहकौलसीकोरी किशोरीकहा औकहागिरिधारनपाणितिहारो

कारणकारजभिन्नअंगकोविषमा-सवैया ॥

नैननमेंजल कज्जल संयुत पीय धरामृतकी अरुनाई ॥
दासभई सुधि बुद्धि हरी लखि केसरियापट शोभ सोहाई ॥
कौन अचंभो कहूं अनुरागी भयो हियरो जसउज्ज्वल ताई
सांवरे रावरे नेह पगेहीं परी तिय अंगनमें पियराई ॥४८॥

कर्ताको क्रियाफल नहीं ताको अनर्थ ॥

दोहा-हुत्यौ नीरचर हननको, किये तीर वकध्यान ॥
लीन्हों झपटि शचानतिहि,गयो ऊपरहिं प्रान४९॥

यथा ॥

दोहा-तुव कटाक्ष डर मन दुर्‌यो,तिमिर केशमें जाइ ॥
तहँ बेनी व्यालिन डस्यो,कीजै कहा उपाइ॥५०॥
सिंहीसुतकी मानिभय,शशा गयो शशिपास ॥
शशि समेत तहँ ह्वैगयो, सिंहीसुतको ग्रास॥५१॥

यथा-सवैया ॥

जिहि मोहिबे काजशृंगार सज्यौ,तिहि देखते मोहमें आइगई

न चितौनि चलाइ सकी उनहींके,चितौनिके घाइ अघाइगइ
वृषभानुलली की दशा सुनो दासजू, देत ठगौरीठगाइ गई॥
बरसाने गई दधिबेंचनको,तहँ आपुहि आपु विकाइगई ९२

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकु-
मारश्रीबाबूहिंदूपतिविरचिते काव्यनिर्णयेविरुद्धाद्य-
लंकारवर्णनंनामत्रयोदशोल्लासः ॥ १३ ॥

अथ उल्लास अलंकारवर्णनम्—छप्पय ॥

विविध भांति उल्लास अवज्ञानुज्ञाही गनि ।
बहुरचो लेस विचित्र तदगुनो स्वगुण दास भनि ॥
और अतद गुण पुर स्वरूप अनगुण अवरेखहि ।
मिलित और सामान्य जानि उन्मिलित विशेषहि॥
एहोत चतुर्दशभांति जो अलंकार सुनिये सुमति ।
सब गुण दोष प्रकार गनि,किये एकही ठौर थिति १

अथ उल्लासअलंकारवर्णनम् ॥

दोहा--औरैके गुण दोषते औरक गुण दोष
वर्णत यों उल्लासहै, कवि पंडित मतिचोष ॥ २ ॥

उल्लास गुणते गुणवर्णनम् ॥

दोहा--औरेके गुण औरको, गुण पहिले उल्लास ॥
दास संपूरण चंद्रलखि, सिंधुहिये हुल्लास ॥ ३ ॥
कह्यो देवसरि प्रगटह्वै,दास जोरि युगहाथ ॥
भयो सीय तुअ न्हानते, मेरो पावन साथ॥ ४ ॥

औरके गुणते औरको दोष ॥

दोहा–औरेके गुण औरते, दोष उलासै होत ॥
वारिद जगजीवन भरत, मरत आकके गोत ॥ ५ ॥
वास बगारत मालती, करि करि सहज विकास ॥
पिय विहीन बनितानि हिय, यथा बढत अन्यास ६

औरको दोष औरको गुण ॥

दोहा–दोष औरके औरको, गुणउल्लासै लेखि ॥
रघुपतिको वनवासभो, तपसिन्ह सुखद विशेषि ७
भलीभई करता कियो, कंटक कलित मृणाल ॥
तुवभुजानिकी जानि सब, उपमा देते बाल ॥ ८ ॥

औरको दोषते औरको दोष ॥

दोहा–उल्लासै जहँ औरके, दोष औरको दोष ॥
भये संकुचित कमलनिशि, मधुकर लह्यो न मोष९॥
अप्रस्तुत परशंस जहँ, अरु अर्थांतर न्यास ।
तहाँ होत अनचाहेहूं, विविध भाँति उल्लास ॥ १० ॥

अप्रस्तुत प्रशंसा यथा–सवैया ॥

है यह तो बनसेनुको जो लखिये सो सगांठि असारु कठोरै ।
दास ये आपुसमें इहिभाँति करै रगरो जिहिं पावक दौरै ॥
आपनऊं कुल संकुल जारि जरावतुहै सहबासके औरे ॥
रे जगबंदन चंदन तोहिं निवास किये इहि ठौर करोरै११॥

अवज्ञालक्षणम् ॥

दोहा–औरैके गुण औरको, गुणन अवज्ञा पाइ ।
बडे हमारे नैनसों, तुम्हैं कहा यदुराइ ॥ १२ ॥

निजसुघराईको सदा, जतन करै मतिमान ।
पितुप्रवीन ताको गरब, कीबो कौनु सयान ॥१३॥

अथ अवज्ञा ॥

दोहा–औरहि दोषन औरके, दोष अवज्ञा सोउ ।
मूढ सरित डारै सुरा, भूलि न त्यागत कोउ॥१४॥

यथा–कवित्त ॥

आक औ कनकपात तुम जो चबातहोतो,
षटरस व्यंजनको केहूँभांति लटिगो ।
भूषन बसन कीन्हें व्याल गजपालको तौ,
साल सुबरनको तौ पेन्हिबो उलटिगो ॥
दासके दयालुही सुरीतिही उचित तुम्हें,
लीन्हीं जो कुरीति तो तिहारो ठाट ठटिगो ।
ह्वैके जगदीश कीन्ह्यों बाहन वृषभ कोतौ,
कहा शिवसाहब गयंदनको घटिगो ॥ १५ ॥

अवज्ञा वर्णनम् ॥

दोहा–जहाँ दोषते गुण नहीं, यहो अवज्ञा दास ।
जहां खलनको गणवसै, तहाँ न धर्मप्रकाश ॥१६॥
काम क्रोध मद लोभकी, जाहिय बसी जमाति ।
साधु भावती भक्ति तहँ,दास बसै केहि भाँति॥१७॥
जहँ गुणते दोषो नहीं, येहो अवज्ञा वेश ।
रामनाम सुमिरन जहां तहां न शंकट लेश ॥ १८ ॥

यथा—सवैया ॥

कोरी कबीर चमार हरैदास जाट धना सधनाहो कसाई ।
गीध गुनाह भरोई हुत्यो भरि जन्म अजामिल कीन्हीं ठगाई
दास दई इनको गति जैसी न तैसी जपीनहु तपीन्ह पाई ।
साहेब साँचो नदोषगहै गुण एकलहै जो समेत सचाई॥१९॥

अनुज्ञा यथा ॥

दोहा—दोषहुमें गुण देखिये, ताहि अनुज्ञानाम ।
भलो भयो मग भ्रम भई, मिले बीच बनश्याम॥२०॥

यथा ॥

दोहा—कौन मनावै माननी, भई औरकी ओर ।
लालरहे छकि लखि ललित, लालबाल दृगकोर २१

अथ लेशालंकार वर्णनम् ॥

दोहा—जहाँ दोष गुण होतहैं, लेश वही सुखकंद ॥
छीनरूपह्वै द्वैजदिन, चंद्रभयो जगवंद ॥ २२ ॥
ललित लाल मुखमेलिकै, दियो गँवारन्ह फेरि ।
लीलि न लीन्ह्यो यह वडो, लाल जौहरी हेरि॥२३॥

लेश ॥

दोहा—गुणो दोषह्वैजातुहै, लेशरीति यह औरि ।
फलै सोहाए मधुरफल, आंबगये झकझोरि ॥२४॥

विचित्रालंकार वर्णनम् ॥

दोहा—करत दोषकी चाह जहँ, ताहीमें गुण देखि ।
तिहि विचित्र भूषण कहो, हिये चित्र अवरेखि२५॥

जीवन हित प्राणहि तजै, नवै उँचाई हेत ।
सुखकारण दुख संग्रहै, ऐसे भृत्य अचेत ॥ २६ ॥
दोष विरोधी केवलै, गनो न गुण उदोत ।
कछु भूषण विस्तरण गुण, रूपरंग रस होत ॥२७॥

यथा ॥

दोहा—तद्गुण तजिगुण आपनो, संगतिको गुण लेत ।
पाये पूरब रूप फिरि, स्वगुण सुमति कहिदेत२८॥

तद्गुण यथा—कवित्त ॥

पन्ना संग पन्नाहै प्रकाशत छनकुलै,
कनक रंग पुनि पै कुरंगनि पलतुहै ।
अधर ललाई ल्यावै लालकी ललकपाय,
अलक झलक मरकतसो हलतुहै ॥
ऊदो अरुनीहै पीत पाटल हरोहै ह्वैकै,
दुतिलै दुधांकी दास नैनन छलतुहै ।
समरथुनीके बहुरूपिआलौथानहीमें,
मोती नथुनीके वरबाने बदलतुहै ॥ २९ ॥

अस्य तिलक ॥

इहां अपरांग उपमाहै याते अंगांगि संकरहै ॥

दोहा—सखि तू कहै प्रवालभो, मुकुता हाथ प्रसंग ।
लख्यो डीठि चिहुँ टाइहौ, सुतोचिहुटनी रंग ॥ ३०॥

स्वगुण—सैवया ॥

भावतो आवतोजानि नवेली चँवेलीके कुंजजोबैठतीजाइकै

दास प्रसूनन सोन जुहीकरै कंचन शीतमज्योति मिलाइकै॥
चौंकिमनोरथहू हँसि लेन चलै पगुलाल प्रभामहिछाइकै॥
बीरकरै करबीरझरै निखिलै हरषै छबि आपनी पाइकै॥ ३१

अतद्गुणपूर्वरूप॥

दोहा-सुअतद्गुणकेहूं नहीं, संगतिको गुणलेत॥
पूर्वरूप गुणनहिंमिटै, भये मिटनके हेत॥ ३२॥

अतद्गुण यथा-कवित्त॥

केवांजवादिनसों उवट्यो सज्यो केसरिको अंगरागअपारो॥
न्हान अनेक विधान सरै रससंतमें संत करै नितडारो॥
दासजू हौं अनुराग भरो हियबीच बसाइकरों नहिं न्यारो॥
लीनशृंगार नहोत तऊ तन आपनो रंग तजै नहिं कारो३३।

पूर्वरूप-कवित्त॥

सारी सितासितपीरी रतीलिहूमें बगरावै वहै छबि प्यारी॥
आभा समूहमें अंबरको पहिंचानिये दास बडी किये ह्यांरी।
चंद्र मरीचिनिसों मिलि अंगन अंगनि फैलिरहै दुतिन्यारी॥
भौन अँध्यारेहू बीचगये मुखज्योतितितैवासियै होति उज्यारी॥
दोहा-हारिखड्गी अरु व्याल गज, आगे दौरत राज॥
राज्यछुटेहूं तुअ दुअन, बन लिये राजके साज॥ ३५

अनुगुण॥

दोहा-अनुगुणसंगतितेजहां, पूरणगुण सरसाइ॥
नीलसरोज कटाक्षलहि, अधिक नील ह्वैजाइ॥ ३६॥

यथा ॥

दोहा–यदपि हुती फीकीनिपट, सारी केसरिरंग ॥
दास तासु द्युति ह्वैगई, सुंदरिरंगप्रसंग ॥ ३७ ॥

यथा–मिलितालंकार ॥

दोहा–मिलित जानिये जहँ मिलै, क्षीर नीरके न्याइ ॥
है सामान्य मिलै जहाँ, हीरा फटिकसुभाइ ॥ ३८ ॥

मिलित यथा–कवित्त ॥

हुती बागमें लेत प्रसून अली मनमोहनऊ तहँआइपर्‌यो॥
मनभायो घरीकु भयो पुनि गेह चवाइनिमें मन जाइ पर्‌यो
द्रुतदौरि गई गृहदास तहां तव नाइवेनेकु उपाइ पर्‌यो ॥
धकस्वेद उसास खरोटनिको कछुभेद नकाहू लखाइ पर्‌यो

सामान्य यथा–मिलित ॥

दोहा–केसरियापट कनक तन, कनकाभरन शृंगार ॥
गत केसरि केदारमें, जानीजाति मदार ॥ ४० ॥

यथा–कवित्त ॥

आरसीको आंगन सुहायो छबिछायो,
नहरानिमें भरायो जल उज्ज्वलसुमनमाल ॥
चांदनी विचित्र लखि चांदनीविछौनापर,
दूरिकै सहेलिनिको बिलसै अकेलीबाल ॥
दास आस पास बहुभाँतिन विराजैं धरे,
पन्ना पुखराज मोती माणिक पदिक लाल ।
चंद्रप्रतिबिंबते न न्यारो होत मुख औ,

नतारे प्रतिबिम्बनिते न्यारो होत नग जाल ॥४१॥

उन्मिलितविशेष—यथा ॥

दोहा—जहाँ मिलित सामान्यमें, कछू भेद ठहराइ।
तहँ उन्मीलित विशेष कहि, वर्णत सुभग सुहाइ ४२

यथा—कवित्त ॥

शिखनख फूलनके भूषण विभूषितकै,
बांधिलीन्हीं बल या बिगत कीन्हीं वजनी।
तापर सँवारि श्वेत अंबरको डम्बर,
सिधारी श्याम सांनिधि निहारी काहू नजनी ॥
क्षीरके तरंगकी प्रभाको गहिलीनी तिय,
कीन्ही क्षीर सिंधु क्षिति कातिककी रजनी।
आननछटासों तनु छांहहूं छपाये जाति,
भौंरनकी भीर संग ल्याये जात सजनी ॥ ४३ ॥

यथा ॥

दोहा—यमुनाजलमें मिलि चली, उन अँसुवनिकी धार।
नीर दूरिते ल्याइअतु, जहँ न पाइअतु खार ॥४४॥

विशेष—यथा ॥

दोहा—मनमोहन मनमथनकी, द्वै कइतोको जान।
जो इनहूं कर कुसुमको, होतो बान कमान॥ ४५ ॥
भई प्रफुल्लित कमलमें, मुखछवि मिलित बनाइ।
कमलाकरमें कामिनी, विहरति होति लखाइ॥४६॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिन्दूपति विरचितेकाव्यनिर्णये उल्लासालंकारादिगुणदोषादिवर्णनंनामचतुर्दशोल्लासः १४॥

अथ समालंकारवर्णनम् ॥

दोहा--उचित अनुचिती बातमें, चमत्कार लखि दास ॥
अरु कछु मुक्तक रीति लखि,कहत एक उल्लास॥१॥
सम समाधि परिवृत्त गनि, भाविक हर्ष विषाद ॥
असंभवी संभावना, समुच्चयो अविवाद ॥ २ ॥
अन्योअन्य विकल्प पुनि, सह विनोक्ति प्रतिषेध ॥
विधि काव्यार्थापत्तियुत, सोरह कहत सुमेध॥ ३ ॥

समालंकारवर्णनम् ॥

दोहा--जाको जैसो चाहियै, ताको तैसो संग ॥
कारजमें सचुपाइयै, कारणहीको रंग ॥ ४ ॥
उद्यमकरि जोहै मिल्यो, उहै उचित धरिचित्त ॥
है विषमालंकारको, प्रतिद्वंदी समामित्त ॥ ५ ॥

यथा योग्यको संग--सवैया॥

अँग अंग विराजतुहै उनके इनहींके कनीनिकारंग सन्यो ॥
उन्हे भौंरकी भांतिबसाइवे कारणदास इन्हैं कलकंजभन्यो
लखिरी उनकोवशकीवेहीको इनको उनमें गुणजालतन्यो॥
घनश्यामको श्यामस्वरूपअलीइनआंखिनहीं अनुरूपबन्यो

दोहा--हरि किरीटकेकी पखनि,निज लायक थलपाइ॥६॥
मिल्यो चंद्रिकनि चांद्रिकानि,अनु अनुहैमनुजाइ ॥७॥

कारज योग्य कारण वर्णनम्--सवैया ॥

चंचलता सुर बाजिते दासजू शैलनते कठिनाई गहीहै ॥
मोहन रीति महाविषकी दई मादकता मदिरासों लहीहै ॥

धीवर देखि डरे जडसों बिहरै जलजंतुकि रीति यहीहै ॥
न्यायही नीचहि नीच फिरै यह इंदिरासागरबीचरहीहै८॥

उद्यम करि पायो सोई उत्तमहै ॥

दोहा-जो काननते उपजिकै, काननदेत जराइ ॥
ता पावकसों उपजि घन, हनै पावकहि न्याइ॥९॥
मधुप तुम्हें सुधि लेनको, हमैं पठाये श्याम ॥
सब सुधि मिलै बिसुधिकरी,अब बैठे केहि काम१०

समाधिअलंकारवर्णनम्॥

दोहा-क्योंहू कारजकी जतन, निपटसुगम ह्वैजाइ ॥
तासों कहत समाधि लखि, काकतालको न्याइ ११

यथा॥

दोहा-धीर धरहिं कत करहिं अब, मिलन जननकीचाह॥
होन चहत कछु दिवसमें, तो मोहनको व्याह १२॥

सवैया॥

काहेको दास महेश महेश्वरी पूजिबे काज प्रसूननतूरति ॥
काहेको प्रात अन्हाननकै बहुदाननदै व्रत संयम पूरति ॥
देखिरी देख अगोटिकै नैनन कोटि मनोज मनोहरमूरति॥
एईहैं लाल गुपाल अली जिहि लागि रहै दिन रैनि बिसूरति

परिवृत्तालंकार-वर्णनम् ॥

दोहा-कछु लीबो दीबो कथन, ताको विन्मय जानु ।
परिवृत्तालंकारहू, ताही कहत सुजानु ॥ १४ ॥

यथा-सवैया॥

तिय कंचनसों तनु तेरो उन्हैं मिलिकै भयोसौतुककोसपनो

उनको नगनीलसों गातहै तैसही तो वश दास कहा लपनो।
इनबातन तेरो गयो न कछू उनहीं डहकायो अली अपनो।
निजु हीरो अमोल दयो औ लयो यह द्वैपलको तुव प्रेमपनो

अथ भाविक अलंकारवर्णनम् ॥

दोहा—भूत भविष्यहु बातको, जहँ बोलत व्रतमान ।
भाविक भूषण कहतहैं, ताको सुमति सुजान१६॥

भूत भाविक वर्णनम्—कवित्त ॥

अजौं बाँकी भ्रुकुटी गडीहै मेरे नैन अजौं,
कसकै कटाक्ष उर छेदि पार ह्वै भई ॥
कज्जल जहरसो कहरकारि डारचो हुत्यो,
मंद मुसुकानि यों न होती जो सुधामई ॥
दास अजहूंलों दृग आगेते न न्यारेहोत,
पहिरे सुरंगसारी चूँदरी बधूनई ॥
मोही मोह दैकारि सनेह बीज वैकारि,
जुकंजओट कैकारि चितैकारि चलीगई ॥ १७ ॥

भविष्यभाविकवर्णनम्—कवित्त ॥

आजु बडे बडे भागनि चाहि बिराजतमेरुई भाग्यवन्यारो
दासजूआजुदयो विधि मोहिं सुरालयके सुखते सुखन्यारो ।
आजुमोभाल उदैगिरिमें उयो पूरब पुण्यको तारो उज्यारो
मोदमें अंग बिनोदमें जीवहुंकोदमें चोंदनी गोदमें प्यारो ॥

अथ प्रहर्षणअलंकारवर्णनम् ॥

दोहा—यत्नघनी कारि थाकिये, वांछित योहीं जासु ॥

बांछित थोरो लाभ अति, दैव योगते आसु ॥ १९

यत्नढूँढते वस्तुकी, वस्त्वै आवै हाथ ॥

त्रिविधि प्रर्षन कहतहों, लखि लखि कविता गाथ २०

यौंहीं वांछितफल यथा–सवैया ॥

ज्वालके जाल उसासानिते बढै देखो न ऐसी विहाल व्यथाती।

सीर समीर उसीर गुलाबके नीर पटीरहूते सरसाती ॥

श्रीब्रजनाथ सनाथ कियो मोहिं ज्याइलियोइहिलाइकै छाती

आजुहीं याके तनै यतनै जुतनै सब मेरी धरी रहिजाती २१

वांछितथोरो लाभअति–यथा ॥

दोहा–जा परिछाहीं लखनको, हारे परि परि पाँय ॥

भाग भलाई रावरी, वही मिली अब आय ॥ २२ ॥

यत्न ढूँढते वस्तुमिलै यथा–कवित्त ॥

भोरहींआइ जनीसों निहोरिकै राधेकह्यो मोहिंमाधोमिलायो

ताहि तकाइकै भौनगईवह आपु कछू करिवेको उपायो ॥

ताहि समयतहँ माधो गये दुखराधे वियोगको वाहिसुनायो

पाइकेसूनो निलै मिलि दूनो बढै सुखदूनो दुहूं उरआयो २३

चंद्रालोके यथा ॥

निध्यञ्जनोषधीमूलं खन्यतांशोधतै निधि ॥

अथ विषादलंकारर्णनम् ॥

दोहा–सो विषाद चितचाहते, अनचाह्यो ह्वैजाइ ॥

सुरतसमय पिकि पापिनी, कहूं दियो समुझाइ॥ २४॥

यथा--कवित्त ॥

मोहन आयो यहाँ सपने मुसुकात औ खात विनोदसोंबीरो
बैठो ह्रे पर्यंकमें होंहू उठी मिलिबे कहँ कैमनधीरो ॥
ऐसेमें दास बिसासिनि दासी जगायो डुलाइके वार जंजीरो ॥
होइ अकाथ गयो सजनी मिलिबो ब्रजनाथकोहाथकोहीरो

अथ असंभवालंकार वो संभावनालंकार--वर्णनम् ॥

दोहा--बिनजाने ऐसो भयो, असंभवै पहिंचानि ।
जो यों होइ तो होइ यों, संभावना सुजानि ॥२६ ॥

असंभवालंकार--यथा ॥

दोहा--छविमें ह्वैहै कूबरी, पविह्वैहै ये अंग ।
उद्धव हम जान्यो न यह, तुम ह्वैहो हरिसंग ॥ २७॥

यथा ॥

दोहा--हरिइच्छा सबते प्रबल, विक्रम सकल अकाथ ।
किन जान्यो लुटि जाहिंगी, गोपी अर्जुन साथ२८॥

अस्यातिलक ॥

यामें अर्थान्तर न्यासको संकर है ॥

अथ असंभावनालंकार यथा ।

दोहा--कस्तुरी थपि अंड विधि, वादिदयो मृगमीचु ।
मैंविधिहो तौ उरधरों, खलजीभनके बीचु ॥ २९ ॥
हुतो तोहिं दीवे हरिहि, जोपै विरह संताप ।

कुच संकरदे बीचबलि, तो क्यों कियो मिलाप ॥ ३० ॥

यथा—कवित्त ॥

आई मधु यामिनी न आये मधुसूदन जू,
राति न सिराति द्योस बीतत बलाइमैं ।
करते भली जो प्राण करते पयान आजु,
ऐसेमें न आली और देखती उपाइमैं ॥
कहों कहा दास मेरी होती तबै निशा जब,
राहुह्वैके निशाकर ग्रासती बनाइमैं ॥
हरूह्वैके जारि डारि मनमथ हरिजूके,
मनमाथिवेको होती मनमथजाइमैं ॥ ३१ ॥

अथ समुच्चयालंकार—वर्णनम् ॥

दोहा—एके करता सिद्धिको, औरै होहिं सहाइ ॥
बहुत होहिं इकबारके, द्वै अनमिल इकभाइ॥३२॥
ऐसी भांतिन जानिये, समुच्चयालंकार ॥
मुख्य एक लक्षण यही, बहुत भये इकबार॥३३॥

यथा—कवित्त ॥

दारंनि सितारानि कि तारनिकी तोरे मंजु,
तैसिये मृदंगनिकीध्वनि धुधुकारती ॥
चमके कनकनग भूषन बनक बने,
तैसीघुँघुरुनकी झनक मान झारती ॥
दास गर्वीली पगु मंक बंक भ्रुवनौनि,

तैसिये चितौनि सहसानि मोहिं मारती ॥
बांकी मृगनैनकी अचूकगति लेती मृदु,
हीरासों हियेको टूक टूक करिडारती ॥ ३४ ॥

यथा ॥

दोहा–धन यौवन बल अज्ञता, मोहमूल इक एक ॥
दास मिलै चारो तहां, पै ए कहां विवेक ॥ ३५ ॥
नातो नीचो गर परो, कुसँगनिवास कुभौन ॥
बंध्यातियको कटुवचन, दुखद घायको लौन ३६॥
पूतसुपूत सुलक्षणो, तनु अरोग धनधंध ॥
स्वामिकृपा संगति सुमति, सोनो और सुगंध३७॥

अस्य तिलक ॥

इहां दृष्टांतालंकार अपरांगहै सोनो सुगंध ॥

दोहा–संशय सकल चलाइकै, चली मिलन पियबाम ।
अरुन बदन करि आपनो, सौतिवदन करिश्याम ॥

अथ अन्योन्यालंकार–वर्णनम् ॥

दोहा–होत परस्पर युगलसों, सो अन्योन्य सुछंद ।
लसति चंद्रसों यामिनी, यामिनिहीं सों चंद॥३९॥

यथा ॥

दोहा–मोल तौलके ठीकबनि, इनकिय साँझ सकाम ।
कहँ निशि वढवति लेतगथ, कहि कहि लालहिश्याम
हरिकी औ हरिदासकी, दास परस्पर रीति ।
देतवै उन्हें वै उन्हें, कनक विभूति सप्रीति ॥४१॥

ज्यों ज्यों तनुधारा किये, जऊ प्यावति रिझवारि ।
पिये जात त्यों त्यों पथिक,बिरलो बोलसँवारि ४२॥

यथा-कवित्त ॥

बातैं श्यामा श्यामकी नवैसी अब आली श्याम,
श्यामा तकि भागै श्यामा श्यामसों जकीरहै ।
अबतो लखोई करै श्यामाको बदन श्याम,
श्यामके बदन लागी श्यामाकी टकीरहै ॥
दास अब श्यामाकी सुभाय मद छाक्यो श्याम,
श्यामा श्याम सोभनिके आसव छकीरहै ।
श्यामाके बिलोचनके हैरी श्याम तारे अरु,
श्यामा श्याम लोचनकी लोहित लकीरहै ॥ ४३॥

अथविकल्पालंकार यथा ॥

दोहा-है विकल्प यह कै वहै, यह निश्चयजहँराजु ॥
शत्रुशीश कै शस्त्र निज,भूमि गिराऊं आजु ४४॥

यथा कवित्त ॥

जाइ उसासनिके सँगछूटि कि चंचलाके चय लूटि लै जाहीं
चातक यातक पक्षिन देहिं कि लेहि घने घन जे घहराहीं ॥
दासजू कौन कुतर्क कियो करै जीवहै एकही दूसरो नाहीं ॥
पौनुहै अंतक भौनु सिधारो किमारो मनोभव लैशिरमाहीं॥

अथ सहोक्तिविनोक्तिलक्षणम् ॥

दोहा--कछुकछु संग सहोक्ति कछु, बिनशुभअशुभविनोक्ति
यह नहिं यह परतक्षहीं, कहिये प्रतिषेधोक्ति ॥४६॥

सहोक्ति यथा–कवित्त ॥

योग वियोग खरो हमपै वहि कूर अकूरके साथहीं आये ॥
भूख औ प्यासलों भोगबिलासलै दास वै आपनेसंग सिधाये
चीठीके संग बसीठी लेआइकै ऊधो हमें वहै आजु बताये
कान्हके साथ सयान सखा तुम कूबर कूबरबीच बिकाये ॥

यथा–कवित्त ॥

फूलनकेसंग फूलिहै रोम परागनके सँग लाज उडाइहै ॥
पल्लवपुंजके संग अली हियरो अनुरागके रंग रँगाइहै ॥
आयो बसंतरी कंतहितू अब बीर वदोंगी जो धीर धराइहै॥
साथ तरूनिके पातनिके तरुनीनिके कोपनि पातह्वैजाइहै॥

अथ विनोक्ति अलंकार यथा–सवैया ॥

सूधे सुधासने बोल सुहावने सूधो निहारिवो नैनसुधोहै ॥
शुद्धसरोज बँधेसे उरोजहै सूधेसुधानिधि सों मुखजोहै ॥
दासजू सूधे सुभायसों लीन सुधाई भरे सिगरे अंगसो है॥
भावती चित्त भ्रमावती मेरो कहांते भई येभई भईभौंहै४९

यथा–कवित्त ॥

देश बिनु भूपति दिनेश बिनु पंकज,
फनेज बिनु मणि औ निशेश बिनु यामिनी ॥
दीपविनु नेह औ सुगेह बिनु संपति,
अदेहबिनु देह घन मेहबिनु दामिनी ॥
कविता सुछंदबिनु मीन जल वृंद बिनु,
मालती मलिंदबिनु होती छबि छामिनी ॥

दास भगवंतबिनु संत अति व्याकुल,
बसंतबिनु लतिका सुकंत बिनु कामिनी ॥ ९० ॥

यथा—कबित्त ॥

नेगी बिनु लोभको पटैत बिनु क्षोभको,
तपस्वी बिनु शोभाको सतायो ठहराइये ॥
गेहबिनु पंकको सनेहबिनु शंकको,
सदाबिनु कलंकको सुवंशसुखदाइये ॥
विद्याबिनु दंभ सूत आलस विहीनु दूत,
विना कुव्यसन पूत मन मध्य ल्याइये ॥
लोग बिनु जप योग दास देह बिनुरोग,
सोग बिनु भोग बडे भागनिते पाइये ॥ ९१ ॥

प्रतिषेध यथा—कवित्त ॥

गेयन्ह चरैबो नहीं गिरिको उठैबो नहीं,
पावक अचैबोहै न पाहनको तारिबो।
धनुष चढैबो नहीं बसन बढैबो नहीं,
नागनाथि लैबोहै न गणिका उधारिबो ॥
मधु मुर मारिबो बकासुर विदारिबो,
नवारन उबारिबो न मनमें विचारिबो।
ह्याँतेहै न जैबो पेस सुनो राम भुवनेश,
सबते कठिन वेस मेरो क्लेश टारिबो ॥ ९२ ॥

अथ बिधिअलंकार वर्णनम् ॥

दोहा—अलंकार विधि सिद्धिको; फेरि कीजिये सिद्धि ।

भूपतिहै भूपति वही, जाके नीति समृद्धि ॥ ९३ ॥

यथा ॥

दोहा–धरे कॉच शिर औ करे, नगको पगनि वसेर ।
काँचही कॉचही नगनगै, मोल तोलकी बेर ॥ ९४ ॥

सवैया ॥

रेमन कान्हमें लीनजो होहि तौ तोहूकोमें मनमें गनिराखों॥
जीवजो हाथ करे ब्रजनाथतौ तोहिमें जीवनमें अभिलाखों॥
अंग गुपालके रंग रंगे तौहों अंग लहैको गहै फल चाखों ॥
दासजूधागहैश्यामकोराखोतौतारिकातोहिमैंतारिकाभाखों

अथ काव्यअर्थापत्ति लक्षणम् ॥

दोहा–यहै भयो तो यह कहा, इहिविधि कहा बखान ॥
कहत काव्यपद सहित तिहि, अर्थापत्ति सुजान९६
बंधुजीवके दुखदहै, अरुणअधर तुअ बाल ।
दासदेत यों क्यों डरै, परजीवन दुखजाल ॥ ९७ ॥
मैं वारों जा वदनपर, कोटि कोटिशत इंदु ॥
तापर ये वारै कहा, दास रुपैयावृन्द ॥ ९८ ॥

यथा–सवैया ॥

चंद्रकलासों कहायो कहूंते नखक्षत एक लग्यो उर तेरे ॥
सौतिनके मुख पूरण चंद्रसों ज्योतिविहीन भयो जिहि नेरे।
कातिकहूको कलानिधि पूरो कहा कहि सुंदरि तोमुख हेरे॥
दासइहैउनमानिकै अंग सराहिबो राखिलियो मनमेरे॥९९॥

इतिश्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिन्दूपतिविरचितेकाव्यनिर्णयेसमालंकारादिवर्णनन्नामपंचदशोल्लासः॥१५॥

अथ सूक्ष्मालंकारवर्णनम् ॥

दोहा—सूक्षम पिहितो युक्ति गनि, गूढोत्तर गूढोक्ति ॥
मिथ्याध्यवसायोललित, विव्रतोक्ति व्याजोक्ति ॥ १ ॥
परिकर परिकर अंकुरो, इग्यारह अवरेखि ॥
ध्वनिके भेदनमें इन्हैं, वस्तुव्यंजकै लेखि ॥ २ ॥

सूक्ष्मालंकारवर्णनम् ॥

दोहा—चतुर चतुर बातैं करै, संज्ञा कछु ठहराइ ॥
तिहि सूक्ष्म भूषण कहैं, जे प्रवीन कविराइ ॥ ३ ॥

यथा—कवित्त ॥

आजु चंद्रभागा वहि चंद्रबदनीपै आली,
नृत्यतकरन आई मोरके परनको ॥
यह्यों समुझि कहा बेणी गहि रही तब,
बाहू दरशायोरी बधूपकें दरनको ॥
दास याहि परस्यो कहाधों उरजात उहि,
परस्यो कहाधों दोऊ आपने करनको ॥
नागरि गुणागरि चलत भई ताही क्षण,
गागरिलै रीती यमुनाजल भरनको ॥ ४ ॥

अथ विहितालंकारवर्णनम् ॥

दोहा—जहाँ छपी परबातको, जानि जनावै कोइ ॥
तहाँ विहितभूषणकहैं, छपे पहेली सोइ ॥ ५ ॥

विहित—यथा

दोहा—लाल भाल रँगलाल लखि, बाल न बोली बोल ॥

लजित कियो ता दृगनको, कै सामुहें कपोल ॥६॥
परमापियासीपद्मदृागि, प्रविसी आतुर तीर ॥
अंजलि भरि क्यों तजि दियो,पियो न गंगानीर॥७॥
केलि फैलहूं दासजू, मणिमय मन्दिर दार ॥
विन पराध क्यों रमनको, कीन्हों चरनप्रहार॥ ८ ॥

अथ युक्त्यालंकारवर्णनम् ॥

दोहा–क्रियाचातुरीसों जहाँ, करै बातको गोप ॥
ताहि युक्ति भूषणकहैं, जिन्हैं काव्यकी चोप ॥ ९ ॥

यथा–कवित्त ॥

होरी कि रैनि विताइ कहूं पिय प्रातिम भोरहिं आवतजोयो।
नेकु नबाल जनाइ भई जऊ कोपको बीज गयो हिय बोयो॥
दासजू दैदै गुलालकीमारनि अंकुरिवो उहि बीजको खोयो॥
भावतो ओठको अंजन भालको जावकहीको नखक्षतमोयो

गूढोत्तर लक्षणम् ॥

दोहा–अभिप्रायते सहित जो, उत्तर कोऊ देइ।
ताहि गूढ उत्तर कहत, जानि सुमतिजन लेइ॥ ११॥

यथा–सवैया ॥

नीरके कारण आई अकेलीपै भीर परे संग कौनको लीजै॥
छांउ नकोऊ नयो दिवसोऊ अकेले उठाइ घडोपटभीजै ॥
दास इते लिरुवाहुको ल्याइ भलो जलन्याइवो प्याइजैपीजै
एतो निहोरो हमारो लला घटऊपर नेकु घटो धरिदीजै।१२॥

गूढोक्ति यथा-सवैया ॥

दासजून्योतेगईकछुघोसकोकालिहुतेह्यांनपरोसिन्योआवति।
हौंहींअकेलीकहांलोंरहोंइन आँधीअंधानिकोज्योंबहरावति।
प्रीतम छाइरह्यो परदेश अंदेश यहै जुसँदेश न पावति ॥
पंडितहौ गुणमंडितहौ महिदेव तुम्हैं सगुनौतिऔआवति ॥

मिथ्याध्यवसायलक्षणम् ॥

दोहा--एक झुठाई सिद्धिको, झूठो वरणै और ॥
सो मिथ्याध्यवसाइहै, भूषणकवि शिरमौर ॥१४॥

यथा-कवित्त ॥

सेज अकाशके फूलनकी साजि सोवती दीन्ही प्रकाशकिवारें
चौकीमें बांझके बेटरहैं बहु पाँय पलोटती भूमिकितारें ॥
सीरेमें दास बिहार करौ अहि रोम दुशालो नयो शिरडारें॥
कौनको हो तुम झूठी कहौ मैं सदा बसती उरलाल तिहारें॥

ललितालंकारवर्णनम्

दोहा--ललित कह्यो कछु चाहिये, ताहीको प्रतिबिंब ॥
दीपबारि देख्यो चहै, कुरजू सूरजबिंब ॥ १६ ॥

कवित्त ॥

कंठकटीलिका बागनमें बयो दास गुलाबनदूरिकै दीजे ॥
आजुते सेज अंगारनकीकरो फूलनको दुखदानि गनीजे ॥
ऊधोअहीरिनिके गुरुहौ उनको शिर आयसुमानिहि लीजे॥
गुंजके गंज गहो तजि लालनि डारि सुधाविष संग्रह कीजे॥

यथा—कवित्त ॥

बोलनिमें किलकोकिलके कुल कीकलई कबधों उघरैगी ॥
कौन घरी इहिं भौन जरे उतरेको बसंत प्रभानि भरैगी ॥
हाइ कबै यह क्रूर कलंकी निशाचरके मुख छारपरैगी ॥
प्राणप्रिया इन नैननको किहि द्यौस कृतारथ रूप करैगी १८

अथ बिब्रतोक्ति ॥

दोहा—जहाँ अर्थ गूढोक्तिको, कोऊ करै प्रकाश ॥
बिब्रतोक्ति तासों कहै, सकलसुकविजन दास॥१९॥

कवित्त ॥

नैनन चाहैं हँसोहैं कपोल अनंदसों अंगन अंग अमालहै॥
दासजू स्वेदनि सोभजगीपरै प्रेमपगीसी डगी थहरातहै ॥
मोहिं भुलावै अटारीचढी कहि कारीघटा बगपांतिसोहातहै।
कारी घटा बगपांति लखें इहिभांति भयेकहिकौनके गातहै

दोहा—कियो सरस तन कोरही, तनको रही न ओट।
लखि सारी कुचमें लसी, कुचमें लसी खरोट ॥२१॥

यथा—कवित्त ॥

द्वारखरी नवला अनूपम निरखि,
उतरतभो पाथिक तहीं तन मन हारिकै।
चातुरीसों कह्यो इत रह्यो हम वेहैं नहीं,
तायो जात उन्नत पयोधर निहारिकै ॥
दास तिन उत्तर दयोहै यों वचन भाषि,
राखिकै सनेह सखि मतिको निवारिकै ॥

ह्यांतोहै पषाण सब मशक न देहैं कल,
रहिये पथिक शुभ आसन विचारिकै ॥ २२ ॥

अथ व्याजोक्ति ॥

दोहा—वचन चातुरी है जहां, कीजै काज दुराउ ।
सो भूषण व्याजोक्तिहै, सुनो सुमति समुदाउ॥२३॥

यथा—सवैया ॥

अबहीं किहै बातहों न्हातहुतीअचकागहिरे पगजातभयो॥
गहि ग्राह अथाहकोलैहीचल्योमनमोहन दूरिहितेचितयो ॥
द्रुत दौरिकैपौरिकैदास बरोरिकैछोरिकै मोहिं जिआइलयो॥
इन्हें भेटतभेटिहौंतोहिं अलीभयो आजुतोमो अवतारनयो॥

यथा—कवित्त ॥

तेरी खीझिबेकी हूस रीझि मनमोहनकी,
याते वहै स्वांग साजि साजि नित आवतो ॥
आपुहीते कुंकुमकी छाप नखछतगात,
अंजन अधर भाल जावक लगावतो ॥
ज्यों ज्यों तू अयानी अनखानी दरशावै त्यों त्यों
श्यामकृत आपने लहेको सुखपावतो ॥
उनहीं खिस्यावै दास हँसि जो सुनावै तुम,
यौंहू मनभावते हमारे मनभावतो ॥ २५ ॥

अथ परिकरांकुरपरिकर—यथा ॥

दोहा—परिकर परिकर अंकुरो, भूषण युगल सुवेष ॥
साभिप्राय विशेषनो, साभिप्राय विशेष ॥ २६ ॥

परिकरालंकारवर्णनम् ॥

दोहा--वर्णनीयके साजको, नाम विशेषणजानि ॥
सोहै साभिप्रायतो, परिकर भूषणमानि ॥ २७ ॥

यथा—सवैया ॥

भालमें जाके कलानिधिहै वह साहब ताप हमारी हरैगो ॥
अंगमें जाके विभूति भरी वह भौनमें संपाति भूरि भरैगो ॥
घातकहै जु मनोभवको मन पातक वाहीको जारो जरैगो ॥
दास जु शीशमें गंग धरेरहै ताकी कृपा कहो कौनतरैगो २८

अथ परिकरांकुर वर्णनम् ॥

दोहा--वर्णनीय जुविशेषहै, सोई साभिप्राय ॥
परिकर अंकुर कहतहै, तिहि प्रवीन कविराय ॥ २९ ॥

यथा—कवित्त ॥

भालमेंव्यामुकैह्वैकै बलीविधि बांकी भ्रुवैं बरुनीनमेंआइकै ॥
ह्वैकै अचेत कपोलनह्वैविछल्योअधराकोपियोरसधाइकै ॥
दासजूहासछटामनचौंकिछनैकमे ठोढीके बीच विकाइकै ॥
जाइउरोजसिरेचढिकूद्योगयोकटिसोत्रिबलीमें नहाइकै ३० ॥

अस्यातिलक ॥

यामें लुप्तोपमाको समप्रधान संकरहै ॥

दूसरा उदाहरण ॥

दोहा--बर तरुवर तुव जन्मभो, सफल विसेहूं बीस ।
हमैं न या तिय बागको, कियो अशोको ईश ॥ ३१ ॥

बरवृक्षकों स्त्री भांवारि देती हैं अशोकको लात मारतीहैं तब वह फूलतहै ताते वर्णनीय साभिप्रायहै परिकरांकुर शुद्धभयो ॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिंदूपतिविरचितेकाव्यनिर्णयेसूक्ष्मालकारादिवर्णनन्नामषोडशोल्लासः ॥ १६॥

अथ शुभावोक्ति अलंकारादि वर्णनम् ॥

दोहा–शुभावोक्ति हेतुहि सहित, जे बहुभाँति प्रमान ॥
काव्यलिंग सुनिरुक्तिगनि, अरुलोकोक्ति सुजान१॥
पुनि छेकोक्तिविचारिकै, प्रत्यनीक सम तूल ॥
परिसंख्या प्रश्नोत्तरो, दशवाचकपदमूल ॥ २ ॥

शुभावोक्त्यादि वर्णनम् ॥

दोहा--सत्य सत्य वर्णत जहाँ, शुभावोक्ति सो जानु ॥
तासंगी पहिंचानिये, बहुविधि हेतु प्रमानु ॥ ३ ॥

शुभावोक्ति–यथा ॥

दोहा–जाको जैसो रूप गुण, वर्णनतेही साजु ॥
तासों जाति स्वभाव सब, कहि वर्णतु कविराजु॥४

जातिवर्णनम् यथा--सवैया ॥

लोचन लाल सुधाधर बाल हुतासन ज्वाल सुभालभरेहैं ॥
मुंडकी माल गयंदकी खाल हलाहल काल कराल गरेहैं॥
हाथ कपालत्रिशूल जुहाल भुजानमें व्याल विशालजरेहैं ॥
दीनदयाल अधीनको पाल अधंगमें बाल रसालधरेहैं॥५॥

अथ स्वभाववर्णनम्-कवित्त ॥

विमल अंगोछे पोंछि भूषण सुधारि शिर,
आंगुरनि फोरि तृण तोरि तोरि डारती ॥
उर नख छद रद छदनिमें रद छद,
पेखि पेखि प्यारेको हुकाति झझकारती ॥
भई अनखोहीं अवलोकत ललीको फेरि,
अंगन सँवारती डिठौनादै निहारती ॥
गातकी गुराईपर सहज भोराई पर,
सारी सुंदराई पर राई लोन वारती ॥ ६ ॥

हेतु यथा ॥

दोहा—या कारणकोहै यही, कारज यह कहिदेतु ॥
कारज कारण एकही, कहे जानियत हेतु ॥ ७ ।

कवित्त ॥

सुधिगई सुधिकी नचेत रह्यो चेतहीमें,
लाजताजि दीन्हीं लाज साज सब गेहको ॥
गारीभई भूषण भये हैं उपहास वास,
दासकहै देह मैन तेह रह्यो तेहको ॥
सुखकी कहानी हमैं दुखकी निसानीभई,
झारभये आनिल अनलभये मेहको ॥
कुलके धरमभये घावरे परम यहैं,
साँवरे करम सब रावरेके नेहको ॥ ८ ॥

अस्यातिलक ॥

यहा लक्षणाशक्तिते सिगरे कवित्तमें अतिशयोक्ति व्यंग्यहै ॥
ए कर्म रावरेके नेहकोहै इतनी बात हेतालंकारहै ॥

कारज कारण एक यथा—सवैया ॥

आजु सयान इहै सजनी न कहूंचालिबो न कहूंकी चलैबो॥
दासह्यां काहूके नामको लीबोहै आपनी बातको पेच बढैबो
होत इहांतो अरीतु अबैरी गुपालकी आलिन ओर [illegible]तैबो
अतरप्रेमप्रकाशकहै यह तेरईलालको देखि लजैबो॥ ९॥

अथ प्रमाणालंकारवर्णनम् ॥

दोहा—कहुँ प्रत्यक्ष अनुमान कहुँ, कहुँ उपमान दिखाइ।
कहूं बडेनकी वाक्यलै, आत्मतुष्टि कहुँ पाइ॥ १०॥
अनुपब्धि संभव कहूं, कहूँ लहि अर्थापत्य।
कवि प्रमाण भूषण कहैं, बात जु बरणै सत्य॥ ११॥

अथ प्रत्यक्षमानवर्णनम् ॥

दोहा—बालरूप यौवनवती, भव्य तरुणको संग।
दीन्हों दई स्वतंत्रकै, सतीहोइ केहि ढंग ॥ १२ ॥

अथ अनुमानप्रमाणवर्णनम् ॥

दोहा—यह पावस तम साँझ नहिं, कहा दुचित मतिभूलि
कोक अशोक विलोकिये, रहै कोकनद फूलि॥ १३॥

अथ उपमान प्रमान वर्णनम् ॥

दोहा—सहसघटनमें लखि परै, ज्यों एकै रजनीश
त्यों घट घटमें दासहैं,प्रतिबिम्बित जगदीश॥ १४॥

शब्दप्रमाण वर्णनम् ॥

दोहा--श्रुति पुराणकी उक्तिको, लोक उक्ति दै चित्त।
वाच्य प्रमाण जु मानिये,शब्दप्रमाण सुमित्त॥१५॥

श्रुतिपुराणोक्ति प्रमाणवर्णनम् ॥

सोरठा-तुम जु हरी परबाल, ताते हम यहि चालमें ॥
नाथ विदित सबकाल, जो हन्यात सो हन्यते॥१६

लोकोक्ति प्रमाणवर्णनम् ॥

दोहा--कान्ह चलो किन एक दिन, जहँ परिपंचीपाँच ॥
दीज्य कहै सो दीजिये, कहा साँचको आँच ॥ १७

आत्मतुष्टि प्रमाणवर्णनम् ॥

दोहा--अपने अंग स्वभायको, दृढ विश्वास जहाँहिं ॥
आतमतुष्टि प्रमाणकवि,कोविद कहहिं तहांहि१८॥
मोहिं भरोसो जाउंगी, श्यामाकिशोरहि व्याहि ॥
आली मो अँखियान तरु, इन्हें न रहती चाहि॥१९

अनुपमलाब्धिप्रमाण ॥

दोहा--यों न कहो कटिनाहितो, कुचहै किहि आधार ॥
परमइंद्र जाली मदन, विधिको चरित अपार ॥ २०

संभवप्रमाणवर्णनम् ॥

दोहा-होती विकल बिछोहकी, तनक भनक सुनि कान॥
मास आश दैजातहो, याहि गनो बिनप्रान ॥२१॥

यथा ॥

दोहा--उपजहिंगे ह्वैहैं अबों, हिंदूपातिसे दानि।

कहिय काल निरवधि अलखि, बडीबसुमती जानि॥२२॥

अर्थापत्ति प्रमाणवर्णनम् ॥

दोहा–तियकटिनाहिन जे कहैं, तिन्हैं नमतिकी खोज।
क्यों रहते अधार बिनु, गिरिसे युगलउरोज॥२३॥
इतो पराक्रम करिगयो, जाको दूत निशंक।
कंत कहो दुस्तर कहा, ताहि तोरिबो लंक॥२४॥

काव्यलिंगअलंकारवर्णनम् ॥

दोहा–जहँस्वभावके हेतुको, कैप्रमाणको कोइ।
करै समर्थन युक्तिसों, काव्यलिंगहै सोइ॥२५॥
कहुँ वाक्यार्थ समर्थिए, कहुँ शब्दार्थ सुजान।
काव्यलिंग कवि युक्ति गनि, वहै निरुक्ति न आन२६

अथ शुभावोक्ति समर्थन वर्णन–सवैया ॥

तालतमासे ह्यां बालके आवत कौतुकजाल सदा सरसातहैं
सोर चकोरनकी चहुँओर विलोकत बीच हियो हरषातहैं॥
दासजू आनन चंद्र प्रकाशते फूले सरोज कली ह्वै ह्वै जातहैं॥
ठौरहिंठौर बधे अर्विंद मिलिंदके बृंद घने भननातहैं॥२७॥

दोहा--हिये रावरे साँवरे, याते लगति नबाम।
गुंजमाललों अर्धतन, होंहू होंउ नश्याम॥२८॥

यथा–कवित्त ॥

इनहींकी छविहै तिहारे छूटे बारनमें,
मेरो शिर ह्वै ह्वै-मोरपक्षनि बताईहै।
आनन प्रभाको अरविन्दजल पैठो दास

वाणी परदेसी किल कोकिल दोहाई है ॥
कुचकी अचलताको शंभु शिर लीन्हेंगंग,
रोमावलि सेतु मधुपालि मधुल्याईहै ।
वै वै सौंह वादीहै फिरादी ह्यां चपलनैनी,
जिन जिनकी तू यह चारुता चोराई है ॥ २९ ॥

अथ प्रत्यक्षप्रमाणसमर्थन–सवैया ॥

शोभासुकेशीकीकेशनिमेंहैतिलोत्तमाकीतिलबीचनिसानी ।
उर्वसीहीमें बसी मुखकी उनहारिरों इंदिरामें पहिचानी ॥
जानुकोरंभासुजानसुजानिहैदासजू वाणीमें वाणी समानी ॥
एतीछवीलिनिसोंछवि छीनिकैएकरचीविधिशाधिकारानी ॥

निरुक्ति यथा ॥

दोहा–है निरुक्ति जहँ नामकी, अर्थकलपना आन ।
दोषाकर शशिको कहैं, याही दोष सुजान ॥ ३१ ॥
विरही नर नारिनको, यह ऋतु चाइ चवाइ ।
दास कहै याको शरद, याही अर्थ सुभाइ ॥ ३२ ॥

यथा–कवित्त ॥

तवकुल काननकी परवनिता मीनकी भाँति ठगी रहतीहै ॥
दासजू याहीते हंसहुके हियमें कछु संक पगी रहतीहै ॥
हैरसमें गुण अवगुणमें रस ह्यां यह रीति जगी रहती है ॥
बासरहू निशि मान समै बनमालीकी बंसीलगीरहतीहै ३३ ॥

लोकोक्तिछेकोक्ति वर्णनम् ॥

दोहा–शब्द जु कहिये लोकगति, सो लोकोक्ति प्रमान ।

ताही छेकोक्तयो कहैं, होइ लिये उपखान ॥ ३४॥

लोकोक्ति यथा ॥

दोहा–बीस बिसे दश द्यौसमें, आवहिंगे बलबीर ।
नैन मूँदि नवदिन सहैं, नागरि अब दुख भीर ३५॥

छेकोक्ति यथा–कवित्त ॥

मोमन बाल हिरानोहो ताको कितेदिनते मैं कितीकरिदौरहै
सोठहरचो तुअठोढीकी गाडमें देहिअजौंतौबडोईनिहोरहै ॥
दासप्रत्यक्ष भईपनहा अलकैतु अतारनि दैके अंकोरहै ॥
होतदुराये कहा अबतौलखिगो तिलचोरतिलासनचोरहै३६

प्रत्यनीक यथा ॥

दोहा–शत्रु मित्रके पक्षते, किये वैर ऐहेत ।
प्रत्यनीक भूषण कहैं, जेहैं सुमति सचेत ॥ ३७ ॥

शत्रुपक्षतेवैर ॥

दोहा–मदन गर्व हरि हरि कियो, सखि परदेश पयान ।
वही वैर नाते अली, मदन हरत मोप्रान ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥

तेरे हासबेसनि औ सुंदरि सुकेशनिजू,
छीनि छबि लीन्हीं दास चपला घननिकी ।
जानिकैकलापीकी कुचाली तौ मिलापी मोहिं,
लागे वैर लेन क्रोध मेटत मननिकी ॥
कहि वी संदेशो चंद्रबदनीसों चंद्रावलि,
अजहूंमिलै तो बात जानिये बननिकी ।

तो विनु विलोकि खीन बलहीन साजै सब,
बरषा समाजै एई लाजै मोहननिकी ॥ ३९ ॥

अथ मित्रपक्षते हेतु वर्णनम्—सवैया ॥

प्रेमतिहारेते प्राणपिया सब चेतकी बात अचेतह्वै मेटति ॥
बांचोतिहारो लिख्यो कछुसोछिनहींछिनखोलतिबांचिलपेटति
छैलजू सैल तिहारी सुने तिहि गैलकी धूरि ननैन धुरेटति ॥
रावरे अंगको रंग विचारि तमालकी डार भुजाभरि भेंटति॥

अथ परिसंख्यालंकारवर्णनम् ॥

दोहा—नहीं बोलि पुनि दीजिये, क्योंहू कही लखाइ ।
कारि विशेष बर्जनु करै, संग्रह दोष बराइ ॥४१॥
पूछचो अनपूछ्यो जहां, अर्थ समर्थत आनि ।
परिसंख्या भूषण यही,यह ताजि और न जानि४२॥

अथ प्रश्नपूर्वक यथा ॥

दोहा—आज कुटिलता कौनमें, राज मनुष्यनि माहिं ।
देख्यो बूझि विचारिकै, व्यालवंशमें नाहिं ॥४३॥

अप्रश्नपूर्वक वर्णनम् ॥

दोहा—मुक्ति बेनिहीमें बसै, अमृत बसै अधरानि ।
सुखसुंदरि संयोगही, और ठौर जनिजानि ॥४४॥

कवित्त ॥

भोर उठि न्हाइवेको न्हाती अँसुवानिहींसों,
ध्याइवेको धावै तुम्हैं जाती बलिहारिये ।
खाइबेको खाती चोट पंचबान बाननकी,

पीयबेको लाज धोइ पीवत विचारिये ॥
आँखि लागिबेको दास लागी वहै तुमहीसों,
बोलिबेको बोलत विहारिये विहारिये ॥
सूझिबेको सूझत तिहारोई स्वरूप वाहि,
बूझितेको बूझै लाल चरचा तिहारिये ॥ ४५ ॥

प्रश्नोत्तर वर्णनम् ॥

दोहा-छोडि वाकह्यो वा कह्यो, प्रश्नोत्तर कहिजाइ ।
प्रश्नोत्तर तासों कहैं, जो प्रवीन कबिराइ ॥ ४६ ॥

यथा-कवित्त ॥

कोन शृंगारहै मोरपखा यह बाल छुटे कचकांतिको जोटी॥
गुंजके माल कहा यह तो अनुराग गरै परचोलैनिजुखोटी॥
दास बडीबडीबातैंकहा करो आपने अंगकी जानि करोटी॥
जानो नहीं यहकंचनसे तियके तनके कसिबेकी कसोटी४७

दोहा-को इत आवत कान्हहों, काम कहा हित मानि ।
किन बोल्यो तेरे दृगन, साखी मृदु मुसुकानि॥४८॥

यथा ॥

दोहा-उत्तरदीबेमें जहाँ, प्रश्नो परत लखाइ ॥
प्रश्नोत्तर ताहू कहैं, सकल सुकविसमुदाइ ॥४९॥
ल्याई फूली साँझको, रंग दृगनमें बाल ॥
लखि ज्यों फूली दुपहरी, नैन तिहारे लाल ॥५०॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंशश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबू-
हिंदूपतिविराचितेकाव्यनिर्णयशुभावोत्तयाद्यलंकार
वर्णनन्नाम सप्तदशोल्लासः ॥ १७ ॥

अथ क्रमदीपकालंकार वर्णनम् ॥

दोहा—क्रम दीपक द्वै रीतिजे, अलंकार मतिचारु ।
अतिछबिदायक वाक्यके, यदपि अर्थसों प्यारु १॥
यथासंख्य एकावली, कारण मालाठाय ।
उत्तरोत्तर रसनोपमा, रत्नावलि पर्याय ॥ २ ॥
ए साती क्रम भेदहैं, दीपक एको पाँच ।
आदि अवृत्यो देहली, कारण माला साँच ॥ ३ ॥

उदाहरण क्रमते यथासंख्य लक्षणम् ॥

दोहा—पहिले कहे जुशब्द गण, पुनि मक्रते तारीति ।
कहिके और निबाहिये, यथासंख्य करि प्रीति॥४॥

यथा—कवित्त ॥

दास मन मतिसों शरीरीसों सुरति सों,
गिरिसों गेहपतिसों नवांचिबेकी बारी जू ।
मोहै मारिडारै साजि सुबश उजारै करै,
थंभित बनाइ ठाइ देतो वैर भारीजू ॥
मोहन मारन वशीकरन उचाटनके,
थंभन उदेखनके एई दृढ कारीजू ।
बांसुरी बजैवो गैवो चलिवो चितैवो,
मुसुकैवो अठिलैवो रावरेको गिरिधारीजू ॥ ५ ॥

एकावलीलक्षणम् ॥

दोहा—किये जँजीरा जोर पद, एकावली प्रमान ।
श्रुतिवश मति मतिवशभगति,भगतिवश्य भगवान ।

कवित्त ॥

एरी तोहिं देखे मोहिं आवत अचंभो यही,
रंभा जानु ढिगही गयंदगति केरेहैं ॥
गतिहै गयंद सिंह कटिके समीप सिंह,
कटिहू सरोम राजी व्यालिनि संभेरेहैं ॥
रोमराजी व्यालिनि सुशंभु कुच आगे दास,
शंभु कुचहूके भुज मैन भुज नेरेहैं ॥
मैनाहिजगावतो सो आनन द्विजेश अरु,
आननद्विजेश राहु कचकांति घेरेहैं ॥ ७ ॥

अथ कारणमालालक्षणम् ॥

दोहा–कारणते कारण जनम, कारणमाला चारु।
ज्योति आदिते ज्योतिते, विधि विधिते संसारु ॥८॥
सोरठा–होत लोभते मोह, मोहहिते उपजे गरब।
गर्व बढावै कोह, कोह कलह कलहहि व्यथा ॥९॥
दोहा–विद्या देती विनयको, विनय पात्रता मित्त ॥
पात्रत्वै धन धन धरम, धरम देत सुख नित्त ॥१०॥

उत्तरोत्तरलक्षणम् ॥

दोहा–एक एकते सरस लखि, अलंकार कहि सारु।
याहीको उत्तरत्तरो, कहैं जुहैं मतिचारु ॥ ११ ॥

सवैया ॥

होत मृगादिकते बडे वारन वारनबृंद पहारनहेरे ॥
सिंधुमें केते पहार परे धरतीमें विलोकिये सिंधु घनेरे ॥

लोकनमें धरती यों किती हरि वोदरमें बहुलोक बसेरे ॥
ते हरिदास बसे इनमें सब चाहि बडे हग राधिका तेरे१२

यथा-सवैया ॥

एकरतार विनयसुनि दासकी लोकनकोअवतार करो जिनि
लोकनको अवतार करो तो मनुष्यनिहूको सँवार करो जिनि
मानुषहूको सँवार करोतौ तिन्हैं बिच प्रेम प्रकार करो जिनि
प्रेमप्रकार करौतौदयानिधि क्योंहूंवियोगविचार करो जिनि

अथ रसनोपमा वर्णनम् ॥

दोहा-उपमा अरु एकावली, को संकर जहँ होइ ।
ताहीको रसनोपमा, कहैं सुमति सब कोइ॥ १४ ॥

यथा-सवैया ॥

न्यारो नहोतवफारेज्योंधूममेंधूमज्यों जात घनेघनमें हिलि ॥
दासउसासरलै जिमि पौनमेंपौनज्यों पैठतआंधिनमोंपिलि ॥
कौन जुदोकरैलोनज्योंनीरमें नीरज्योंक्षीरमेंजातखरोखिलि॥
त्योंमति मेरी मिलीमन मेरेमेंमोमनगोमन मोहन सों मिलि॥

दोहा-अतिप्रसन्नहैकमलसों, कमलमुकुरसों वाम ।
मुकुर चंद्रसों चंद्रहै, तो मुखसों अभिराम ॥ १६ ॥

अथ रत्नावली-यथा ॥

दोहा-क्रमीवस्तु गण विदित जो, रचि राख्यो करतार ।

सो क्रम आने काव्यमें, रत्नावली प्रकार ॥ १७ ॥

यथा ॥

सोरठा--श्यामप्रभा पिकथाप, युग उरजनि तियके कियो।
चारु पंचशर छाप, सातकुंभके कुंभपर ॥ १८ ॥

यथा-सवैया ॥

रवीशिरफूल मुखै शशितूल महीसुत वंदन बिंदु सुभांति॥
पना बुधकेसरि आड गुरो नकमोतिये शुक्र करै दुखशांति॥
शनीहिं शृंगार बिधुंतुद वार सजे झखकेतु सबै तनु कांति॥
निहारिये लाल भरे सुखजाल बनी नवबाल नवग्रहपांति ॥

पर्यायलंकार वर्णनम् ॥

दोहा-तजि तजि आशय करनते, है पर्याय बिलास।
घटती बढती देखिकै, कहि संकोच बिकास ॥ २० ॥

यथा-सवैया ॥

पाँयनको तजि दास लगीतिय नैन बिलासकरै चपलाई ॥
पीन उरोजन तंब भये हठिकै कटि जातभई तनुताई ॥
बोलनि बीचबसी शिशुता तनु यौबनकी गईफैलिदुहाई॥
अंगबढी सुबढी अबतौ नवला छबिकी बढतीपरआई२१॥

दोहा-रह्यो कुतूहल देखिवो, देखति मूरति मैन।
पलकनिको लगिवो गयो, लगी टकटकी नैन॥२२॥

संकोच पर्यायवर्णनम्-कवित्त ॥

रावरो पयान सुनि सूखगई पहिलेही,
पुनि भई विरहव्यथाते तनु आधीसी ।
दासकी दयालु मास बीतिबेमें छिन छिन,
छीन परिबेकी रीति राधे अवराधीसी ॥
सांसरीसी सरसी छरीसी ह्वै सरीसी भई,
सीकसीह्वै लीकसीह्वै बाधीह्वै केबाधीसी ॥
बारसी मुरारसीलौं जीवत तजीमें अजौं ॥
जीवतही ह्वैहै वह प्राणा आमसाधीसी ॥ २३ ॥

अस्यतिलक ॥

यामै उपमाको संकरहै ॥

दोहा-सब जगही हेमंतमें, शिशिर सुछाहनि मीत ।
ऋतुवसंत सब छोडिकै, रही जलाशयशीत ॥२४॥

अथ विकाशपर्याय ॥

दोहा-लाली हुतीप्रियाधराहि, बढी हियेलो हाल ।
अब सुबासु तनु सुरंगकरि, आई तुमपै लाल २५॥
अँसुवानिते वाहि नद किये, नदते कियो समुद्र ।
अबासिगरो जग जलमई, करनचहत है रुद्र॥२६ ॥

कवित्त ॥

हम तुम एकहुते तन मन फेरि तुम्हैं,
प्रीतम कहायो मोहिं प्यारी कहवाईहै ॥
सोऊ गयो पति पाति नकिो रह्यो नातो पुनि,

पापिनि हों ह्यांई तुम्हैं उतहीं दिढाईहै ॥
द्वैदिनालोंदास रही पातिआसंदेश आस,
हाइ हाइ ताहूहटै रह्यो ललचाईहै ॥
प्राणनाथ कठिनपषाणहूंते प्राण अबै,
कौन जानै कौन कौन दशा दरशाईहै ॥ २७ ॥

अथ दीपकलक्षणम् ॥

दोहा-एक शब्द बहुमें लगे; दीपक जानै सोइ ।
उहै शब्द फिरि फिरि परे,आवृतिदीपक होइ॥२८॥

यथा ॥

दोहा-रहै थकित अरु चकितह्वै, समर सुंदरी औनि ।
तुअ चितौनि ठिकुठौनि भ्रुव,नौनि निरखि मनरौनि॥
आनन आतप देखिहूं, चलै डंक कहुँ पाइ ।
कर सुमनंजलि लेतहूं, अरुणरंग ह्वैजाइ ॥ ३० ॥

अथ आवृत्तिदीपकवर्णनम् ॥

दोहा-रहै चकितह्वै थकितह्वै, सुंदरि रतिह्वै औनि ।
तुअ चितौनि लखिठौनिलखि,भ्रुकुटिनौनिलखिरौनि॥

यथा-सवैया ॥

वाही घरीते न सानरहै न गुमान रहै न रहै सुघराई ॥
दास नलाजको साजरहै नरहै तनको घर काजकी घाई ॥
ह्यां दिष साधानिवारे रहो तबहींलों भटू सब भाँति भलाई॥
देखत कान्है न चेतुरहै नहिं चित्तु रहै न रहै चतुराई॥३२॥

अथ अर्थावृत्तिदीपक ॥

दोहा--रहे थकितह्वै चकितह्वै, समर सुंदरी ओनि ।
तुअ चितवनि लखिठवानिताके,निरखिरौनि भुवनौनि॥

यथा—कवित्त ॥

छन होति हरीरी महीको लखै निरखैछनजोछनज्योतिछटा।
अवलोकति इंदुबधूकी पत्यारी बिलोकतिहैखिनकारी घटा
तकिडार कदम्बनिकी तरसै दरशै उत नाचत मोर अटा।
अधऊरध आवत जात भयो चित नागरिको नट कैसोबटा।

अथ उभयावृत्तिदीपक यथा ॥

दोहा- पेच छुटी चंदन छुटे, छुटे पसीना गात ।
छुटी लाज अब लाल किन, छुटे बंद उत जात ॥
तोरयो नृपगणको गरब, तोरयो हरको दंड ।
राम जानकी जीयको; तोरयो दुख आखंड ॥३६॥

देहलीदीपक वर्णनम् ॥

दोहा--परै एक पद बीचमें, दुहुँ दिशि लागै सोइ ।
सोहै दीपक देहली, जानतहैं सबकोइ ॥ ३७ ॥

यथा—कबित्त ॥

ह्वै नरसिंह महामनुजाद हन्यो प्रहलादको संकटभारी ॥
दास बिभीषनैलंक दयो जिनरंक सुदामाको संपतिसारी ॥
द्रौपदीचीर बढायो जहानमें पंडवके यशकी उजियारी ॥
गर्बिनको खानि गर्ब बहावत दीननिको दुख श्रीगिरिधारी ॥

अथ कारकदीपक वर्णनम् ॥

दोहा-एकभाँतिके वचनको, काज बहुत जहँ होइ।
कारक दीपक जानिये, कहैं सुकवि सब कोइ॥ ३९

यथा ॥

दोहा-ध्याइ तुम्हैं छबिसों छकति, जसति तकतिमुसुकाति।
भुजपसारि चौंकति चकति, पुलकि पसीजति जाति

यथा-कवित्त ॥

उठिआपुही आसनदै रसप्यारसों लालसों आंगी कढावति है
पुनि ऊंचे उरोज निदै उरबीच भुजानिमढै औ मढावतिहै ॥
रसरंग मचाइ नचाइकै नैनन अंग तरंग बढावतिहै ॥
विपरीतिकी रीतिमें प्रौढतिये चितचौगुनो चोप बढावतिहै॥

अथ मालादीपकवर्णनम् ॥

दोहा-दीपक एकावलि मिले, मालादीपक जानि।
सतसंगति संगति सुमति, मति गति गति सुखदानि॥
सोरठा-जगकी रुचि ब्रजबास, ब्रजकी रुचि ब्रजचंद्र हरि।
हरि रुचि वंशीदास, वंसीरुचि मनबांधिबो ॥४२॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्री-
बाबूहिंदूपतिविरचितेकाव्यनिर्णयेदीपकालंकारवर्ण-
नं नामअष्टादशोल्लासः ॥ १८ ॥

अथ गुणानिर्णयवर्णनम् ॥

दोहा--दश विधिके गुण कहतहों, पहिले सुकवि सुजान।
पुनि तीनोंगुण गहिरचै, सबतिनके दरम्यान ॥ १ ॥
ज्यों सतजन हियते नहीं, शूरतादि गुण जाइ।
त्यों विदग्ध हियमेंरहै, दशगुण सहज सुभाइ ॥२॥
अक्षर गुण माधुर्य अरु, ओज प्रसाद विचारि।
समता कांति उदारता, दूषन हरन निहारि ॥ ३ ॥
अर्थव्यक्ति सामाधि ये, अर्थहिंकरै प्रकाश।
वाक्यनिके गुण श्लेष अरु, पुनरुक्तयो प्रतिकाश॥ ४

माधुर्यगुणवर्णनम् ॥

दोहा-अनुस्वार युत वर्णयुत, सबै वर्ग अटबर्ग ॥
अक्षर जामें मृदुपरै, सो माधूर्यनिसर्ग ॥ ५ ॥

यथा ॥

दोहा-नँदनंदन खेलत सखी, बृंदाबन सुखदानि ॥
धरे चंद्रकी पंखाशिर, बंसी पंकज पानि ॥ ६ ॥

ओज गुणवर्णनम् ॥

दोहा-आवै उद्धृत शब्द बहु, वर्णसंयोगी युक्त ॥
सकटवर्गकी अधिकई, इहै ओज गुणउक्त ॥ ७ ॥

यथा ॥

दोहा-पिष्पिठट्ट गब्बरान्निको, युथ्थप उठे वरक्कि ॥
पट्टत मद्दि घन कट्टिशिर, क्रुद्धित खग्ग सरक्कि॥८॥

अथप्रसादगुण ॥

दोहा--मन रोचक अक्षर परै, सोहै सिथिल शरीर ॥

गुणप्रसाद जल सुक्ति ज्यों, प्रगटै अर्थ गँभीर ॥ ९ ॥

यथा ॥

दोहा--डीठि डुलै नकहूं भई, मोहित मोहन माहिं ॥
परम शुभगता निरखि सखि, धर्मतजैको नाहिं॥१०

अथ समतागुणलक्षणम् ॥

दोहा--प्राचीननिकी रीतिसों, भिन्नरीति ठहराइ।
समता गुण ताको कहैं, पै दूषणनि बराइ ॥ ११॥
मेरे दृग कुबलयनिको, देति निशा सानंद ॥
सदारहै ब्रजदेश पर, उदित्त साँवरो चंद ॥ १२ ॥

यथा—कवित्त ॥

उपमा छबीलीकी छवालों छूटे बारानिकी,
ढरकी कालिंदते कालिंदीधार ठहरैं।
लाल श्वेत गुणगहे बेनी बँधे बुधजन,
वर्णत वाहीको त्रिबेनी कैसी लहरैं ॥
कीन्हों काम अद्भुत मदन मरदाने यह,
कहांते कहांको ल्यायो कैसे कैसी डहरैं।
वेई श्याम अलकैं छहर रहीं दाम मेरे,
दिलकी दिलीमें ह्वै जहांई तहां नहरैं ॥ १३ ॥

अथ कांतिगुणवर्णनम् ॥

दोहा--रुचिर रुचिर बातैं करैं, अर्थन प्रगटन गूढ ॥
ग्राम्य रहित सो कांतिगुण, समुझ सुमति न मूढ१४

यथा—कवित्त ॥

पगुपाणि नकंचन चूरे जराउ जरे माणि लालनि शोभधरैं ॥

चिकुरारि मनोहर झीन झगा पहिरे मणि आंगनमें विहरैं ॥
यहमूरति ध्यानमें आननको सुरसिद्ध समूहनि साधमरैं ॥
बडभागिनि गोपी मयंकमुखी अपनी अपनी दिशि अंकभरैं

उदारतागुणवर्णनम् ॥

दोहा- जो अन्वय बल पाठित बल, समुझिपरै चतुरैन ॥
औरनको लागै कठिन, गुण उदारता ऐन ॥१६ ॥

यथा ॥

दोहा--कदन अनेकनि विघनको, एकरदन गणराउ ॥
वन्दनयुत वन्दनकरों, पुष्कर पुःकर पाउ ॥ १७ ॥

अर्थव्यक्त गुणवर्णनम् ॥

दोहा--जासु अर्थ अतिहीं प्रगट, नहिं समास अधिकाउ ॥
अर्थ व्यक्त गुणवातज्यों, बोलै सहज सुभाउ १८ ॥

यथा ॥

दोहा--इकटक हरि राधे लखै, राधे हरिकी वोर ॥
दोऊ आनन इंदुवो, चारचो नैन चकोर ॥ १९ ॥

अथ समाधिगुणवर्णनम् ॥

दोहा--जुहै रोह अवरोह गति, रुचिरभाँति क्रम भाय ॥
तिहि समाधि गुण कहतहैं, ज्योंभूषणपर्याय ॥२०॥

यथा ॥

दोहा -बर तरुनीके बैन सुनि, चीनी चकित सुभाइ ॥
दुखित दास मिश्रीपुरी, सुधारहीसकुचाइ ॥ २१ ॥

अस्यातिलक ॥

क्रमतेअधिक अधिक मीठो कह्यो यातें समाधि गुणहै ॥

कवित्त ॥

भावतो आवतोहीं सुनिकै उडि ऐसीगई हृदछामता जोगुनी
कंचुकिहूमें नहीं मढती बढती कुचकी अबतो भईदोगुनी॥
दास भई चिकुरारिनमें चटकीलता चामर चारुते चौगुनी॥
नौगुनी नीरजते मृदुता सुखमा मुखमें शशिते भई सौगुनी॥

अथ श्लेषगुणवर्णनम् ॥

दोहा—बहुशब्दनिको एकके, कीजै जहां समास।
ता अधिकाई श्लेषगुण, गुरमध्यम लघु दास॥२३॥

अथ दीर्घसमास—यथा ॥

दोहा—रघुकुल सरसीरुह विपुल, सुखद भानु पदचारु।
हृदयआनि हानि काममद,कोह मोह परिवारु॥२४॥

अथ मध्यमसमासवर्णनम् ॥

दोहा—यदुकुल रंजन दीन दुख, भंजन जन सुखदानि॥
कृपा वारिधर प्रभुकरो,कृपा आपनो जानि॥२५॥

अथ लघुसमासवर्णनम् ॥

दोहा—लखि लखि सखि सारस नयनि,इंदुबदन घनश्याम।
बीजुहास दारचो दशन,बिम्बाधर अभिराम॥२६॥

अथ पुनरुक्ति प्रतिकाश वर्णनम् ॥

दोहा—एकशब्द बहु बार जहँ, परै रुचिरता अर्थ।
पुनरुक्तिप्रतिकाश गुण, वरणैं बुद्धि समर्थ॥ २७॥

यथा ॥

दोहा—वनि वनि वनि वनिता चली,गनि गनि गनि डगुदेत
धनिधनिधनिआँखियांजुछबि,सनिसनिसनि सुखलेत

यथा— सवैया ॥

मधुमासमें दासजू बीस बिसे मनमोहनआइहैं आइहैं आइहैं
उजरे इन भौननको सजनीसुखपुंजनि छाइहैं छाइहैं छाइहैं
अब तेरीसों एरी नशंक इकंकव्यथा सब जाइहैं जाइहैं जाइहैं
घनश्यामप्रभा लखिकैसखियेअँखियांसुखपाइहैंपाइहैं पाइहैं

दोहा—माधुर्योज प्रसादके, सबगुणहैं आधीन ।
तातै इनहींको गन्यो, मम्मट सुकवि प्रबीन॥ ३० ॥

अथ माधूर्यगुणलक्षणम् ॥

दोहा—श्लेषो मध्यसमासको, समता कान्ति विचारु ।
लीनो गुणमाधूर्ययुत, करुणा हास शृंगारु ॥ ३१ ॥

अथ ओलजक्षणम् ॥

दोहा—श्लेष समाधि उदारता, सिथिल ओज गुण रीति ।
रुद्र भयानक वीर अरु, रस विभत्ससों प्रीति ३२ ॥

अथ प्रसादगुणवर्णनम् ॥

दोहा—अल्प समास समास विन, अर्थव्यक्ति गुणमूल ॥
सो प्रसाद गुणवर्णिसब, सबगुणसबरस तूल ॥ ३३ ॥
रसके भूषित करनते, गुणवरणे सुखदानि ।
गुण भूषण अनुमानिकै, अनुप्रास उर आनि॥ ३४ ॥

अथ अनुप्रासलक्षणम् ॥

दोहा—वचन आदिकै अंत जहँ, अक्षरकी आवृत्ति ।
अनुप्रास सो जानिहै, भेद छेक औ वृत्ति॥ ३५ ॥

अथ छेकानुप्रास लक्षणम् ॥

दोहा—वर्ण अनेक कि एककी, आवृत्ति एकहि बार ॥

सो छेकानुप्रासहै, आदि अंत इकठार ॥ ३६ ॥

अथ आदिवर्णकीआवृत्ति छेकानुप्रासवर्णनम्-यथा ॥

दोहा-वर तरुनीके बैन सुनि, चीनीचकित सुभाइ ।
दुखी दास मिश्रीमुरी, सुधारही सकुचाइ ॥ ३७ ॥

अंतवर्णकी आवृत्ति, छेकानुप्रास ॥

दोहा-जनरंजन भंजन दनुज, मनुज रूप सुर भूप ॥
बिस्व बदर इव धृत उदर, जो अति सोवत शूप३८॥

अथ वृत्तानुप्रासलक्षणम्-

दोहा-कहुँ सरिवर्ण अनेककी, परै अनेकन वार ।
एकहिकी आवृति कहुँ, वृत्तोदोइ प्रकार ॥ ३९ ॥

आदिवर्णकी अनेककी, अनेकवार आवृत्ति ॥

दोहा-पैंड पैंड पर चकित चख, चितवत मो चितहारि ।
गई गागरी गेहलै, नई नागरी नारि ॥ ४० ॥

आदिवर्णकी एककी, अनेकवार आवृत्ति-कवित्त ॥

बलिबलि गई बारिजातसे वदनपर,
बंसीतान बँधिगई बिधिगई बानीमैं ।
वड़रे बिलोचन बिसारेके बिलोकत,
बिसारि सुधि बुधि बावरीलों बिललानीमै ॥
बरुनी बिभाकी बारुनीमें ह्व सुमोहित ॥
बिशेष बिंबाधरमें बिगोड बुधि रानीमैं ।
बराजि बराजि बिलखानी वृंद आली,
वनमालीकी विकास बिहँसनिमें बिकानीमैं ॥४१॥

अंतवर्ण अनेककी अनेकबार आवृत्ति ॥

दोहा--कहैं कसन गरमी बसन, काहू बसन सोहात ।
शीत सताये रीतिअति, कत कंपित तुअगात४२॥

अंतवर्ण एककी अनेकबार आवृति--कवित्त ॥

बैठीमलीन अली अवली किधौं कंजकलीनसों है बिफलीहै।
शंभु गली बिछुरीहीं चली किधों नागलली अनुराग रलीहै॥
तेरी अली यह रोमावलीकी शृंगारलता फल बेलि फलीहै।
नाभिथलीसों जुरे फलुलै किभली रसराजनली उछली है ॥

दोहा--मिलै वर्णमाधुर्यके, उपनागरिकावृत्ति ।
परुषा ओज प्रसादके, मिलै कोमलावृत्ति ॥ ४४॥

अथ नागरिकावृत्ति--यथा--कवित्त ॥

मंजुल वंजुल कुंजनि गुंजत कुंजत भृंग विहंग अयानी ॥
चंदन चंपक वृंदनसंग सुरंग लवंग लता अरुझानी ॥
कंस बिधंसन कै नंदनंद सुछंद तहीं करिहै रजधानी ॥
भाषत क्यों मथुरा ससुरारि सुनैन गुणे मुदमंगलबानी४५

अथ परुषावृत्ति वर्णनम् ॥

छप्पय--मर्कट युद्ध विरुद्ध क्रुद्धअरि ठट्टर पट्टदहिं ॥
अब्द शब्द करि गर्ज्जि तर्ज्जि झुकि झप्पिझपट्टहिं॥
लक्ष लक्ष राक्षस विपक्ष धरि धरणि पटक्कहिं ॥
देखिशस्त्र वज्रादि अस्त्र एकहु न अटक्कहिं ॥
कृत व्यक्त रक्त श्रोतास्विनयित्थ तत्थ अनहद्दभुअ॥
तसु विक्रम कत्थ अकत्थ यशमत्थ समत्थदशत्थसुअ॥

अथ कोमलावृत्ति–सवैया ॥

क्योंविरमें वरमें करि बुंदनि, बुंदनिको विधिवेधे बधैरी ॥
दास घनी गुरजैं गरजैंसी लगैं झरसो रहियो झुरसैरी ॥
बीस बिसैबिस झिल्ली झलै ताडिता तनुतापि तकै तरपैरी॥
मारै तऊ सुर केसरसों विरहीको बसैं बरहीबडोवैरी॥४७॥

अथ लाटानुप्रासवर्णनम् ॥

दोहा–एकशब्द बहुबारगो, सो लाटानुप्रास ।
तात्पर्यते होतुहै, और अर्थ प्रकाश ॥ ४८ ॥

यथा ॥

दोहा–मनमृगया कर मृगदृगी, मृगमदवेदी भाल ।
मृगपति लंक मृगंक मुखि, अंकलिये मृगबाल४९॥

दोधक–छंद ॥

श्रीमनमोहन प्राणहैं मेरे । श्रीमनमोहन मानहैं मेरे ।
श्रीमनमोहन ज्ञानहैं मेरे । श्रीमनमोहनध्यानहैं मेरे॥५०॥
श्रीमनमोहनसों रतिमेरी । श्रीमनमोहनसों नति मेरी ॥
श्रीमनमोहनसों मतिमेरी । श्रीमनमोहनसों गति मेरी५१॥

अथ वीप्सालक्षणम् ॥

दोहा–एकशब्द बहुबार जहँ, अतिआदरसों होइ ।
ताहि बीप्सा कहतहैं, कवि कोविद सबकोइ ॥५२॥

यथा–कवित्त ॥

जानि जानि आयो प्यारे प्रीतम विहारभूमि,
छानि छानि फूले फूल सेजन सँवारती ।

दास दृग कंजनि बंदनवार ठानि ठानि,
मानि मानि मंगलश्रृंगारनि श्रृंगारती ॥
ध्यानहीमें आनि आनि पीको गहि पानि पानि,
लेटि पट तानि तानि मैनमद मारती।
प्रेम गुण गानि गानि पिउपनि सानि सानि,
बानि बानि खानि खानि बैननि विचारती ॥ ५३॥

अथ यमकालंकारवर्णनम् ॥

दोहा—वहै शब्द फिरि फिरि परै, अर्थ औरई और।
सोयमकानुप्रासहै, भेद अनेकन ठौर ॥

यथा—कवित्त ॥

लीन्ह्यों सुखमानि सुखमानि लखि लोचनन,
नील जलजात जलजात न विहारिगो ॥
वाहीजी लगाइकारि लीन्हों जी लगाइ कारि,
मति मोहिनीसी मोहिनीसी उर डारिगो ॥
लागै पलको न पलको न बिसरैरी बिस,
वासी वास मैते वासमैं बिस वगारिगो ॥
मानि आनि मेरी आन मेरा ढिग वाको तू न
काहू वरजोरी वरजोरी मोहिं मारिगो ॥ ५४ ॥

यथा कवित्त ॥

चलन कहूँमैं लालरावरे चलनकी,
चलन आंचवाके अंचलनि सों सुधारैगी ॥
वारिजात नैन वारिजातन सहैगी निज्ञु,

वारिजात नैननसों केहूं न निवारैगी ॥
दासजू बसंत सुधि अंगनसँभारैगीतौ,
अंगना सँभारे ह्वैहै अंगन सँभारैगी ॥
कर हतिडारै सुधि देखि देखि किंशुककी,
करहतिडारै हियो करहति डारैगी ॥ ५५ ॥

यथा—कवित्त ॥

छपती छपाईरी छपाइ गन सोरतु,
छपाइकै अकेली ह्याँ छपाई ज्यों दगति है ॥
सुखदनिकेतकी या केतकी लखेते पीर,
केतकी हियेमें भीन केतकी जगतिहै ॥
लखिकै सशंक होती निपटै सशंकदास,
संकरमें सावकाश संकर भगतिहै ॥
सरसी सुमनसेज सरसी सुहाईसर,
सीरुह बयारि सीरी सरसी लगतिहै ॥ ५६ ॥

दोहा—अरी सीअरी होनकी, ढरी कोठरी नाहिं।
जरी गूजरी जातिहै, घरी दूघरी माहिं ॥ ५७ ॥
चेत सरवरीमें चलो, नकै सरवरी श्याम।
सर्वरीति ह्वै सरवरी, लखि परिहै परिणाम ॥ ५८ ॥
मुकुत विराजत नाकमें, मिलि वेसरि सुखमाहिं।
कंठसु मुक्तामालहै, दीपति दीतिसदाहिं ॥ ५९ ॥
चरण अंत अरु आदि पद, जमक कुंडलित होइ।
सिंह विलोकन ह्वै उहै, मुक्तक पदग्रस सोइ ॥ ६० ॥

यथा-सवैया ॥

झरसों बरसो करे नीर अली धनुलीन्हें अनंग पुरंदरसों ।
दरशोचहुँओरनितेचपला करिजातीकृपानिकोओझरसों ॥
झरसो रसनाइ हनै हियरा जुकिये घन अंबर डंबरसो ।
बरसोते बडीनिशि वैरिनि बीती तौ वासरभो विधिवासरसो
दोहा-ज्योंजीवात्मामें रहै, धर्मशूरता आदि ।
त्यों रसहीमें होतगुण, वर्णे गुणहि सुवादि ॥ ६२ ॥
रसहीके उत्कर्षको, अचल थिति गुण होइ ।
अंगीधरम सुरूपता, अंगधर्मनहिं होइ ॥ ६३ ॥
कहुँलखि लघु कादरकहै, सूर बड़ो लखि अंग ।
रसहि लाज त्यों गुणविना, अरसौ शुभगणसंग६४॥
अनुप्रास उपमादिजे, शब्दार्थालंकार ।
ऊपरते भूषित करै, जैसे तनको हार ॥ ६५ ॥
अलंकार बिनु रसहुहैं, रसौ अलंकृत छंडि ।
सुकवि वचन रचनानिसों,देत दुहुँनको मांडि ॥६६॥

अथ रसबिना अलंकार-यथा ॥

दोहा-चित्त चिहुट्टत देखिकै, जुट्टत दारहिदार,
छन छन छुट्टत पट रुचिर, टुट्टत मोतियहार॥ ६७॥

अस्य तिलक ॥

यहां परुषावृत्ति अनुप्रासहै रसनहीं है ॥

दोहा-चोंच रही गहि सारसी, सारसहीन मृणाल ॥
प्राण जात जनु द्वारमें, दियो अर्गलाहाल ॥ ६८ ॥

अस्यतिलक ॥

इहां उत्प्रेक्षालंकारहै रसनहींहै ॥

दोहा--झारि डारु घनसार इत, कहा कमलको काम ।
अरी दूरि करि हारु यौं,बकाति रहाति दिनवाम ६९॥

इहां रसहै अलंकार नहीं ॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिंदूपतिविरचिते काव्यनिर्णये गुणनिर्णयादि अलंकार वर्णनन्नाम एकोनविंशतातिमोल्लासः ॥ १९॥

दोहा-श्लेष विरुद्धाभासहै, शब्दालंकृत दास ।
मुद्रा अरु वक्रोक्ति पुनि, पुन रुक्तवदा भास ॥ १ ॥
इन पाँचहुको अर्थसों, भूषण कहै न कोइ ।
यदपि अर्थ भूषण सकल, शब्द शक्ति मय होइ॥२॥

श्लेषालंकार वर्णनम् ॥

दोहा--शब्द उभयहूं शक्तिते, श्लेषालंकृत मानि ।
अनेकार्थ बल इक द्वितिय, तात्पर्य बल जानि ॥३॥
दोइ तीनिके भाँति बहु, जहां प्रकाशत अर्थ ।
श्लेषो लंकारहै, वर्णत बुद्धि समर्थ ॥ ४ ॥

अर्थ द्विअर्थश्लेषवर्णनम्-कवित्त ॥

गजराज राजै बरबाहनकी छबिछाजै,
समरथ वेस सहसनि मनमानीहै ।
आयसुको जोहै आगे लीन्हें गुरुजन गण,

वशमें करत जो सुदेश रजधानीहै ॥
महा महा जन धन लेलै मिलै श्रमबिन,
पदुमन लेखै दास बास यों बखानीहै ।
दर्पणदेखे सुबरन रूप भरी बार,
वनिता बखानीहै कि सेना सुलतानीहै ॥ ५ ॥

अथ त्रिअर्थवर्णनम्-कवित्त ॥

पानिपके आगर सराहै सब नागर,
कहतदास कोशतें लख्यो प्रकाशमानमैं ।
रजके संयोगते अमल होत जब तब,
हरिहितकारी बास जाहिर जहानमें ॥
श्रीको धाम सहजे करत मन कामथकै,
वर्णत वाणी जादलनके विधानमें ।
एतो गुण देख्यो राम साहिब सुजानमेंकि,
वारिज विहानमें कि कीमति कृपानमें ॥ ६ ॥

अथ चतुरअर्थ वर्णनम्-कवित्त ॥

छाया सों ललित परभृतद्योसुदरशन,
बालरूप दुतिसु परबगणबंदहै ।
जिनका उदित छन दानमें विलोकियत.
हरि महातम देत आनँद निकंदहै ॥
भव अभरन अर्जुनसों मिलापकर,
जानौ कुबलयको हरन दुखदंदहै ।
एतो गुणवारो दास रविहै कि चंदहै,

कि देवीको मृगेंद्रहै कि यशुमाति नंदहै ॥ ७ ॥

दोहा—संदेहालंकार इत, भूलि न आनो चित्त ।
कह्यो श्लेष दृढ करनको, नहिं समता थल मित्त ॥८॥

अथ विरुद्धाभास वर्णनम् ॥

दोहा—परे विरुद्धी शब्दगण, अर्थ सकल अविरुद्ध ।
कहै विरुद्धा भास तिहि, दास जिन्हैं मतिशुद्ध॥९॥

यथा—कवित्त ॥

लेखी मैं अलेखी मैं नहींह छबि ऐसी औ,
प्रसमसरी समसरी देवेको न फौलिये ॥
खरीमें खरीहै अंगवनक कनकहूंते,
दास मृदुहास बिच मेलिये चमेलिये ॥
कीजै न विचारचारु अरसमें रस ऐसो,
वेगिचलो संगमें नहेलिये सहेलिये ॥
जगके भरन अभरन आपु रूप अनु,
रूप गानि तुम्हैं आइके लिये अकेलिये ॥ १० ॥

अथ मुद्रालंकार वर्णनम् ॥

दोहा—औरो अर्थ कवित्तको, शब्दो छल व्यवहार ।
झलकै नामकिनाम गन, और समुद्राचार ॥ ११ ॥

यथा—कवित्त ॥

जबहींते दास मेरी नजरि परीहै वह,
तबहींते देखिवेकी भूख सरसातिहै ॥
होनलाग्यो वाहिर कलेशको कलाप उर,

अंतरकी ताप छिन छिनहीं नशातिहै ॥
चल दल पानसे उदर पर राजी रोम,
राजीकी बनक मेरे मनमें बसातिहै ॥
रसराज स्याहीसों लिखीहै नीकी भांति काहू,
मानो यंत्रपांति घन अक्षरी लसातिहै ॥ १२ ॥

अथ नामगण यथा—कवित्त ॥

दास अब को कहै बनक लोल नैननकी,
सारस खंजन बिन अंजन हरायेरी ।
इनकोतौ हासो वाके अंगमें आगिनिवासो,
लीलहीं जुसारो सुखसिंधु बिसरायेरी ॥
परे वे अचेतरहैं वे सकल चिरुचत,
अलक भुजंगी डसै लोटन लोटायेरी ।
भारत अकर करतूति न निहारि लही,
याते घनश्याम लाल तोते बाज आयेरी ॥ १३ ॥

वक्रोक्ति लक्षणम् ॥

दोहा—द्वर्थ काकुते अथको, फोरि लगावै तर्क ।
बक्र उक्ति तासो कहैं, जो बुधि अम्बुज अर्क॥ १४॥

यथा—कवित्त ॥

आजुतौ तरुनि कोप युत अवलोकियत,
ऋतु रीति दास है किशलयानिदानजू ।
सुमननहीं होय है क देखें घनश्याम,
कैसी कहौ बात मंद शीतल सुजानजू ॥

सोहैं करो नैन हमैं आननहीं आवै कारि,
आनकी बुझिय आन वीरहीकी आनजू ।
क्योंहै दिलगीर रहिगये कहूं पीरे पीरे,
एते मान मान यह जानै बागवानजू ॥ १५ ॥

यथा—कवित्त ॥

कैसो कहै कान्ह सोतो हौहीं खरो एक अब,
सहसमें जैसे एक राधा रस भीजिये ।
गहिये न कर होत लाखनको ज्यान लाल,
वाहि ये तो आपनो पदुम हम दीजिये ।
नीलके बसन क्यों बिगारतहौ योंही काज,
बिगरेतो हमपै बदल शंख लीजिये ।
देखती करोरी वारी संगिनी हमारीहै,
अरब्बीवारे हमसंग संका कंत कीजिये ॥ १६ ॥

अथ वक्रोक्तिवर्णनम्—कवित्त ॥

लाल ये लोचन काहे प्रियाहैं दियो हैहै मोहन रंग मजीठी
मोतोउठीहैजुबैठे अरीनिकीसीठीक्योंबोलै मिलाइ यों मीठी
चूक कहो किमि चूकति सो जिन्हैं लागी रहै उपदेश बसीठी
झूठी सबै जग सांचलला यह झूठीतिहारिहूपापकीचीठी ॥

अथ पुनरुक्तिवदाभास वर्णनम् ॥

दोहा—कहत लगै पुनरुक्तिसो, पैपुनरुक्ति नहोइ ।
पुनरुक्ति वदाभासतिहि, कहै सकल कविलोइ॥ १८

यथा ॥

दोहा–अली भँवर गुंजन लगे, होनलग्यो दलपात ।
जहँ तहँ फूले वृक्ष तरु, प्रियप्रीतम कितजात॥ १९

इतिश्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहि-
न्दूपतिविरचितेकाव्यनिर्णयेश्लेषालंकारादिवर्णनन्नाम
विंशातितमोल्लासः॥२० ॥

अथाचित्रालंकारवर्णनम् ॥

दोहा–दास सुकवि वाणी थकै, चित्रकवित्तनि माहिं ।
चमत्कारहीनार्थको, यहाँ दोष कछु नाहिं ॥ १ ॥
बवजवर्न निज जानिये, चित्रकाव्यमें एक ।
अर्द्धचंद्रको जनिकरो, छूटेलगे विवेक ॥ २ ॥
प्रश्नोत्तर पाठान्तरो, पुनि वाणीको चित्र ॥
चारि लेखनी चित्रको, चित्रकाव्यहै मित्र ॥ ३ ॥

अथ प्रश्नोत्तर चित्र लक्षणम्॥

दोहा–प्रश्नोत्तर चित्रित करै, सज्जन सुमति उमंग ।
द्वैविधि अंतर्लापिका, बहिर्लापिका संग ॥ ४ ॥
गुप्तोत्तर उर आनिक, व्यस्त समस्तहि जानि ॥
एकानेकोत्तर बहुरि, नागपाश पहिचानि ॥ ५ ॥
है क्रमव्यस्त समस्त पुनि, कमलबधवत मित्र ॥
शुद्ध गतावत शृंखला, नवम जानिये मित्र ॥ ६ ॥
अगणित अंतलापिका, यों वर्णत कविराइ ॥
बहिर्लापि जानो उतर, छंदबाहिरे पाइ ॥ ७ ॥

अथ गुप्तोत्तरलक्षणम् ॥

दोहा—वाच्य अंत शब्द छलनि, उतरदेइ दुराइ ।
गुप्तोत्तर तासों कहैं, सकल सुमति समुदाइ ॥ ८ ॥

यथा ॥

दोहा—सब तनु पिय वर्ण्यो अमित, कहि कहि उपमाबैन ।
सुन्दरि भई सरोष क्यों, कहत कमलसे नैन ॥ ९ ॥

अस्य तिलक ॥

कमलसे कहे कमल शोभितभये ॥

यथा ॥

दोहा—सुत सुपूत संपतिभरी, अंग अरोग सुढार ।
रहै दुखित क्यों कामिनी, पीउ करै बहु प्यार॥ १०

अस्यतिलक ॥

बहु प्यार कहे बहुतनको प्यार करतहै ॥

अथव्यस्तसमस्तोत्तर वर्णनम् ॥

द्वै त्रय वर्णनि काटि पद, उत्तर जानियेव्यस्त ।
व्यस्त समस्तोत्तर वही, पिछिलो उतरसमस्त ११ ॥

यथा ॥

दोहा—कानै दुखदको हंससों, को पंकज आगार ।
तरुनजननको मनहरनि, कोकरि चित्त विचार १२॥
कौन धरैहै धरणिको, को गयंद असवार ।
कौन मृगनको जनकहै, को पर्वत सरदार ॥ १३ ॥

एकानेकोत्तरवर्णनम् ॥

दोहा-बहुत भाँतिके प्रश्नको, उत्तर एक बखानि ।
एकानेकोत्तर वही, अनेकार्थ बढमानि ॥ १४ ॥

यथा ॥

दोहा-बरो जरो घोरो अरो, पानसरो क्यों दार ।
हितू फिऱ्यो क्यों द्वारतें,हुत्यो नफेरनिहार ॥१५॥

यथा ॥

दोहा-कारो कियो विशेषिकै, पावक कहा सभाग ।
काहे राँगिगो भौंरपद, पंडित कहै पराग ॥ १६ ॥
कैसी नृपसेना भली, कैसी भली ननारि ।
कैसी मग बिनु वारिकी, अतिरजवत्ती विचारि१७॥

अथ नागपाशोत्तर वर्णनम्

दोहा-इक इक अन्तर तानि बरन, द्वै द्वै वरन मिलाइ ।
नागपाश उत्तर यही, कुंडल सारिस बनाय ॥१८॥
सोरठा-कहा चन्दमें श्याम, क्षत्रिनको गुण कौन कहि ॥
कहा संवतहि नाम, पारसीकवासी कहै ॥ १९ ॥
कहारहै संसार, वाहन कहा कुवेरको ॥
चाहै कहा भुआर, दास उतर दिप सरसजन२०॥

अथ क्रमव्यस्त समस्त वर्णनम् ॥

दोहा-इक इक वर्ण बढावते, क्रमते लेहु समस्त ।
यह प्रश्नोत्तर जानिये, इह समस्त क्रमव्यस्त २१॥

यथा ॥

सोरठा-कौन विकलपीवर्न, कहा विचारत गणकगण ।

हरि ह्वैकै दुखहर्न, काहि बचायो ग्रस्तक्षण॥२२॥
कैवां प्रभु अवतार, क्यों वारै राई लवन ॥
कवनि सिद्धिदातार, दास कह्यो बारनबदन॥२३॥

अस्यातिलक ॥

बार बारन बारनव बारनबद बारनबदन ॥ २४ ॥

अथ कमलबद्धोत्तर–यथा ॥

दोहा–अक्षर पढो समस्तको, अंतर बरनसों जोरि ।
कमलबंध उत्तर वही, व्यस्त समस्त बहोरि॥२५॥

यथा–छप्पय ॥

कहा कपीश शुभअंग कहा उछलत बरबागन ।
कहा निशाचर भोग माँहमैदान कवन भन ॥
कहासिंधुमें भरचो सेतु किन कियो कोदुतिय ।
सरसिज कितै सकंट कहा लखि घृणा होत हिय ॥
किहिदास हलायुध हाथधरि मारचो महाप्रलम्बखल ॥
क्यों रहत सुचित साकत सदा,गनपति जननीनामबल॥

अथ शृंखलालक्षणम् ॥

दोहा–दुद्वै गतागत लेत चलि, इक इक वर्णतजंत ।
नाम शृंखलोत्तरवही, होत समस्त जु अंत॥२७॥

यथा–कवित्त ॥

छबि भूषणको जयको हरको सुरको घरकोशुभ कौनरुती ॥
किहि पाये गुमान बढै किहि आये घटै जगमें थिरकौनदुती।
शुभजन्मका दासकहा कहिये वृषभानुकी राधिकाकौनहुती
घटिकानिशि आजुसुकेती अलीकिहि पूजहिंगीनगराजसुती

अस्यातिलक ॥

नगगराराजजसुसुती ॥

अथदूजीशृंखलावर्णनम् ॥

दोहा—पहिले गत चलिजाइये, अगत चलिय पुनि व्यस्त ॥
इहो शृंखलोत्तर गनौ, पुनि गत अगत समस्त ॥ २९ ॥

यथा—कवित्त ॥

को सुघर कहाकीनी लाज गणिकानिको,
पढैया खग मोहै काहे मृग कहा तपीवश ॥
कहा नृप करै कहा भूमै विसतरै काहे,
युवाछबि धरै कोहै दासनामकेहै रस ॥
जीतै कौन कौन अखराफी रेफ केकै कहा,
कहैं कूर पीत राखै कहा कहि ह्योसदस ॥
साधु कहा गावै कहा कुलटा सती सिखावै,
सबको उत्तर दास जानकी रवन यश ॥ ३० ॥

अस्यतिलक ॥

जाननकीकीररववबननयययशजानकीरवनयश ॥

अथचित्रोत्तरवर्णनम् ॥

दोहा—जोई अक्षर प्रश्नको, उत्तर ताहीमाह ।
चित्रोत्तर ताही कहैं, सकल कविनके नाह ॥ ३१ ॥

यथा—सवैया ॥

कौन परावन देवसतावन को लहै भार धरै धरतीको ॥
कोदसहीमें सुन्यों जिन ठौरन कीन्ह्योदशोदिगपालनटीको

जानत आपुको बृन्द समुद्रमें कामै स्वरूप सराहिये नीको
कादर वारन सोहन सूरन कोप जरावतपुण्यतपीको॥ ३२॥

इति अंतर्लापिका॥

अथ बाहिर्लापिका उत्तर वर्णनम्—कवित्त॥

कोगन सुखद काहे अंगुली सुलक्षणी है,
देत कहा धन कैसो विरहीको चंदु है।
जालै क्यों तुकारै कहा लघु नाम धारै,
कहा नृत्यमेंविचारै कहा फांद्यो व्याधफंदुहै।
कहा दै पचावै फूटे भाजनमें भातक्यों,
बोलावै कुश भ्रात कहा वृषबोलुमंदुहै।
भूपै भावे कौन खगखेलै कौन समेप्रिया,
फेरे कहि कहा कहा रोगिनको बंदुहै॥ ३३॥

दोहा—खचि त्रिकोनबल बाहिलिखि, पढो अर्थमिलि ज्योंहिं
उत्तरसर्वतोभद्र यह, बहिर्लापिका योहिं॥ ३४॥

पलवइति बहिर्लापिका॥

अथ पाठांतर चित्र॥

दोहा—वर्णलुये बदले बढे, चमत्कार ठहराइ।
सो पाठांतर चित्रहै, सुनो सुमति समुदाइ॥ ३५॥

वर्णलुप्त वर्णनम्—चौपाई छंद॥

तमोल मँगाइ धरो इहि बारी। मिलैवे किहै जियमेंरुचिभारी॥
कन्हाईफिरैतबधोंसखिप्यारी। बिहारकि आजुकरोअधिकारी

अस्य तिलक॥

शिरको एक एक वर्ण छोडि पढै तौ दूसरो अर्थ॥

चौपाई छंद ॥

मोल मँगाइ धरो इहिबारी । लेवे किहै मनमेंरुचिभारी ॥
न्हाइफिरैकवधोंसखिप्यारी। हारकिआजुकरोअधिकारी३७

दोहा–मत्तगमै मिलिबी भलो, नहिं बातुलसों लाल ॥
नहिं समुझ्यो दुहुँ शब्दको, मध्य लोपिये हाल३८॥

अस्यातिलक

मगमें मिलि बोलो नहीं वालसों ॥

अथ वर्णवदलो यथा–कवित्त ॥

साज सब जाको बिन मांगे करतार देत,
परमअधीश सब भूमिथल देखिये ॥
दासीदास केतो करिलेत सधरमते,
सलक्षणसाहिंमाति सहर्ष अवरेखिये ॥
शील तन शिरताजसरवन बढाय ज्यों,
सकल आशयसाचुमेंजगतयश पेखिये ॥
हिंदूपति गुणमें जे गाये मैं सकारे ताको,
वैरिनमें क्रमते नकारेकरि लेखिये ॥ ३९ ॥

अस्य तिलक ॥

अर्थ वर्णबढेको पहिले लुप्तहीते जानवी ॥

अथ वाणीचित्रवर्णनम् ॥

दोहा–वरनि निरोष्ठ अमत्त पुनि, होत निरुष्ठा मत्त ।
पुनि अजिह्व नियमित बरन, वाणी चित्राहितत्त४०

अथ निरुष्ठलक्षणम् ॥

दोहा--छाँडि पवर्गइ ओ वरन, और वर्ण सब लेहु।
याको नाम निरोष्ठहै, हियधर निः संदेहु ॥ ४१ ॥

यथा—कवित्त ॥

कनहै शृँगार रसके करन यशयेश,
घन घन आनँदकी झरजे संचारते।
दास सरिदेत जिन्हें सारसके रसरसे,
अलिनके गणखन खनत नझारसे ॥
राधादिक नारिनके हियकी हकीकति,
लखेते अचरज रीति इनकी निहारते।
कारे कान्ह कारे कारे तारे ये तिहारे जित,
जाते तित राते राते रंग करिडारते ॥ ४२ ॥

अमत्तलक्षणम् ॥

दोहा--एक ओरने वर्णिये, रउये ओ कछु नाहिं।
ताहि अमत्त बखानिये, समुझो निज मनमाहिं।४३॥

यथा—छप्पय ॥

कमलनयन पद कमल कमल कर अमल कमल धर।
सहस शरद शशिधरन हरन मद लसत बदन बर ॥
रहत सतन मन सदन हरष छन छनत तबरसत।
हर कमलजसमनलहत जनम फल दरशनदरशत ॥
तनसघन सजल जलधर बरन जगत धवलयशवशकरन।
सब बदन दरन अमरन बरन दशरथ तनय चरनशरन४४

निरोष्ठामत्त यथा ॥

दोहा–पढत नलागै अधर अरु, होइ अमत्ता बर्न ॥
ताहि निरोष्टा मत्त कहि, कहैं सुकवि मन हर्न ॥४६॥

छप्पय ॥

कहत रहत यश खलक शरद शशिधरन झलकतन ।
रजत अचल घरसजत कनक धन नगन सकलगन ॥
जलअरचत घनसतन हरष अनगन घरसरसत ।
हतन अनग गन जतन करत छन दरशन दरशत ॥
जल अन घरजरद अनकन लसनयन अनलधर गरलगर
जन दरद दरन अशरन शरन जय जय जय अघहरनहर

अथअजिह्ववर्णनम् ॥

दोहा–जितह वर्णअकवर्ग तित, और न आवै कोइ ।
ताहि अजिह्वबखानहीं, जिह्वा चलित नहोइ ॥४७॥

कवित्त ॥

पाइहै घीय अघाइहै हीय गहागहै गीय अहै कहाखंगा ।
हैहै कही कोहै खैखै ए गेहके गाहक खेहके खेहहै अंगा ॥
काहेकोघाइहैओअघओघको कागकी कीककहाकियेकंगा।
गाइये गंगा कहाइये गंगाकेही गहै गंगा अहै कहै गंगा४८॥

अथ नियमित वर्णनम् ॥

दोहा–इक इकते छब्बीस लगि, होतवर्ण अधिकार ।
तदपि कह्यो हो सातलौं, जानिग्रंथाविस्तार ॥४९ ॥

अथ एकवर्णनियमित–यथा ॥

दोहा–तीतू ताते तीतिते, ताते तोते तीत ।

तोते ताते तत्तुतौ. तीतै तीता तीत ॥ ५० ॥

अथ द्विवर्णनियमित यथा ॥

दोहा–रोर मार रौरो रुरै; मुरि मुरि मेरी रारि ।
रोम रोम मेरो ररै, रामा राम मुरारि ॥ ५१ ॥

अथ त्रिवर्णनियमित–यथा ॥

दोहा–मनमोहन महिमा महा, मुनि मोहै मनमाहिं ।
महा मोह मैं मैं नहीं, नेह मोहिंमें नाहिं ॥ ५२ ॥

अथ चतुर्वर्णनियमित–यथा ॥

दोहा–महारिनिमोही नाह है, हरै हरै मन मानि ॥
मान मरोरै मानिनी, नेहराहमें हानि ॥ ५३ ॥

अथ पंचवर्ण–यथा ॥

दोहा–कमलागै कमलाकला, मिलै मैनका कौनि ।
नीकीमें गलगौनिकै, नीकीमें गलगौनि ॥ ५४ ॥

अथ षट्वर्णनियमित–यथा ॥

दोहा–सदा नंद संसारहित, नाशन संशय त्रास ॥
निस्तारनि संजयसदा, दरशन दरशत दास ॥५५॥

अथ सप्तवर्णनियमित्त यथा–कवित्त ॥

मधुमास मेरी परा धरा पगुधारे माधो,
धीरे धीरे गौनसों सुगंधपौन परिगो ॥
धीरे गैगै पुनि पुनि ररै न मधुरध्वनि
मानो मेरी रमनी मधुपसारे मारिगो ॥
पागे मनु प्रेमसों न माने समै साधे मौन,

सिगरे परोसी पापी धामसोंनिसरिगो ॥
रोषधरि गिरिधारी मनमें धसैनरी,
सुमनधनुधारी शर पैने पैने सारिगो ॥ ५६ ॥
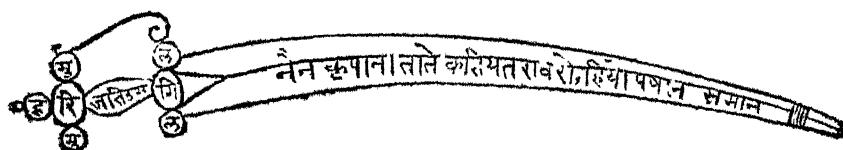
अथलेखनी चित्रवर्णनम् ॥

दोहा—खड्ग कमल कंकन डमरु, चन्द्र चक्र धनु हार ॥
मुरज छत्र युत बंधवहु, पर्वत वृक्ष केंवार ॥ ५७ ॥
विविध गतागत मंत्रगति, त्रिपदि अश्वगति जानि ॥
विमुख सर्वतोमुख बहुरि, कामधेनु उरआनि ॥ ५८
अक्षर गुप्त समेत है, लेखिनि चित्र अपार ।
वर्णन पंथ बताइमैं, दीन्हों मतिअनुसार ॥ ५९ ॥

अथ खड्गबद्ध ॥

दोहा—हरि मुरि मुरि जाती उमँगि, लगि लगि नैन कृपान ।
ताते कहियत रावरो, हियो पषान समान ॥ ६० ॥

अथ खड्गबद्ध ॥

अथ कमल वद्ध ॥
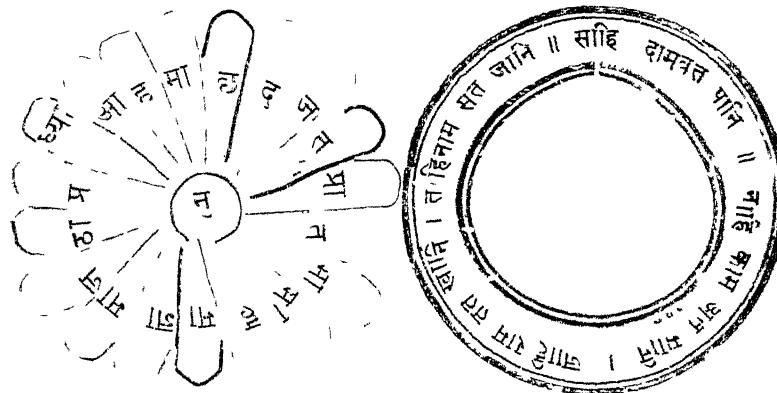
दोहा—छनु दनु जनु तनु प्रानु हनु, भानु मानु हनुमानु ।
ज्ञानु मानु जनु ठानु मनु, ध्यानु आनु हनुमानु ॥ ६१ ॥

अथकंकणवद्ध ॥

छंद–साहि दामवंत पानि, नाहिं, काम अंत मानि।
जाहि राम तंत खानि; ताहि नाम संत जानि॥६२

कमलवद्ध ॥ ६१ ॥ कंकणवद्ध ॥ ६२ ॥
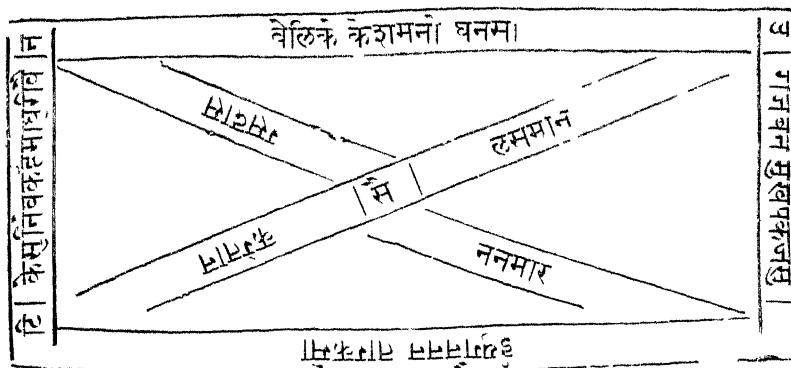
अथ डमरूवद्ध–सवैया ॥

शैल समान उरोज बने मुख पंकज सुंदरमाननसै।
सैनन मार दई युगनैनन तारे कसौटिन तारेकसै ॥
सैकरे तान टिके सुनिवे कहँ माधुरीवैन सदा सरसै ॥
सैर सदा सनवेलीके केश मनोघन सावनमास लसै॥६३॥

अथ डमरूवद्ध ॥

अथ चन्द्रवद्ध ॥

दोहा—रहै सदा रक्षाहिमें; रमानाथ रणधीर ।
आनहुँ दासो ध्यानमें, धरे हाथ धनु तीर ॥ ६४ ॥
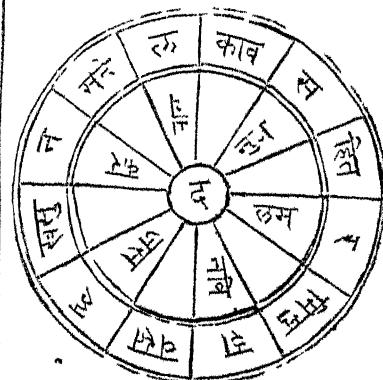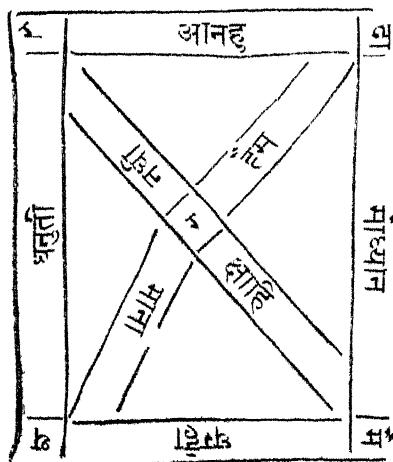
दूसरो चंद्रवद्ध ॥

दोहा—दनुज सदल मर्दनविशद, जस हद्करन दयाल ।
लहै सैन सुख हस्तवश, सुमिरतहीं सब काल॥६५॥
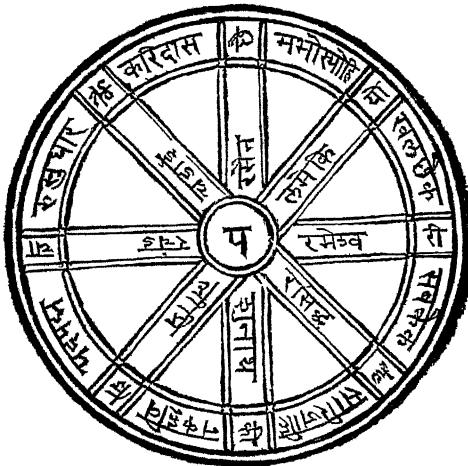
चन्द्रवद्ध ॥ ६४ ॥ चन्द्रवद्ध ॥ ६५ ॥

अथ प्रथम चक्रवद्ध ॥ हरिगीतिका ॥

परमेश्वरी परसिद्धहै पशुनाथकी पत्नी प्रियो ।
परचंड चाप चढाइकै परसन छैपलमें कियो ॥
खल छैकरी सबकैकहै सरिजाहि कौन कहूं वियो ।
पदपद्म चारु सुधारकै कारिदास क्षेम भरयौ हियो ॥ ६६ ॥
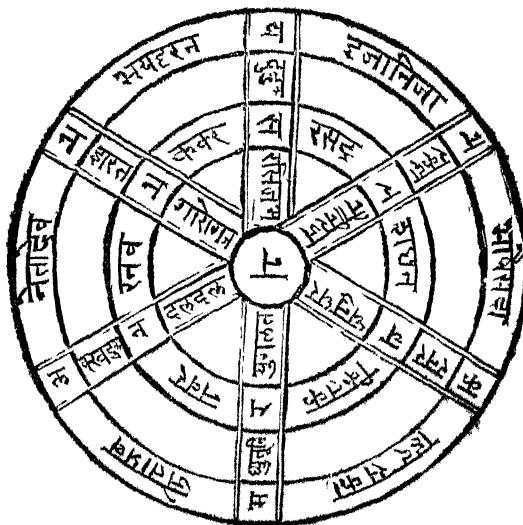
प्रथम चक्रवद्ध ॥

अथ दूसरा चक्रवद्ध ॥

छंद--कर नराच धनुधरन नरकदारनो निरंजन ।
यदुकुल सरसिज भान नइरितनगारो गंजन ॥
लक्खदुअन दल दरन मध्य तूनीर युगलतन ।
चकित करन वर नरन वनकवर सरस दरशछन ॥
कहि दास काम जेता प्रबल नेना देवन भयहरन ।
यह जानि जान भाषै सदा कमलनयनचरनन शरन ॥
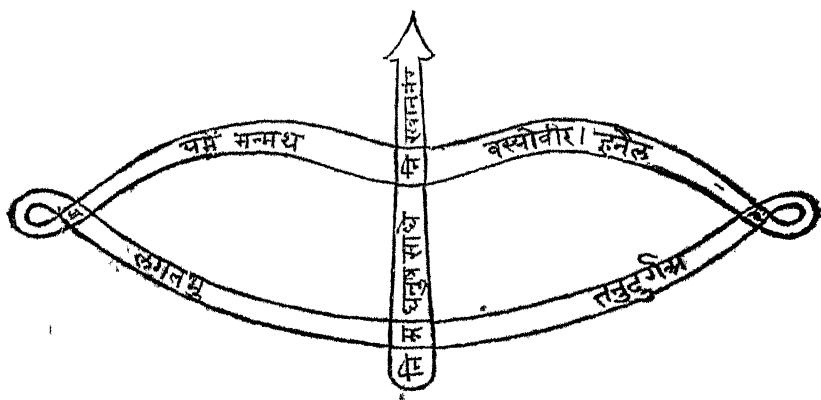
दूसरो चक्रबद्ध ॥

अथ धनुषबद्ध ॥
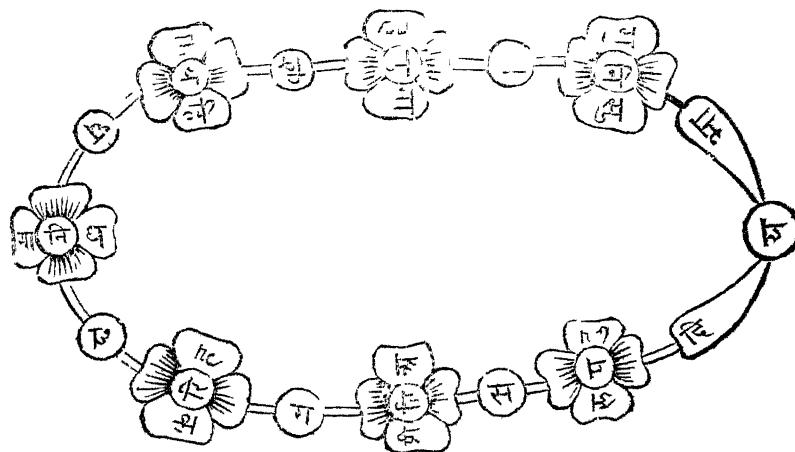
दोहा—तियतनु दुर्ग अनूपमें, मन्मथ निवस्योवीर ।
हनैलगत मत भुवधनुष, साधे निरखनि तीर ॥ ६८ ॥

धनुषबद्ध ॥

अथ हारबद्ध।
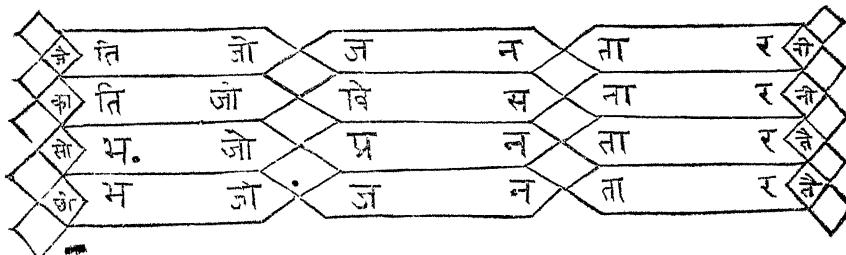
दोहा–सुनि सुनिपनुहनुमानु किय, सिय जियधनि धनिमानि
धरि करिहरिगतिप्रीति अति, सुखरुखदुखदियभानि

अथ हारबद्ध ॥

अथ मुरजबद्ध ॥

छंद–जौति जोजन तारनी, कांति जो बिसतारनी ॥
सो भजो प्रनतारतै, छोभ जो जन तारतै ॥ ७० ॥

मुरजबद्ध ॥

जौ	ति	जो	ज	न	ता	र	नी
कां	ति	जो	बि	स	ता	र	नी
सो	भ	जो	प्र	न	ता	र	तै
छो	भ	जो	ज	न	ता	र	तै
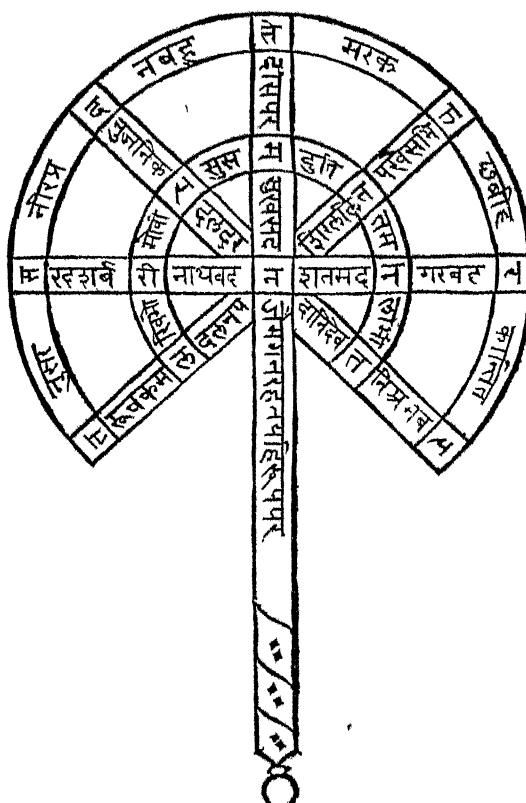
अथ छत्रवद्ध—छप्पय ॥

दनुज निकर दलदरन दानि देवतनि अभैवर ।
शरदशर्बरीनाथ बदन शत मदन गरवहर ॥
तरुन कमलदल नैन ललित शिर पंख सोभित ।
लखि भोरी मो वीर सुसम द्युति तन मन लोभित ॥
तनु सरस नीरप्रद न बहुते मकत छबि हर कांतिवर ।
ते दास परमसुख सदनजै मगन रहत यहि रूपपर ॥ ७१ ॥

छत्रवद्ध—

अथ पर्वतबद्ध सवैया ॥

के चितवैहै कै तोपरदेहै ललीं जिय व्याधिनसों पचिकै ॥
नीरसकाहे करै रसबातमें देहि औ लेहि सुखै सचिकै ॥
नच्चत मोर करैं पिकसोर विराजतो भौंर घनो मचिकै ॥
के चितहै रवनी तन तोहि हितो न तनी वरहे तचिकै॥७२॥

पर्वत बद्ध ॥
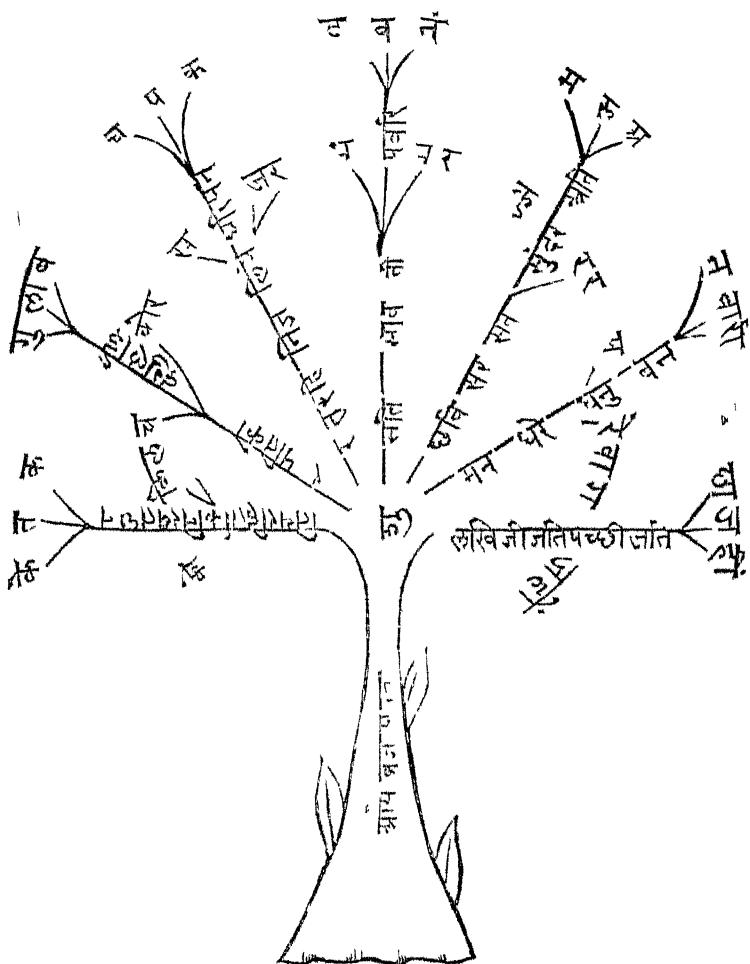
के
चि
त
वै हे कै
तो प र दे है
ल लीं जि य व्या धि न
सों प चि कै॥ नी र स का हे
क रै र स बा त मैं दे हि औ ले
हि सु खै स चि कै॥ न च्च त मो र क रैं
पि क सो र वि रा ज तो भौं र घ नो म चि क
हि

अथ वृक्षबद्ध छप्पय ॥

आये ब्रज अवतंशु सुतिय रहि ताकि निरखत छन ॥
सुरपतिको ढंगुलाइ सुरतरुहि निज लिय धरिपन ॥
सुसतिभावती पवरि सुछवि सरसत सुन्दर अति ॥
सुमनधरे धनुबान सुलखि जीजाति पच्छीजाति ॥

कोकिल चकोर खंजर घवर कुरर परेवा राजहीं ॥
केतक गुलाव चंपक दवन मरुअ नवारी छाजहीं७३॥

वृक्ष बद्ध ॥

अथ कपाटबद्ध ॥

दोहा–भवपति भुअपति भक्तपति, सीतापति रघुनाथ ।
यशपतिरसपति रासपति, राधापति यदुनाथ ॥ ७४॥

कपाट बद्ध ॥

भवप	ति	पशय
भुवप	ति	पसर
भक्तप	ति	पसा
सीताप	ति	पधारा
रघुना	थ	नादुय

आधेहीते एक गतागत ॥

दोहा–आधेहीते एक जहँ, उलटो सीधो एक ।
उलटे सीधेहू कवित, त्रिविध गतागत टेक ॥ ७५ ॥

आधेहीते उलटे सीधे एक–यथा ॥

छंद–दासमैननमैसदा, दाग कोप पको गदा ॥
शैलसोनन सोलसै, सैनदै ततदै नसै ॥ ७६ ॥

दा	स	मै	न
दा	ग	को	प
शै	ल	सो	न
सै	न	दै	त

उलटे सीधे एक–यथा ॥

दोहा–रही अरी कबते हिये, गसी सिनिरखनि तरि ।

रतीनिखर निशि सीगये, हितंवकरी अहीर ॥ ७७ ॥

उलटो सीधो एक-यथा ॥

दोहा-सखा दरद को री हरी, हरिको दरद खास ।
सदाअकिल वांनगनै, गनै वाल किय दास ॥ ७८ ॥

कवित्त ॥

रेभजु गंग सुजान गुणीसुसुनीगुण जासु गगंजु भरे ।
रेतकने अगलों लहिनेकु कुनेहि ललोग अनेक तरे ।
रेफसमोर धजाहिरखास सवारहि जाधर मोसफरे ॥
रेखतपानिहि जो हित दास सदा तिहि जोहिन पातखरे७९

उलटे सीधे द्वै यथा ॥

दोहा-नजानतहु यहि दास सों, हँसौं कौन तन गेल ।
नाआहिन पति दुरवसों, रमो नतवरस शैल ॥ ८० ॥
लसै सरब तन मोरसों, बरे द्वितिय नहिं आन ।
लगै न तनको सोंहसों, सदा हियहु तन जान ॥ ८१ ॥

सवैया ॥

सीवन मालिहि हीनजलै महि मोहि दगो अति हेत रलो ।
सीकर जीजरि हानि ठयो सुलयो कविदासन चैत पलो ॥
शील न जानति भातबशारद याहि निरीखन है न भलो ।
शीश जलायो मलैज हुते यहि भीषमु जोन्ह नजात चलो८२
लोचन जानन्ह जो मुख भी हियते हुजलै मयो लाज ससी ।
लोभ न है नखरी निहिया दरशावत भाँतिन जानुलसी ॥
लोपत चैन सदा बिकपोल सुओठनिहारि जंजीर कसी

ढोरत है तिय गोदहु मोहि मलैज नहीं मिलि मानबसी ८३॥

अथ चित्रपदी यथा ॥

दोहा—मध्य चरण इक दुहुँ दलन, त्रिपदी जानहु सोइ ।
वहै मंत्र गति अश्वगति, शुद्धसु याहूँ दोइ ॥ ८४ ॥

अथ प्रथमात्रिपदी ॥

दोहा—दास चारुचित चाइ मय, महै श्यामछबि लेखि ।
हास हारु हित पाइ भय, रहै काम दवि देखि ॥८५॥

प्रथमात्रिपदीवद्ध—दोहा ॥

दा	चा	चि	चा	म	म	श्या	छ	ले
स	रु	त	इ	य	है	म	वि	खि
हा	हा	हि	पा		≀	का	द	दे

अथ द्वितीयात्रिपदी ॥

दोहा—जहां जहां प्यारे फिरैं, धरैं हाथ धनु बान ॥
तहां तहां तारे घिरैं, करैं साथ मनु प्रान ॥ ८६॥

द्वितीयात्रिपदीवद्ध—दोहा ॥ ८६

ज	ज	प्या	फि	ध	हा	ध	बा
हां	हां	रे	रैं	रैं	थ	नु	न
त	त	ता	घि	क	सा	म	प्रा

मंत्रिगत्ति–दोहा ॥ ८६ ॥

ज	हां	ज	हां	प्या	रे	फि	रैं	ध	रें	हा	थ	ध	नु	बा	न
त	हां	त	हां	ता	रे	घि	रैं	क	रैं	सा	थ	म	नु	प्रा	न

अवश्यवाति–दोहा–॥ ८६ ॥

ज	हां	ज	हां	प्या	रे	फि	
ध	रे	हा	थ	ध	नु	बा	न
त	हां	त	हां	ता	रे	घि	रैं
क	रैं	सा	थ	म		प्रा	न

अथ सुमुखबद्ध–भुजंगप्रयात ॥

सुबानी निदानी मृडानी भवानी ।
दयाली कृपाली सुचाली विशाली ॥
बिराजै सुराजै खलाजै सुसाजै ।
सुचंडी प्रचंडी अखंडी अदंडी ॥ ८७ ।

सुमुखबद्ध–भुजंगप्रयात ॥ ८७ ॥

सुबानी	निदानी	मृडानी	भवानी
दयाली	कृपाली	सुचाली	विशाली
बिराजै	सुराजै	खलाजै	सुसाजै
सुचंडी	प्रचंडी	अखंडी	अदंडी

अथ सर्वतोमुख-श्लोक

मारारामुमुरारामाराराजानिनिजासरा ॥
राजारवीवीरजारामुनिवीसुसुवीनिमु ॥ ८८ ॥

मा	रा	रा	मु	मु	रा	रा	मा
रा	स	जा	नि	नि	जा	स	रा
रा	जा	र	वी	वी	र	जा	रा
मु	नि	वी	सु	सु	वी	नि	मु
मु	नि	वी	सु	सु	वी	नि	मु
रा	जा	र	वी	[illegible]	र	जा	रा
रा	स	जा	नि	[illegible]	जा	स	रा
मा	रा	रा	मु	मु	रा	रा	मा

अथ कामधेनु लक्षणम् ॥

दोहा—गहि तजि प्रतिकोठानि बढ़ैं, उपजैं छंद अपार ॥
व्यस्त समस्त गतागतहु, कामधेनु विस्तार ॥ ८९ ॥

दार	चहै	नाहि	और	सों	यौं	राच	गाढि	एहै	जन	जान	रहै	नाति
आस	गहै	याहि	ठौर	सों	ज्यौं	नव	रूढि	ऐसै	तन	प्रान	ढरै	आति
वास	दहै	गाहि	दौर	सों	ह्यौं	अब	तूढि	एतै	प्रन	ठान	धरै	राति
हास	लहै	वाहि	तौर	सों	प्यौं	तव	मूढि	एमै	मन	मान	करै	मति

अथ चरणगुप्त यथा कवित्त ॥

री सखि कहाकहौं छबि गुणगणिअलिन्ह बसायो काननिमैं
कानन तजि पुनिदृगनि बस्यो ज्यों प्राणी बिरमैं थाननिमैं॥
क्रमक्रम दास रह्यो मिलि मनसा कठैनविविध विधाननिम
लूटै ज्ञान समूहनिको अब भ्रमैं बिहारी प्राणनिमें ॥९०॥

री	सखक	हा	कहोंछ	बि
गु	नगनि	ल०	लिन्हब	सा
यो	[illegible]	मे०	काननि	त
जि	पुनि[illegible]	ग	निबस्यो	ज्यौं
प्रा	णीबिर	मै	थ[illegible]नि	मै
क्र	क्रम	दा	सरह्यो	मि
[illegible]	मनसौं	क	ढैनबि	[illegible]
[illegible]	[illegible]	नि	[illegible]लूटै	ज्ञा
न	समूह	नि	कोअब	भ्र

अथमध्याक्षरी—कवित्त ॥

अभिलाषकारी मंदा येसनिकामीय बृथ,
सब ठोर दीन सब याही सेवा चरचानि ।
लोभा लई नीचज्ञान चलाचलहीको अंसु,
अंतहै क्रियापताल निंदारसहीको खानि ॥
सैनापतिदैवी कर प्रभागनतीको भूप,
पन्ना मोती हीरा हेमसौदा हासहीको जानि ॥
हीयपर जीवपर बदे जसुरटे नाउ,

खगा सननगधर सीतानाथ कौलपानि ॥ ९१ ॥

दोहा–भूषण छ्यासी अर्थके, आठवाक्यके जोर।
त्रिगुण चारि पुनि कीजिये, अनुप्रास इकठोर॥९२॥
शब्दालंकृत पांचगनि, चित्रकाव्य इक पाठ।
इकइस वातादिक सहित, ढीकसतो परि आठ९३॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिंदूपतिविरचिते काव्यनिर्णयेचित्रकाव्यवर्णननामइकविंशतिमोल्लासः ॥ २१ ॥

अथ तुकनिर्णयवर्णनम् ॥

दोहा–भाषा वर्णनमें प्रथम, तुक चाहिये विशेषि।
उत्तम मध्यम अधम सो, तीनिभांतिको लेखि॥१॥

उत्तम तुक भेद ॥

दोहा–सम सरि कहुँ कहुँ विषम सरि, कहूं कष्टसरि राज ॥
उत्तम तुकके होतहैं, तीनिभांतिके साज ॥ २ ॥

अथ समसरि यथा ॥ कवित्त ॥

फेरि फेरि हेरि हेरि करि करि अभिलाष,
लाष लाष उपमा विचारतहैं कहने ॥
विधिही मनाव जो घनेरे दृग पावै तौ,
चहत याहि संतत निहारतहीं रहने ॥
निमिष निमिष दास रीझन निहालहोत,
लूटेलेत मानो लाख कोटिनके लहने ॥

एरी बाल तेरे भाल चंदनके लेप आगे,
लोपिजाते औरके जराइनके गहने ॥ ३ ॥
कहने रहने लहने, गहने,

अथ विषमसरि–सवैया ॥

कंज सकोचि गडेरहैं कीचमें मीननबोरिदियो दहनीरनि ॥
दास कहै मृगहूको उदासकै, बास दियोहै अरण्यगंभीरनि॥
आपुसमें उपमा उपमेयह्वै, नैन ए निंदतहैं कवि धीरनि ॥
खंजनहूंकोउडाइदियो,हलुको करि दीन्हचो अनंगकेतीरनि
नीरनि गंभीरनि धीरनि तीरनि,

अथ कष्टसरि यथा–सवैया ॥

सातघरीहूं नहीं बिलगात, लजात सोबात सुनेमुसुकातहैं ॥
तेरीसों खातहों लोचन रातहै सारसपातहुते सरसातहैं ॥
राधिका माधवउठे परभातहैं नैन अघातहैं पेपि प्रभातहैं ॥
आरसगात भरे अरसातहैं लागिसो लागि गरेगिरिजातहैं ५

अम्यातिलक ॥

प्रभातहै द्वैपदते आयो ताते कष्ट है ॥

अथ मध्यमतुकवर्णनम् ॥

दोहा–असंयोग मिलि स्वर मिलित, दुमिल तीनि प्रकार
मध्यम तुक ठहरावते, जिनके बुद्धिअपार ॥ ६ ॥

असंयोगमिलित–यथा ॥

दोहा–मोहिं भरोसो जाउँगी, श्याम किशोरहि ब्याहि ॥
आली मो आँखियान तरु, इन्हैं न रहती चाहि॥ ७॥

अथ स्वरमिन्हित यथा-सवैया ॥

कछु हेरनके मिस हेरि उतै वाहि आय कहाहौ महाविसवै ।
दृगवाके झरोखनि लागिरहे सब देहदही बिरहागिनि मैंतै ॥
कहिदास बरैती न एतीभली समुझो वृषभानुलली वह है ।
खरी झांवरी होत चली तबते जबते तुमआयोहै भाँवरिदै ॥

अथ दुर्मिल यथा-सवैया ॥

चंद्रसों आनन राजतोतियको चांदनीसों उतरीय महुज्जल ।
फूलसे दास झरैंबनियानमें हांसीसुधासीलसै अतिनिम्र्मल ॥
वाफते कंचुकी बीचबनै कुचसाफते तारमुलैमैं औ श्रीफल
ऐसी प्रभा आभिराम लखे हियरामें किये मनो धामहिमंचल ॥

अथ अधमतुक वर्णनम् ॥

दोहा-अमिल सुमिल मत्ताअमिल, आदिअंतको होइ ।
ताहि अधम तुक कहतहैं, सकल सयाने लोइ ॥ १० ॥

अथ अमिल सुमिल-यथा-तोटक छंद ॥

अति सोहाति नींदभरी पलकैं ।
अरु भीजि फुलेलनकी अलकैं ॥
श्रमबुंद कपोलनमें झलकै ।
अँखियां लखि लालकी क्यों नछकैं ॥ ११ ॥

आदिमत्तअमिल-तोटकछंद

मृदुबोलन बीच सुधा श्रवती ॥
तुलसीबन बेलिनमें भँवती ॥

नहिंजानिय कौन किहैं युवती ।
वहिते अब औधिहै रूपवती ॥ १२ ॥

अथ अन्तमत्तअमिल ॥

दोहा—कंजनयनि निजकंजकर, नैनानि अंजन देतु ।
विषमानो बाणन भरति, मोहिं मारिबेहेतु ॥ १३ ॥
होत वीपसा यामकी, तुक अपनेहीं भाउ ।
उत्तमादि तुक आगेही, हैलाटिया बनाउ ॥ १४ ॥

अथ बीप्सा यथा—कवित्त ॥

आजु सुरराइपर कोप्यो तमराइ कछू,
भेदन बढाइ अपनाइ लैलै घनु घनु ॥
कीनी सब लोकमें तिमिर अधिकारी तिमि,
रारिको बेगारीलै भरावै नीर छनु छनु ॥
लोप दुतिवंतनको देखि अतिव्याकुल,
तरैयां भाजिआईं फिरैं जीगनाह्वै तनु तनु ॥
इंदुकी बधूटी सब साजनिकी लूटी खरी,
लोहू घूंटि घूंटिवै बगारि रही वनु वनु ॥ १५ ॥

यामकी—यथा ॥

दोहा—पाइ पावसे जो करै, प्रिय प्रीतम परिमान ।
दासज्ञानको लेस नाहिं, तिनमें तिन परिमान॥ १६॥

लाटिया यथा—कवित्त ॥

तो बिनु बिहारी मैं निहारीगति औरई मैं,
बौरईके वृंदन समेटत फिरतहैं ॥

दाडिमके फूलनमें दास दारयो दाना भरि,
चूमि मधुरसन लपेटत फिरतहैं ॥
खंजन चकोरन परेवा पिक मोरन,
मराल शुक भौंरन समेटत फिरतहैं ॥
काश्मीर हारनको सोनजुही झारनको,
चंपककी डारनको भेटत फिरतहैं ॥ १७ ॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंशश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबू-
हिंदूपतिविराचितेकाव्यनिर्णये तुक निर्णय वर्णनन्नाम
द्वाविंशातितमोल्लासः ॥ २२ ॥

अथ दोष लक्षणम् ॥

दोहा--दोष शब्दहूं वाक्यहूं, अर्थ रसहु में होइ ।
तिहताजि कविताई करै, सज्जन सुमाति जो होइ ॥ १ ॥

अथ शब्द दोष वर्णनम्--छप्पय ॥

श्रुति कटुभाषा हीन अप्रयुक्तो असमर्थाहि ॥
ताजि निहितारथ अनुचिताथ पुनि तजो निरर्थहि ॥
अबाचको अश्लील ग्राम्य सांदिग्ध न कीजै ।
अप्रतीतनेअर्थ क्लिष्टको नाम न लीजै ॥
अविमृष्ट विधेय विरुद्धमाति छँदसदुष्टये शब्दकाहि ॥
कहुँ शब्द समासाहिके मिले कहूं एक द्वै अक्षराहि ॥ २ ॥

श्रुति कटु--यथा ॥

दोहा--काननको कटु जो लगै, दास सुश्रुति कटु सृष्टि ।

त्रिया अलक चच्छुश्रवा, डसै परतहीं दृष्टि ॥ ३ ॥

अस्य तिलक ॥

चक्षुश्रवा औ दृष्टि ये शब्दही दुष्टहैं श्रुतिशब्द सकारनके समा मते दुष्ट भयो त्रियाशब्दमेंको र कारही दुष्टहै इहां तीन्यो भांतिको श्रुति कटु कह्यो ॥

भाषाहीन लक्षणम् ॥

दोहा–बदलि गये घटि बढि भये, मत्त बरनबिनरीति ।
भाषाहीनतिन्हैं गनै, जिन्हैं काव्य पर प्रीति ॥ ४ ॥

यथा ॥

दोहा–वादिन वैसंदुर चहूं, बनमें लगी अचान ।
जीवतक्यों ब्रज बाचतो, जोना पीवता कान ॥ ५ ॥

अस्य तिलक ॥

वैस्वानर बदलिकै वैसंदर भयो चहूं दिशिको चहूं कह्यो ए शब्द सब भाषाहीनहैं ॥

अथ अप्रयुक्तलक्षणम् ॥

दोहा–शब्दसत्यन लियो कविन्ह, अप्रयुक्त सो ठाउ ।
करै न वैयरहारिहिभी, कँदर्प कंसर घाउ ॥ ६ ॥

अस्य तिलक ॥

वैयरसखीभी यह कंदर्प कामको ब्रजभाषा औ संस्कृत करिकै सब शुद्धहै पै काहूकबि लयो नाहीं ताते अप्रयुक्तहै ॥

असमर्थ लक्षणम् ॥

दोहा–शब्दधरयो जा अर्थको, तापर जासु नशक्ति ।

चितदौरै परअर्थको, सो असमर्थ अभक्ति ॥ ७ ॥

यथा ॥

दोहा—कान्ह कृपाफल भोगको, करिजान्यो सतिवाम ।
असुरसाखि सुरपुर कियो, ससुर साखि निजधाम ॥८॥

अस्यतिलक ॥

सुर साखि कल्पतरु कह्यो अकारते औ सकारते यह अर्थ धरचो है विन कल्पतरुको सुरलोक कियो समेत कल्पतरु अपनोवर कियो सत्यभामाने सो कृष्णकी कृपाको फलहै ॥

अथ निहतारथ लक्षणम् ॥

दोहा—द्यर्थशब्दमें राखिये, अप्रसिद्धही चाहि ॥
जानोजाइ प्रसिद्धही, निहितारथ सो आहि ॥ ९ ॥

यथा ॥

दोहा—रेरे शठ नीरद भयो, चपला विधुचितलाइ ।
भवमकरध्वज तरनको, नाहिंन और उपाइ ॥ १० ॥

अस्य तिलक ॥

नीरद विना दंत विधु विष्णु चपला लक्ष्मी मकरध्वज समुद्रको राख्यो बादर चंद्रमा बिजुली कामदेव जान्यो जातु है ।

अनुचितार्थवर्णनम् ॥

दोहा—अनुचितार्थ कहिये जहाँ, उचित न शब्द अकाल ।
नागोहै दह कूदिकै, गहि ल्यायो हरिव्याल ॥ ११ ॥

यथा ॥

दोहा—जिहिं जावक अँखियाँरँगे, दई नखक्षत गात ।

रोपियशठ क्यों हठ करै, वाहीपै किनजात ॥ १२॥

अस्य तिलक ॥

नागो शब्दही दुष्टहै पियके समासते शठशब्द दुष्टभयो रंगीच हियेरंगे कह्यो चयो चाहिये दईकह्यो इहां मात्रादुष्टहै ।

अथ निरर्थक वर्णनम् ॥

दोहा–छंदहि पूरणको परै, शब्द निरर्थक धीर ।
अरी हनत हग तीरसों, तोहिं पई रणपीर ॥ १३ ॥

अस्यतिलक

ई र शब्द निरर्थक हैं ॥

अवाचकलक्षणम् ॥

दोहा–वहै अवाचक रीति तजि, लेइ नाम ठहराइ ।
कह्यो नकाहू जानियह, नहिं मानै कविराइ ॥१४॥
प्रगट भयो लखि विषमहय, विष्णुधाम सानदि ।
सहसपान निद्रा तज्यो, खुली पीक मुखवंदि ॥१५॥

अस्य तिलक ॥

शरदको सप्त हय कहतुहैं कमलको सहस्रपत्र कहतुहैं विष महयओसहपान कह्यो आधे आधे शब्द दुष्टहैं पीत मुख भौंरको विष्णु धामआकाशको यद्यपि संभवतुहै पै काहू नाहीं कह्यो नींद साजिवो फूलिवेको सानंदिवो आनंदित ह्वैवोये शब्द अवाचकहैं ।

अथ श्लीलवर्णनम् ॥

दोहा–पदश्लील कहिये तहां, घृणा अशुभ लज्जान ।
जीमूतानि दिन पितृगृह, तिपय गयह गुदरान॥१६॥

अस्यतिलक ॥

जीमूत बादरको कह्यो मूतशब्दसों घृणाहै पितृगृह पितृलोक हूको कह्यो ताते अशुभहै गुद औ रान मार्ग जंघाहूको कहिये ताते लज्या है तीनों श्लील आये ॥

अथ ग्राम्यलक्षणम् ॥

दोहा--केवल लोक प्रसिद्धको, ग्राम्य कहैं कविराइ ।
क्या झल्लै टुक गल्ल सुनि, भल्लर भल्लर भाइ॥ १७ ॥

अस्यातिलक ॥

क्या शब्द झल्लशब्द भल्लशब्द गल्लशब्द टुकशब्द भाइशब्द रे शब्द लहुलोकहीमेंहै काव्यमें नही प्रसिद्ध ।

अथ संदिग्ध लक्षणम् ॥

दोहा—नामधरयो सादिग्ध पद, शब्द संदेहिल जासु ।
वंद्या तेरी लक्ष्मी, करै वंदना तासु ॥ १८ ॥

अस्य तिलक ॥

वंद्या वंदी वाणीहूंको कहिये ताको वंदना कहा उचितहै वंदनीयको कह्यो होइ तो वंदना उचितहै ।

अथ अप्रतीतवर्णनम् ॥

दोहा—एकहि ठौर जु कहि सुन्यो, अप्रतीत सो गाउ ।
रेशठ कारे चोरके, चरणनसों चितलाउ ॥ १९ ॥

अस्यातिलक ॥

कारे चोर श्रीकृष्णको कालीदास हीकी काव्यमें सुन्यो है अनत नहीं सोऊ शृंगारहीमें ।

अथ नेआरथ वर्णनम् ॥

दोहा—नेआरथ लक्ष्यार्थ जहँ, ज्यों त्यो लीजै लेखि ॥
चंद्र चारि कौडी लहै, तव आनन छबि देखि॥ २०॥

अस्य तिलक ॥

अर्थात् तेरे मुखकी बराबरि नहीं कै सकतो ॥

अथ समासते—यथा ॥

दोहा—हे दुपंच स्यंदनशपथ, सैहजार मन तोहि ।
बल आपनो देखाउ जो, मुनि करिजानै मोहि२१॥

अस्य तिलक ॥

दुपंच स्यंदन दशरथको कह्यो सिगरो शब्द फेरचो से हजार मनलक्ष्मणका कह्यो आधो फेरचो ॥

यथा ॥

दोहा—तबलों रह्यो जंगभरा, राहु निविड तम छाइ ।
जबलों पट वैदूर्यनहिं, हाथ बगारत आइ ॥ २२ ॥

अस्य तिलक ॥

जगंभरा कहे विश्वंभरा पृथ्वी राहुको नाम कह्यो तम अंध्या रहूको कहिये पट वैदूर्य अंबर माणिके अर्थ हाथकर एक हेकर किरिनिको कहिये ॥

अथ क्लिष्ट लक्षणम् ॥

दोहा—सीढी सीढी अर्थगति, क्लिष्ट कहावै ऐन ॥
खगपति पति तिय पितु बधू, जलसमान तुववैन२३

अस्य तिलक ॥

गंगाजल समान वैन कह्यो ॥

यथा ॥

दोहा--बरुना हाथ कती चलै, सपाल लीन्हें साथ।
आदिस अंतरमध्यहित; होहिं तिहारी नाथ॥२४॥

अस्यतिलक ॥

ब्रह्मा रुद्र नारायण चक्र कमल त्रिशूल लिये पार्वती लक्ष्मी सरस्वतीसाथ तिहारी सहाय होहिं ॥

अथ अविमृष्टविधेय-यथा ॥

दोहा-है अविभृष्ट विधेय पद, छोडे प्रगटविधान।
क्यों मुख हरिलखि चख मृगी, रहिहैं मनमें मान२५

अस्यतिलक ॥

हरिमुख मृगी विधेयहै ॥

यथा ॥

दोहा-- नाथ प्राणको देखतै, जो असकी बसठानि।
धृग धृग सखि वे काजकी, बृथाबढी अँखियानि२६॥

अथ प्रसिद्ध विधेय-यथा ॥

दोहा-प्राणनाथको देखतै, जो नसकीबसठानि।
तौ सखि धृग विन काजकी, बडी बडी अँखियानि२७

अथ विरुद्धमतिकृत-यथा ॥

दोहा-सो विरुद्धमति कृत सुने, लगै विरुद्ध विशेष।
भाल अम्बिका रमनके, बालसुधा कर देख॥२८॥

यथा ॥

दोहा-काम गरीबनिके करैं, जे अकाजके मित्र।
जो माँगिये सो पाइये, ते धनि पुरुष विचित्र ॥२९॥

अस्यातिलक ॥

अम्बिका माताको कहि सुधाकर नीचे ब्राह्मणको कहिये ताते विरुद्धमतिकृत भयो दूसरे दोहामें जो जो बात स्तुतिकी कह्योहै सबमें निंदा प्रगटही है।

इति शब्ददोष ॥

अथ वाक्यदोष—छप्पय ॥

प्रतिकूलाक्षर जानि मानि हतवृत्तानि संध्यानि।
न्यूनाधिक पदकथित शब्द पुनि पतत प्रकर्षनि ॥
तजि समास पुनिरात चरण अंतर्गत पदगाहि।
पुनि अभवन्मतयोग जानि अकथित कथनीयहि ॥
पदस्थानस्थ सँकीरनो गर्भित अमत परारथहि।
पुनि प्रकरमभंग प्रसिद्ध हत छंद सवाक्य दूषण तजहि२०

अथ प्रतिकूलाक्षर—यथा ॥

दोहा—अक्षर नहिं पदयोगसों, प्रतिकूलाक्षरठाहि ॥ २१ ॥
पिय तिय लुट्टतहिं सुरस, ठट्टि लपट्टि लपाहि॥२१॥

अस्यातिलक ॥

ऐसे अक्षर रुद्ररसमें चाहिये सो शृंगारमें धऱ्यो ॥

हतवृत्त यथा ॥

दोहा—ताहि कहत हत वृत्त जहँ, छंदोभंग सुवर्ण।
लालकमलजीत्यो सुवृष, भानुललीके चर्ण ॥२२॥
यहो कहत हतवृत्त जहँ, नहीं सुमिलपदरीति।

दृग नखजनिजंघनि कदलि,रदनिमुक्त लिय जीति॥ ३३

अस्यतिलक ॥

दृगदंत कहिले तो जंघ कहतो ॥

अथ विसंधि लक्षणम् ॥

दोहा-सो विसंधि निजरुचि धरै, सांधि बिगारि सँवारि ।
मुर अरि यश उज्ज्वल जनै,तेरी श्याम तरवारि३४

अस्यतिलक ॥

मुरारि औ तरवारि चाहिये ॥

यथा ॥

दोहा-यहो विसंधि दु शब्दके, बीच कुपद परिजाइ ।
प्रीतमजू तिय लीजिये, भली भाँति उरलाइ॥ ३५॥

अस्य तिलक ॥

जूती शब्द श्लील होतुहै ।

अथ न्यूनपद यथा ॥

दोहा- शब्द रहै कछु कहनको, वहै न्यून पद मूल ।
राज तिहारी खड्गते, प्रगट भयो यश फूल॥ ३६॥

अस्य तिलक ॥

खड्ग लताते यश फूल चाहिये ॥

अथ अधिक पद यथा ॥

दोहा-सुहै अधिक पद जहँ पर,अधिकशब्द बिनुकाज ।
डसै तिहारे शत्रुको, खड्गलता अहिराज ॥ ३७ ॥

अस्यतिलक ॥

यहां लता शब्द अधिकहै ॥

अथ पततप्रकर्षवर्णन ॥

दोहा--सोहै पतत प्रकर्ष जहँ, लई रीति निबहैन ॥
कान्ह कृष्णके सब कृपासागर राजिवनैन ॥ ३८ ॥

अस्य तिलक ॥

चारि नाम ककारादिकह्यो आगे न निबह्यो ॥

कथित शब्द यथा ॥

दोहा--कह्यो फेरि कहे कथित पद,औ पुनरुक्ति कहीये।
जो तिय मोमन लैगई, कहां गई वह तीय॥ ३९॥

अस्यतिलक ।

तिय तिय द्वैबार आयो ॥

अथ समाप्त पुनरात्तवर्णनम् ॥

दोहा--कहिसमात बातहि कहै, फिरि आगे कछु बात।
सो समात पुनरात्तहै, दूषण मतिअवदात ॥ ४० ॥

यथा ॥

दोहा--दाभ बचाये पगधरो, ओढो पट अतिघाम।
सियहिसिखै यों निरखती,दृगजल भरि मगबाम ४१॥

अस्यतिलक ॥

निरखिकै सिखावती चाहिये ।

अथ चरणांतर्गत पदवर्णनम् ॥

दोहा--चरणान्तर्गत एक पद, द्वैचरणनतके माँझ।
गैयन लीन्हें आजु मैं,कान्हहि देख्यो सांझ ॥ ४२ ॥

अस्यतिलक ॥

कान्हशब्द द्वै चरणके मांझ पर्यो ।

अथ अभवन्मतयोगवर्णनम् ॥

दोहा–मुख्यहि मुख्य जो गनत कहि, सो अभवन्मतयोग॥
प्राण प्राणपति विनुरह्यो, अबलौंधृग ब्रजलोग॥ ४३॥

अस्यातिलक ॥

प्राणहीको धृग चाहिये ॥

यथा ॥

दोहा–बसन जोन्ह मुकुत्ता उडुग, तिय निशिके मुखचंद ।
झिल्लीगण मंजीर रव, उरज सरोरुह बंद ॥ ४४ ॥

अस्यातिलक ॥

यहा तिय निशि करिकै वर्णतुहै सो मुख्य करिकै समस्यामें चाहिये ॥

अथ अकवित कथनीय वर्णनम् ॥

दोहा–नाहिं अवश्य कहिबो कहै, सो अकथित कथनीय ।
प्रीतम पाँइ लग्यो नहीं, मानछोडती तीय॥ ४५ ॥

अस्यातिलक ॥

पाँइ लागेहूं चाहिये, सो नाहीं कह्यो ॥

यथा ॥

दोहा–शिरपर सोहै पीतपट, चन्दनको रँग भाल ।
पानलीक अधरन लगी, लई नई छबिलाल ॥ ४६॥

अस्यातिलक ॥

नई छवि कह्योहै तौ यों कहिबो अवश्यहै नील पट जावक-को रँग श्यामलीक ॥

अथ स्थान पद वर्णनम् ॥

दोहा-सोहे स्थानस्थपद, जहँ चहिए तहँ नाहिं।
है यों कुटिल गड़ी अजों, अलकैं मोमन माहिं ४७॥

अस्यातिलक ॥

कुटिलपद अलकके ढिग चाहिये ॥

अथ संकीर्णवर्णनम् ॥

दोहा-दूरि दूरि ज्यों त्यों मिलै, संकीरणपद जान।
तजि प्रीतम पाँइन पर्‍यो, अजहूं लखि तिय मान ४८

अस्यातिलक ॥

प्रीतमई पाँइन पर्‍यो लखिकै मान तजि यों अर्थ बनतुहै ऐसो चाहिये-यथा-लखिप्रीतम पाँइन पर्‍यो अजहूं तजि सिखमानि॥

अथ गर्भित वर्णनम् ॥

दोहा-और वाक्य दै वीचको, वाक्य रचै कविकोइ।
गर्भितदूषण कहतहैं, ताहि सयाने लोइ ॥ ४९ ॥

यथा ॥

दोहा-साधुसंग औ हरि भजन, विपतरु यह संसारु।
सकलभाँति विषसों भर्‍यो, द्वै अमृतफल चारु ५०

अस्यातिलक ॥

यों चाहिये ॥

यथा ॥

सकलभाँति विषसों भर्‍यो, विषतरु यह संसारु।
साधुसंग औ हरिभजन, द्वै अमृतफलचारु ॥ ५१ ॥

अमतपरार्थवर्णनम् ॥

दोहा–औरै रसमें राखिये, औरै रसकी बात ।
अमत परारथ कहतहैं, लखि कविमतको घात ५२॥

यथा ॥

दोहा–राम काम सायक लगे, विकलभई अकुलाइ ।
क्यों न सदन परपुरुषके, तुरत तारका जाइ॥५३॥

अस्यतिलक ॥

ऐसो रूपक शृंगाररसमें चाहिये रामायणशान्तरसहै वहाँ न चाहिये ॥

प्रकरमभंग–यथा ॥

दोहा–सोहै प्रकरमभंग जहँ, विधि समेत नहिं बात ।
जहां रैनि जागे सकल, ताहीपै किनजात ॥ ५४ ॥

अस्यतिलक ॥

जापै निशि जागे सकल, यों चाहिये ॥

यथा ॥

दोहा–यथासंख्य जहँ नहिं मिलै, सोऊ प्रकरम भंग ।
रमा उमा वाणीसदा, विधि हरि हरके संग ॥ ५५ ॥

अस्यतिलक ॥

हरि हर विधि चाहिये ॥

यथा ॥

दोहा–सोऊ प्रकरमभंग जहँ, नहीं एक सम बैन ।
तू हरिकी अँखियांबसी, कान्ह बसे तुवनैन ॥५६॥

अस्यातिलक ॥

कान्ह नयनमें तूबसी यों चाहिये ॥

अथ प्रसिद्धहतवर्णनम् ॥

दोहा–प्रसिधहतजु परसिद्ध मत, तजे एक फल लेखि।
कूजि उठे गोकरभसब, यशुमति सावक देखि८७॥

अस्यतिलक ॥

कूजिबो पक्षिनको प्रसिद्धहै। करभ हाथिहीके बचाको कहिये सावक मृगादिकके बचेको कहिये सो नहीं मान्यो सब एकसों लेखिकै औरही और कह्यो।

अथ अर्थदोषवर्णन–छप्पय ॥

अपुष्टार्थ कष्टार्थ व्याहतो पुनरुक्तो जित ॥
दुः क्रम ग्राम्य संदिग्ध जु नरिहतो अनवी कृत ॥
नियम अनियम जुवृत्ति विशेष समान प्रवृत्ति कहि ॥
साकांक्षपद अयुक्त सविधि अनुवाद अयुक्तहि ॥
जुविरुद्ध प्रसिद्ध प्रकाशि तानि सहचर भिन्नो श्लील ध्वनि।
है तिक्त पुनःस्वीकृति सहित असमर्थहि से त्यास पुनि८८

अथ अपुष्टार्थ–यथा ॥

दोहा–प्रौढ उक्ति जहँ अर्थहै, अपुष्टार्थ सो वंक ॥
उग्यो अतिबडो गगनमें, उज्ज्वल चारु मयंक८९॥

अस्यतिलक ॥

गगन अतिबडो हैही चन्द्रमा उज्ज्वल चारुहै ही। याहू कहिवो व्यर्थहै। गगनमें मयंक उग्यो, इतनोही कहिवो पुष्टार्थहै और अपुष्टहै।

अथ कष्टार्थ–यथा ॥

दोहा–अर्थ भिन्न अक्षरनते, कष्टारथ सुविचार ॥
तो पर वारौं चारिमृग, चारि विहँग फलचार ॥६०॥

अस्यातिलक ॥

नयनपर मृग घूँघटपर हय गतिपर गज कटि पर सिंह, यों चारि मृग वारयो, वैनपर कोकिला, ग्रीवापर कपोत, केशपर मोर, नासिका पर शुक, यों चारि विहंगवारयो। दन्तपर दारयो, कुच-पर श्रीफल अधरपर विम्ब, कपोलपर मधूकयों फल चारयोवारयो।

अथ व्याहत दोष–यथा ॥

दोहा–सत असतहु एकै कहैं, व्याहत सुधि विसराइ।
चन्द्रमुखीके बदन सम, हिमकर कह्यो नजाइ ६१॥

अस्य तिलक ॥

चन्द्रमुखी कहतु है चन्द्रसम बदन नहीं कहतो ॥

अथ पुनरुक्ति–यथा ॥

दोहा–उहै अर्थ पुनि पुनि मिलै, शब्द और पुनरुक्ति।
मृदुवाणी मीठी लगै, बात कविनकी उक्ति॥ ६२ ॥

अस्य तिलक ॥

वाणी वात उक्तिको अर्थ एकही है ॥

अथ दुःक्रम यथा ॥

दोहा–क्रमविचार क्रमको कियो, दुःक्रमहै यहि काल।
वरवाजी कै वारनै, देहै रीझि दयाल ॥ ६३ ॥

अस्य तिलक ॥

बारनहीके बाजिही देहै चाहिये ॥

अथ ग्राम्यार्थ—यथा ॥

दोहा—चतुरनकीसी बात नहिं, ग्राम्यारथसो चेति ।
अलीपास पौढी भले, मोहिं किन पौढन देति॥६४॥

अस्य तिलक ॥

पुरुषह्वैके स्त्रीको दाजु करतहै यह ग्राम्यार्थ है ॥

संदिग्ध—यथा

दोहा—संदिग्धार्थ जु अर्थ बहु, एक कहत संदेह ।
केहि कारण कामिनि लिख्यो, शिवमूरति निज गेह॥

अस्य तिलक ॥

कामको डरचोनिर्हेतु ॥

यथा ॥

दोहा—बात कहे बिन हेतुकी, सो निर्हेतुविचारि ।
सुमन झरचो मानो अली, मदन दियो शरडारि६६॥

अस्य तिलक ॥

काम कौन हेतु शर डारिदियो सो नहीं कह्यो ॥

अथ अनविक्रित यथा ॥

दोहा—जो न नुये अर्थहिंधरै, अनविक्रित सु विशेषि ।
जनि लाटा अनुप्रास अरु,आवृत दीपक देखि॥६७॥

यथा—सवैया ॥

कौन अचंभो जो पावकजारै तौ कौन अचंभौ गरूगिरिभाई

कौनअचंभो खराइ पयोधिकी कौन अचंभौ गयंदकराई ॥
कौन अचंभौ सुधा मधुराई औ कौन अचंभौ विषोकरुआई
कौनअचंभौं बृषैवहैभारऔ कौन अचंभौभलेहि भलाई६८

अस्य तिलक ॥

नविक्रित औ चाहिये ॥

कवित्त ॥

कौन अचंभौ जो पावक जारै गरू गिरिहै तौ कहाअधिकाई
सिन्धुतरंग सदैव खराई नईनहै सिंधुर अंग कराई ॥
मीठो पियूष करू विषरीतिपै दासजू यामें न निंद बडाई॥
भार चलाइहिआपु धरनि भलेनिको अंग सुभावै भलाई६९

अथ नियमप्रवृत्तअनियमप्रवृत्तक्षणम् ॥

दोहा--अनियम थल नेमहिगहै, नियम ठौर जो अनेम ।
नियम अनियम प्रवृत्तहै, दूषण दुऔ अप्रेम ॥७०॥

यथा ॥

दोहा--जाकी शुभदायक रुचिर, करते माणि गिरिजाइ ।
क्यों पाये आभासमाणि, होइ तासु चितचाइ ॥७१॥

अस्य तिलक ॥

आभासमणिद्रुपलकेनगको कहतहैंपै इहां अनेमबात चाहिये॥

यथा ॥

दोहा--भयकारी भयकारिये, लेन चाहती जीय ।
तनु तापनि ताडितकरै, यामिनिही यमतीय ॥८२॥

अस्यातिलक ॥

भयकारी ये यामिनिही प्रहरेसुन चाहिये यों अनेम चाहिये॥

दोहा--हयकारी भयकारिनी, लेन चाहती जीय।
तनुतापनि ताडित करै,यामिनि यमकी तीय॥७३॥

विशेष वृत्त लक्षणम् ॥

दोहा--जहां ठौर सामान्यको, कहै विशेष अयान।
ताहि विशेष प्रवृत्तिगनि, दूषण गनै सुजान॥ ७४॥

यथा ॥

दोहा--कहा सिंधु लोपत मणिन, बीच न कीच बढाइ।
सक्यो कौस्तुभजोरतू, हरिसों हाथ बोडाइ॥ ७५॥

अस्य तिलक ॥

कौस्तुभ विशेषण चाहिये, सामान्यहि चाहिये॥

दोहा--कहा मणिन्ह मूँदत जलधि, बीचिन्ह कीच मचाइ।
सवो कौस्तुभ जोर तू, हरिसो हाथ बोडाइ॥७६॥

सामान्यप्रवृत्त--यथा॥

दोहा--जहां कहत सामान्यही, थल विशेषको देखि।
सो सामान्य प्रवृत्तिहै, दूषण दृढ औरेखि॥ ७७॥

यथा ॥

दोहा--रैनिश्यामरँग पूरि शशि, चूरि कमल करि धूरि।
जहां तहां हो पिय लखो, ये प्रमदासक भूरि॥७८॥

अस्य तिलक ॥

रैनि समानहै सितौ असितौहै इहां जो न विशेष चाहिये॥

अथ साकांक्षा लक्षणम्॥

दोहा--आकांक्षा कछु शब्दकी, जहां परतहै जानि।

सो दूषण साकांक्षहै, सुमति कहै उर आनि ॥७९॥
परगविरागी चित्त निज, पुनि देवन्हको काम ।
जननी रुचि पुनि पितु वचन, क्यों तजिहैं वन राम॥

अस्यतिलक ॥

वन जाइबो क्यों तजिहै राम यों चाहिये जाइबे शब्दकी आकांक्षाहै ॥

अथ अयुक्त लक्षणम् ॥

दोहा—पदके विधि अनुबादकै, जहँ अयोग्य ह्वैजाइ ।
तहँ अयुक्त दूषण कहैं, जे प्रवीन कविराइ ॥८१ ॥

यथा ॥

दोहा—मोहनछबि अँखियन बसी, हिये मधुर मुसुकानि ।
गुणचरचावति पाणिमें, उन सम और न जानि८२॥

अस्यतिलक ॥

चौथे चरण अयुक्त है यों चाहिये । औरन मृदु बतलानि ।

विधि अयुक्ति यथा ॥

दोहा—पवन अहारी व्यालहै, व्यालहि खात मयूर ॥
व्याधौ खात मयूरको, कौन शत्रुबिनकूर ॥ ८३ ॥

अस्यतिलक ॥

अहारी न चाहिये उह ऊखात शब्द चाहिये ॥

अथ अनुवाद अयुक्त—यथा ॥

दोहा—रे केशव कर आभरन, मोद करन श्रीधाम ।
कमल वियोगी ज्यों हरन, कहा प्रिया अभिराम८४

अस्यातिलक ॥

वियोगी ज्यों हरन इन बातनके साथ कहिवो अयुक्तहै ॥

अथ प्रसिद्धविद्याविरुद्ध ॥

दोहा—लोक वेद कविरीतिअरु, देश कालते भिन्न ॥
सो प्रसिद्ध विद्यानिके, हैं विरुद्ध मतिखिन्न ॥ ८६॥

यथा—सवैया ॥

कोल खुले कच गूदती मूंदती चारुनखक्षत अंगदके तरु ॥
दोहदफेरतिके श्रमभार बडेबलके धरती पग भूधरु ॥
पंथ अशोकनको पल्लगावती हैं यशगावती सिंजितके भरु॥
भावती भादौंकी चाँदनीमें जगीभावतेसंगचलीअपनेघरु ॥

अस्यातिलक ॥

अशोकको स्त्रीके पांव छूयेते फूलिवोकहिवो लोकरीतिहै यह पल्लवलाग्यो कहतहै ताते लोकविरुद्ध है दोहदमें रतिबर्जित है सो कह्यो ताते वेदविरुद्ध है भादौंकी चांदनी वर्णिवोकवि रीति विरुद्धहै आतुर चली भोर न होनपायो यह रसविरुद्ध है नखक्षत कुचमें चाहिये भुजामें कह्यो यह अंगदेश विरुद्ध है ॥

अथ प्रकाशित विरुद्ध—यथा ॥

दोहा—जो लक्षण कहिये परै, तासु विरुद्ध लखाइ ।
वहै प्रकाशित वातको, हैं विरुद्ध कविराइ ॥ ८७ ॥

यथा ॥

दोहा—हँसनि तकनि बोलनि चलनि, सकल सकुचमै जासु ।
रोषनकेहु केसके, सुकवि कहै सुकियासु ॥ ८८ ॥

अस्यातिलक ॥

यामें परकीयाहूको अर्थ लगिजातहै ॥

अथ सहचर भिन्न वर्णनम् ।

दोहा--सोहै सहचर भिन्न जहँ, संग कहत न विवेक ।
निज परपुत्रन मानते, साधु कागाविधिएक ॥ ८९ ॥

अस्यातिलक ॥

काग कोइलको पुत्र धोखेपालतु है साधु समता न चाहिये॥

यथा ॥

दोहा--निशि शशिसों जल कमलसों, मूढ विषनसों मित्त ।
गजमदसों नृप तेजसों, शोभा पावत नित्त ॥ ९०॥

अस्यातिलक ॥

मूढ व्यसनसों संगतिसों भिन्नहै ॥

अश्लीलार्थ–यथा ॥

दोहा--कहिये अश्लीलार्थ जहँ, भोंडोभेद लखाइ ।
उन्नतुहै पराछिद्रको, क्यों नजाइ मुरझाइ ॥ ९१ ॥

अस्यातिलक ॥

व्यंग्यार्थमें मुख्यगज जान्यो जातुहै ॥

अथ त्यक्तपुनस्वीकृतवर्णनम् ॥

दोहा--त्यक्त पुनस्वीकृत कहै, छोंडि बात पुनि लेत ।
मोसुधि बुधि हरि हरि लई, काम करो डरहेत ॥९२

अस्यातिलक ॥

सुधि बुधि हरिजाती तौ काम क्यों करि सकती ॥

इति श्रीसकलकलाधरकलाधरवंशावतंसश्रीमन्महाराजकुमारश्रीबाबूहिं-
दूपातिविरचितेकाव्यनिर्णयेशब्दार्थदूषणवर्णनं नाम
त्रयोविंशमोल्लासः ॥ २३ ॥

अथदोषोद्धारवर्णनम् ॥

दोहा--कहूं शब्द लंकार कहुँ, छंद कहूं तुकहेतु ।
कहुंप्रकर्णवशदोषहू, गनै अदोष सचेतु ॥
कहूं अदोषो होतकहुँ, दोष होत गुणखानि ॥
उदाहरण कछु कछु कहौं, सरल सुमति ढिगजानि ॥

यथा ॥

दोहा--हरि श्रुतिको कुंडल मुकुट, हार हियेको स्वच्छ ।
आँखियन देख्यो सो रह्यो, हियमें छाइ प्रत्यक्ष ॥

अस्यातिलक ॥

स्वच्छशब्द श्रुतिकटुहै प्रत्यक्षशब्द भाषाहीनहै मुक्ताहार शब्द चरणान्तर्गतकी ठौरहै वाक्यदोष औ श्रुतिको कुंडल हियको हार आँखिनको देखिबो अर्थ दोषमें अपुष्टार्थहै कुंडलहारको देख्यो इतनोही कहे अर्थको बोधुहै तदपि तु कमलते श्रुति कटु भाषाहीन और छंदवशते चरणांतर्गतपद औ लोकोक्ति वशते अपुष्टार्थ अदोषहै औ कुंडल हार कान हृदयते भिन्नहू धरचो रहतुहै औ दरशनमें श्रवण चित्त स्वमो गन्योहै हार यद्यपि मोति हीके हारको कहतहैं तदपि भाषाके कविन हारको साधारण ही लिख्यो यह कविरीतिवश है॥

यथा--कवित्त ॥

सिंह कटि मेखलास्यो कुंभ कुच मिथुन त्यों,
मुखबास आलि गुंजे भौहैं धनु लीकहैं ॥
वृषभानु कन्या मीन नैनी सुबरण अंगी,

नजरि तुलामें तासों रतिसों रतीकहै ॥
ह्वैकै बिलगात उरजात कर कटाक्षन,
सोचहिये गल ग्रह लोग सुघरीकहै ।
कुंडल मकर वाले सोंलगी लगन अब,
बारहौ लगनको बनाव बन्यो ठीकहै ॥

अस्य तिलक ॥

ला शब्द निरर्थक मिथुन शब्द द्वैको अप्रयुक्ति अलिशब्द निहितार्थ धनुलीक शब्द अवाचक कन्याशब्द शृंगारमें अनुचितार्थ गलग्रहमिलिबेको अप्रतीत कुंडल मकर शब्द अविभिष्ट विधेय औ बारहौ शब्द श्रुति कटु द्वै वकारकी संधिते औ पहिले बिलगाइबेकी बात कह्यो पीछे मिलबेकी यह त्यक्त पुनस्वीकृत अर्थदोषहै ॥ रतिको रतीककह्यो ॥ राधाको गरू न कह्यो यह साकांक्षाहै सो श्लेषमुद्रालंकार करिकै बारह लग्नको नाम आन्यो चाह्यो ताते सच अदुष्टहै॥ औ जैसे मेढुकको मेढुला कहते हैं तैसे मेषला कह्यो तातें निरर्थकहूको निवारणहै ॥

अथ श्लीलकचित् अदोष कचित् गुण यथा ॥

दोहा—कहुँ श्लील दोषे नहीं, यथा सुभग भगवंत ॥
कहूँ हास निन्दादिते, श्लील गुणेगुणसंत ॥

पुनः

मीत नपैहै जान तू, यह खोजा दरबार ॥
जो निशिदिन गुजरत रहै, ताहीको पैठार ॥

अस्य तिलक ॥

जो निन्दादिमें क्रीडाहासमें अश्लीलगुण है ॥

अथ क्वचित्ग्राम्य गुण ॥

दोहा--ग्रामीनोक्ति कहे कहूं, ग्रामै गुण है जाइ ।
अजोंतिया सुखकी छिया, रही हिया पर छाइ ॥

क्वचिदन्यूनपदगुण ॥

दोहा—नहीं नहीं सुनि नहिं रह्यो, नेहनहानिमें नाह ।
त्यों त्यों भारति मोदसों, ज्यों ज्यों झारति बाँह ॥

अस्य तिलक ॥

यह समै सुरतिको नहींहै हम नहीं मानती सो नायिका वचन करिकै बलनहीं सो जान्योजातुहै ऐसी ठौर ऐसो न्यून गुणहै ॥

दोहा—खलवाणी खलकी कहा, साधु जानते नाहिं ।
सब समझै पै तेहि तहां, पतित करत सकुचाहिं ॥

अस्य तिलक ॥

कहा जानते नाहिं यामें समुझिवेको अर्थ आइही बोल्यो फेरि सब समझै कह्यो तौ अतिदृढता भई यह अधिक पदगुणहै क्वचित कथित गुणहै ॥

दोहा--दीपक लाटा बीपसा, पुनरुक्ता प्रतिकास ।
विधि भूषण में कथितपद, गुणकरि लेखोदास ॥
ज्यों दर्पणमें पाइये, तरनितेजतें आँचु ।
त्यों पृथ्वीपाति तेजते, तरनि तपत यह साँचु ॥

अस्य तिलक ॥

इहाँ तरनि तरनि द्वैवेर आयो है सो गुणहै ॥

अथ गर्बित्त क्वचित् अदोष ॥

लाल अधर मेको सुधा, मधुर किये बिनुपान ।

कहा अधरमें लेतहै, धरमें रहत न प्रान ॥

अस्य तिलक ॥

धरमें रहत न प्राण यह वाक्य बिनु प्राणके समीप चाहिये ऐसी दूरान्वयभाषा कवि संस्कृत कवि बहुत बनाइ आये हैं तातै अदोषहै प्रसिद्ध विद्या विरुद्ध क्वचित गुण ॥

यथा ॥

दोहा--जो प्रसिद्ध कविरीतिमें, सो संतत गुणहोइ ।
लोक विरुद्ध विलोकिकै, दूषणगनै न कोइ ।
महा अँध्यारी रैनिमें, कीर्ति तिहारी गाइ ॥
अभिसारी पियपै गई, उजियारी अधिकाइ ॥

अस्य तिलक ॥

कीर्तिके गाइबेतै उज्यारी ह्वैबो लोकविरुद्धहै सो कविरीतिमें गुणहै सहचर भिन्न क्वचिद्गुणहै ॥

दोहा-मोहन मोहग पूतरी, वै छबि सिगरी प्रान ॥
सुधाचितौनि सुहावनी, सीचु बासुरी तान ॥

अस्यतिलक ॥

इहाँ सब समय बांसुरीतान असतहै सो विशेषोक्ति अलंकार भयो गुण है ॥

दोहा-यहि विधि औरै जानिये,जहाँ सुमति चितलेत ।
दोष होत निर्दोष तहँ, अरु ममता गुण हेत ॥

इति श्रीसकल कलाधर कलाधरवंशावतंस श्रीमन्महाराजकुमार श्रीबाबूहिंदूपतिविरचिते काव्यनिर्णये ग्रन्थ अदोष वर्णनं नाम चतुर्विंशति तमोल्लासः ॥

अथ रसदोष वर्णनम् ॥

दोहा—रस अरु चर थिर भावकी, शब्द वाच्यता होइ ॥
ताहि कहत रसदोषहैं, कहूं अदोषिल सोइ ॥
अंचल ऐंचि जुशिर धरत, चंचलनैनी चारु ॥
कुचकोरनि हियकोरिकै, भरचो सुरस शृंगार ॥

अस्यातिलक ॥

इहां शृङ्गाररसही कहतहैं शृंगारको नाम कहिवो अनउचितहै वाके अनुभावतें कह्यो चाहिये ॥ यथा ॥ दोहा--कुचकोरनि हियकोरिकै, दुखभरिगई अपार ।

अथ व्यभिचारिभावकी शब्दवाच्यता—कवित्त ॥

आनँद औ रसलज्जा गयन्दकी खालनपै करुणानि मिलाई ।
दास भुजंगनि त्रासधरे अरु गंगतरंग धरे इरषाई ॥
भूत भरचो सित अंग सदीनता चन्द्रप्रभा सवितर्क महाई ।
व्याह समै हरवो रचहै चर भाव गई अँखियां गिरिजाई ॥

अस्यातिलक ॥

इहां लज्यादिक व्यभिचारी भावनिको वाच्यहीमें कह्यो उनको अनुभावही वाच्यमें आनिकै व्यंजित करिवो उत्तमकाव्यहै ॥

यथा ॥

आनन शोभपै ह्वैकै निचोहीं गयन्दकी खालपै ह्वैजलसाई ॥
दास भुजंगनि संयुतकंप औ गंगतरंग समेत लखाई ॥
भूति भरचो तनुलै मलिनाई औ चन्द्रप्रभा अनिमेष महाई
व्याहसमै हरवोरानिहारै नई नई डीठिनसों गिरिजाई ॥

अथ स्थायीभावकी शब्दवाच्यता ॥

दोहा–अकनि अकनि रण परस्पर, असिप्रहारझनकार।
महामहा योधन हिये, बढत उछाह अपार ॥

अस्य तिलक ॥

यहां उछाहवाच्यमें कहेते और काव्य होतहै मंगल वदत अपार कहे उछाह पैगिमै पाइयतुहै ॥

अथ शब्दवाच्य ताते अदोषवर्णन ॥

दोहा–जातजगायोहैनअलि, आंगन आयो भानु।
रसमोयो सोयो दोउ, प्रेम समोयो प्रानु ॥

अस्यातिलक ॥

इहाँ नायिकाको स्वभाव व्यभिचारी वर्णतुहैं सो यों कहते शब्दवाच्यता होति है तहां सोइवेको पुनि और भांति कहिबो नहीं भलो होत औ रसहूंकी प्रेमहूंकी शब्दवाच्यताहै सो अत्यंत रसिकता अत्यंत प्रतीतिको हेतुहै औ अपरांगहै व्यंग्यमें सखीको दुहुंनको परप्रीति स्थायीभावहै ताते गुण है ॥

अथ अन्यरस दोषवर्णनम् ॥

दोहा–जहँ विभाव अनुभावकी, कष्टकल्पना व्यक्ति।
–रस दूषण ताहू कहै, जिन्हैं काव्यकी शक्ति ॥

अथ विभावकी कष्ट कल्पना व्यक्ति शक्ति ॥

दो०उठतिगिरतिफिरि।फिरउठति,उठिउठिगिरिगिरि जाति
कहा करौं कासों कहौं, क्यों जीवै यहि राति ॥

अस्यातिलक ॥

यहां नायिकाकी विरंह दशा कहतहैं सो और व्याधिते औरहू पर लागति है ताते कष्टकल्पना व्यक्ति है ॥

अस्यअदोषता—यथा ॥

दोहा—कैचलि आगि परोसकी, दूरि करौ घनश्याम ।
कै हमसों कहि दीजिये, बसैं औरही ग्राम ॥

अस्यातिलक ॥

यह औरही भांतिकी आगि जानी जातिहै पै वह छिपाइकै कहति है ताते नायक नायिकाहीकी विरहागि जानि है यह गुण है दोष नहीं ॥

अथ अनुभवकी कष्टकलपना व्यक्ति—सवैया ॥

चैतकी चांदनी क्षीरनिसों दिगमंडल मानो पखारनलागी
तापर सीरी बयारि कपूरकी धूरिसी लैलै बगारन लागी ॥
भौंरनकी अवली करिगान पियूषसों कानमें डारनलागी ॥
भावती भावते ओरचितै सहजैहींमें भूमि निहारन लागी ॥

अस्यातिलक ॥

इहां कछू प्रेमको अनुभाव कहिवो उचित है सहजहीमें भूमि निहारिबे कहे प्रेम नाहीं जान्यो जात यों चाहिये ॥ यथा आँखिनके ललचौंहीं लजौहीं प्रिया पिय ओर निहारनलागी ॥

अथ अन्यरस दोष लक्षण ॥

दोहा—भावरसनि प्रतिकूलता, पुनि पुनि दीपति युक्ति ।
येऊहै रस दोष जहँ, असमै उक्ति न उक्ति ॥

यथा ॥

दोहा—अरी खेलि हँसि बोलि चलु, भुजप्रीतम गलडारि ॥
आयु जात छिन छिन घटी, छीलरु कैसो वारि ॥

अस्यातिलक ॥

आयु घटिबेको ज्ञान कहिबो शांतरसको विभावहै शृंगारको नहीं ॥

यथा-पुन ॥

दोहा-बैठी गुरुजन बीच सुनि, बाळम बंसीचारु।
सकल छोंडि वन जाउँ यह, तियहिय करत विचारु॥

अस्य तिलक ॥

नायिकामें उत्कंठा वर्णतुहै सकल छोंडि वनजाइबो यह निर्वेद स्थायीभाव शांतरसकोहै ऐसो विरुद्धता दोषहै यों चाहिये यथा-कौने मिस वन जाँउ यह, तिय हिय करत विचार ॥

अस्य अदोषता गुण-यथा ॥

दोहा-बोध किये उपमादिये, लिये पराये अंग।
प्रतिकूलो रसभावहै, गुणमय पाइ प्रसंग ॥

बोधकिये भावप्रातिकूलगुण-यथा ॥

दोहा-धनसंचै धनसों सुरति, सरसन सुख जग माहिं।
पैजीवन अति अल्प लखि, सज्जन मन पतियाहिं ॥

कवित्त ॥

दृग नासा नतौ तपतालखगीन सुगंध सनेहके ख्याल खगी।
श्रुति जीहा विरागै न रागैपगी मतिरामै रँगी औ नकामै रँगी
वपुमें व्रत नेम न पूरण प्रेम नभूति जगी न विभूत जगी ॥
जगजन्म वृथा तिन्हको जिनके गरे सेली लगी न नवेली लगी

अस्य तिलक ॥

यामें दुहूको बोधकहै ताते गुण है ॥

दोहा-पलरोवति पल हँसातिपल, बोलति पलक चुपाति।
प्रेम तिहारो प्रेत ज्यों, वाहि लग्यो दिन राति ॥

अस्यातिलक ॥

इहां एक भावके बोधककैके एक भाव होतहैं ताते गुण है॥

उपमानते विरुद्धता यथा—कवित्त ॥

बेलिनके विमल वितान तनिरहेजहां,
द्विजनकी सोर कछू कह्यो ना परतिहै ॥
तावन दवागिनिकी धूमनिसों नेन
मुकु—तावलि सुवारे डारै फूलनि झराति है ।
फेरि फेरि अंगुठा छुवावे मिसु कंटानिके,
फेरि फेरि आगे पीछे भाँवरे भरातिहै ।
हिन्दूपतिजूसों बच्यो पाँइनि जुनाँहे बैरि,
बनिता उछाहे मानि व्याहसों करतिहै ॥

अस्य तिलक ॥

इहाँ वीररस वर्णतुहैं वैरिनमें भयानक उपमा रूपकमें शृँगार ल्यायो ताते गुण है—

यथा ॥

दोहा—भक्ति तिहारी यों बसै, मोमनमें श्रीराम ।
बसै कामिजन हियानिज्यों, परमसुन्दरी वाम ॥

यथा—कवित्त ॥

पीछे भिरै छमके उचकै नछोंडाइसकै अटकै द्रुमसारी ॥
जीमें गहे यो लुटैरनकी भ्रममाँगती दनि अधीन दुखारी ॥
गोरी कृशोदरी भोरी चितै सँगहीं फिरै दौरी किरात कुमारी
हिंदूनरेशके वैरते यों विचरे वन बैरिनकी वरनारी ॥

अस्य तिलक ॥

इहां शृंगार करुणा अद्भुत अपरंगहै वीररस अंगी है ॥

अथ दीपति बारबार लक्षणम् ॥

दोहा—पुनि पुनि दीपतिही कहै, उपमादिक कछुनाहिं ।

ताहीते सज्जन गनै, याहू दूषण माहिं ॥

सवैया ॥

पंकज पाँयनि पैजनियां कटि घांघरो किंकिणियां जरबीली।
मोतिनहार हमेल बलीनपै सारि सोहावनी कंचुकी नीली ॥
ठोढीपै श्यामलबुंद अनूप तरयोननकी चुनियां चटकीली।
ईंगुरकी सुरकी दुरकी नथ भालमें लालकी बेंदी छबीली॥

अथ समयउक्ति—यथा ॥

दोहा—सजिशृंगार सरपेचढी, सुंदरि निपट सुवेश।
मनो जीति भुवलोक सब, चली जितन दिवि देश ॥

अथ श्लीलवर्णनम् ॥

सहगामिनी देखिकै शांतरस वर्णिबोकै दया वर्णिबो उचितहै
शृंगार नहीं ॥

यथा ॥

दोहा—राम आगमन सुनि कह्यो, रामबंधुसों वात।
कंकन मोहिं छोराइबे, उतैजाहु तुम तात ॥

अस्य तिलक ॥

इहां कंकनकी भीर छांडिकै रामको उनपै जाइबो उचितहै
सो न कह्यो यामें कादरता जान्यो जातहै ॥

अथ रसदोषलक्षणम् ॥

दोहा—अंगहिको वर्णन करै, अंगी देइ भुलाइ।
येऊ हैं रसदोषमें, सुनो सकल कविराइ ॥

अथ अंगको वर्णन—यथा ॥

दोहा—दासीसों मंडन समै, दर्पण माँग्यो वाम।
बैठिगई सोइ सामुहे, करि आनन अभिराम ॥

अस्यतिलक ।

इहां नायिका अंगीहै दासीअंगहै ताकी अतिशोभा वर्णिबो दोषहै

अथ अंगीको भूलिबो—यथा ॥

दोहा—पीतम पठै सहेटनिज, खेलन अटकी जाय ।
तकि तिहि आवत उतहिते, तिय मन मन पछताय॥

अस्यतिलक ॥

इहां नायिकाते खेलहीमें प्रेम अधिक ठहरायो तो यह भूल्यो यहै रसदोषहै ।

अथ प्रकृतिविपर्जैक कथनं ॥

दोहा—तीनि भाँतिकै प्रकृतिहै, दिव्य अदिव्य प्रमान ।
तीजो दिव्यादिव्य यह, जानत सुकवि सुजान ॥१॥
देव दिव्य कर मानिये, नर अदिव्यकर लेखि ।
नरअवतारी देवता, दिव्यादिव्यविशेखि ॥ २ ॥
सोक हास रति अद्भुतहि, लीन अदिव्ये लोग ।
दिव्यादिव्यनिमें सकति, नहीं दिव्यके योग ॥ ३ ॥
चारिभांति नायक कह्यो, तिन्हैं चारि रसमूल ।
किये औरके औरमें, प्रकृति विपर्ययतूल ॥ ४ ॥
धीरो दात सुबीरमें, धीरोद्धतारिसवंत ।
धीर ललित शृंगारसों, शांतिधीरसो संत ॥ ५ ॥
स्वर्ग पताले जाइबो, सिंधु उलंघन चाव ।
भस्मठानिबो क्रोधते, सातो दिव्य सुभाव ॥ ६ ॥
ज्यों वर्णत पितु मातुको, नहिं शृँगाररसलोग ।
त्यों सुरतादिक दिव्यमें, वर्णतलगै अयोग ॥ ७ ॥
इहि विधि औरो जानिये, अनुचित वर्णतचोख ।